राजस्थान विधान सभा की कार्यवाही का वृतान्त

अंक ८] तृतीय विधान सभा के अष्टम् सत्र, १९६५ का ५वां दिवस [संख्या ५

शुक्रवार, दिनांक २४ सितम्बर, १९६५

विधान सभा की बैठक म० पू० १०.०५ बजे विधान सभा भवन, जयपुर में प्रारम्भ हुई।

(श्री रामनिवास मिर्धा, अध्यक्ष, पदासीन)

तारांकित प्रश्नोत्तर

(आयुर्वेद, खाद्य, वन, शिक्षा, सिंचाई, गृह, श्रम, पशु-पालन एवं कृषि-विभाग)

श्री अध्यक्ष : श्री मोहरसिंह।

औषधियों का निरीक्षण

८५. **श्री मोहरसिंह** (चूरू) : क्या आयुर्वेद मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे:—

(१) क्या यह सही है कि आयुर्वेदिक औषधियां तैयार होने के बाद एक निश्चित अवधि तक ही प्रभावकारी होती हैं ? यदि हां, तो क्या सरकार औषधियों के समय समय पर निरीक्षण के लिये निरीक्षकों की व्यवस्था करने का विचार रखती है ?

(२) क्या सरकार इसके लिये औषधि निर्माताओं को भी औषधि तैयार करने की तारीख तथा काम में आने की आखरी तारीख लिखने के लिये कोई कानून बनाने का विचार रखती है ? यदि हां, तो इसके लिए कब उचित कार्यवाही करदी जावेगी ?

उप-मंत्री, आयुर्वेद (श्री दौलतराम सारण) : (१) जी हां। आयुर्वेदिक औषधियों में विभिन्न प्रकार हैं जिनकी संरक्षण अवधि में भिन्नता है :—

(क) काष्ठोषधियों से निर्मित होने वाले, चूर्ण गुटिकायें, अवलेह एक वर्ष तक प्रभावहीन नहीं होते। बाद में प्रभावहीन क्रमशः हो जाते हैं जो अधिकतम दो वर्ष के कार्यकाल तक काम में लिये जा सकते हैं। पर एक वर्ष का समय उपयुक्त है।

(ख) आसव, अरिष्ट एक वर्ष से भी अधिक समय व अवधि के निर्माण दिनांक से ५ वर्ष तक प्रभावशील रहते हैं।

(ग) पारद, गन्धक व उसकी कज्जली के योग से तथा लोहे आदि धातु भस्मों के सहयोग से बनने-वाली औषधियों का प्रभाव अधिक वर्षों तक सुस्थिर रहता है बल्कि पुरातन एक वर्ष या उससे अधिक समय की विशेष लाभप्रद सिद्ध होती है।

(घ) अभ्यंग के लिये बनने वाली तैल ५ या उससे भी अधिक समय टिकाऊ रह सकते हैं।

Page No 2

(श्री दौलतराम सारण)

(च) औषध सिद्धघृत भी ५ वर्षों तक प्रभावशाली रहता है।

(छ) काष्ठ औषधियों से निर्मित अर्क भी एक वर्ष तक प्रभावशील रहते हैं। उक्त औषधियों के समय समय पर निरीक्षण उप-संचालक, सह संचालक व निरीक्षकों द्वारा होता है। और अवधि की समाप्ति पर स्टोक से हटाने के संकेत निरीक्षकों को पूर्व ही कर दिये गये हैं जिससे निरीक्षण के समय जन स्वास्थ्यार्थ काम में नहीं ली जावें। औषधियों को स्टोर से पृथक् करने की कार्यवाही हेतु लिखा गया है।

(२) जी हां। राजकीय रसायन-शालाओं में निर्मित होने वाली औषधियों के लेवल पर निर्माण दिनांक आदि के उल्लेख का काम चालू कर दिया गया है। भारत सरकार के द्वारा मेडीकल डिपार्टमेन्ट के अनुसार अतिरिक्त ड्रग्ज एक्ट में उचित संशोधन का प्रश्न भारत सरकार के विचाराधीन हैं। उनके अन्तिम निर्णय के बाद वे ही नियम समस्त प्रदेशों के आयुर्वेद औषध निर्माण पर भी लागू रहेंगे।

श्री मोहरसिंह : ड्रग्ज एक्ट का संशोधन कब तक हो जावेगा ?

श्री दौलतराम सारण : यह केन्द्रीय सरकार करेगी और उम्मीद है जल्दी ही हो जावेगा।

श्री भीमसेन (लूणकरणसर) : आयुर्वेदिक औषधियों पर ड्रग्ज एक्ट लागू नहीं होता।

श्री दौलतराम सारण : केन्द्रीय सरकार केन्द्रीय स्वास्थ्य समिति के सुझावों के सन्दर्भ में दूसरा कानून बनाने की सोच रही है।

वैद्य श्री गोविन्दसहाय (गंगापुर) : यह कहा गया कि काष्ठादि औषधियों का तीन-चार साल तक उपयोग किया जाता है और फेंका नहीं जाता है। दो वर्ष के बाद काष्ठादि औषधियां प्रभावहीन हो जाती हैं। प्रभावहीन हो जाती हैं तो फिर उनका उपयोग कहां तक ठीक है ?

श्री दौलतराम सारण : काष्ठोषधियां, चूर्ण, गुटिका वगैरा एक साल तक प्रभावशील रहती हैं, उसके बाद धीरे २ उनका प्रभाव कम होता जाता है। दो वर्ष तक उनका प्रयोग करते हैं। प्रभावहीन होने का जब समय आ जाता है तो उनका प्रयोग नहीं करते हैं और इस संबंध में आदेश हैं।

वैद्य श्री गोविन्द सहाय : कब प्रसारित किये गये ?

श्री दौलतराम सारण : राज्य सरकार के आदेश देने के अलावा डाइरेक्टर खुद आयुर्वेद के वैद्य हैं, उप संचालक भी आयुर्वेद के वैद्य हैं, निरीक्षक हैं वे भी आयुर्वेद के वैद्य हैं और आयुर्वेद वैद्य के अतिरिक्त इन पदों पर अन्य कोई व्यक्ति नहीं हैं। वे जानकारी रखते हैं। डाइरेक्टर ने ऐसे आदेश दे रखे हैं।

श्री मोहरसिंह : क्या ऐसे कोई निरीक्षण के नियम हैं या प्रावधान हैं कि जिनसे यह पता लग सके कि यह औषधि एक साल पुरानी है ?

श्री दौलतराम सारण : सरकार जितनी औषधियां इस्तेमाल करती हैं वे सारी औषधियां राजकीय रसायन शालाओं में निर्मित होती हैं। राजकीय अधिकारियों के संरक्षण में निर्मित होती हैं। ऊपर के

Page No 3

(श्री दौलतराम सारण)
अधिकारी भी निरीक्षण करते हैं। विभिन्न औषधियां औषधालयों में प्रयोग में ली जाती हैं। सहायक संचालक, उप-संचालक और संचालक समय समय पर निरीक्षण करते हैं।

श्री मोहरसिंह : सिर्फ निरीक्षण से ही यह नहीं कहा जा सकता कि यह औषधि निदान और नियम के अनुसार बनायी गयी हैं या नहीं। निर्माण के बाद भी मिलावट कर देते हैं।

श्री दौलतराम सारण : आयुर्वेद औषधियों का निर्माण शास्त्रीय पद्धति से किया जाता है और उस पद्धति से निर्माण से ही प्रभावशील रहती हैं। शास्त्रीय विधि से निर्मित नहीं होती हैं तो प्रभावशील नहीं होती हैं। पूर्ण नियन्त्रण और देख-रेख में निर्मित की जाती हैं।

श्री योगेन्द्रनाथ हांडा (रायसिंहनगर) : प्रश्न यह है कि जिस प्रकार पेनिसिलिन और दूसरी मेडिसिन्स आती हैं उन पर बाकायदा लिखा होता है कि किस किस तारीख तक इसकी लिमिट है। तो क्या आपकी औषधियों पर भी यह लिखा जाता है कि अमुक-अमुक औषधि अमुक-अमुक समय तक प्रभावशील रहेगी ?

श्री दौलतराम सारण : प्रश्न २ में इसका उत्तर दिया जा चुका है।

श्री विजयसिंह झाला (नाथद्वारा) : जिस प्रकार अंग्रेजी दवाइयों के लिये लिखा हुआ रहता है कि यह दवा अमुक तारीख तक असरकारक रहेगी उसी प्रकार क्या देशी औषधियों पर भी इस प्रकार के लेबल आप लगायेंगे जिससे खरीददार को मालूम हो जाय कि अमुक तारीख तक यह औषधि प्रभावशील रहेगी ?

श्री दौलतराम सारण : विभागीय प्रयोग के लिये जो औषधियां निर्मित होती हैं वह सब विभाग के देख-रेख में बनायी जाती हैं। विभाग के विशेषज्ञ उसको देखकर बनाते हैं।

श्री विजयसिंह झाला : इसमें केवल विभाग द्वारा निर्मित औषधियों का सवाल नहीं है, यह प्रश्न है आयुर्वेदिक औषधियां जहां भी बनती हैं उन औषधियों पर क्या इस प्रकार के लेबल लगाने की व्यवस्था है कि अमुक-अमुक औषधि अमुक समय तक प्रयोग में लायी जा सकती है, इस प्रकार का लेबल लगाने का नियम है या नहीं ?

श्री अध्यक्ष : माननीय मंत्री महोदय ने जैसा कहा है सरकार द्वारा जिन औषधियों का निर्माण विभाग द्वारा कराया जाता है उन पर तारीख आदि लगाने की व्यवस्था कर रहे हैं।

आयुर्वेद मंत्री (श्री भीखाभाई): ड्रग्ज एक्ट के अन्तर्गत संशोधन होकर आर्डर्स भारत सरकार की तरफ से जारी होने वाले हैं। उसमें सब प्रकार के डिटेल्स होंगे; किस तारीख को बनी, किस तारीख तक उपयोग में आ सकती हैं, आदि।

श्री मोहरसिंह : आपने औषधियों के विश्लेषण के लिये कोई व्यवस्था की है क्या, लेबोरेटरी स्थापित की है क्या जिससे यह मालूम हो सके कि औषधियें प्रमाणिक रूप से बनाई गई हैं या नहीं ? क्या आप जिस प्रकार से फूड के निरीक्षण के लिये

Page No 4

(श्री मोहर्रसिंह)
फूड इन्स्पेक्टर नियुक्त करते हैं, क्या इसी प्रकार से औषधियों के निरीक्षण के लिये व्यवस्था है ?

श्री भीखाभाई : माननीय सदस्य को आयुर्वेदिक औषधियों के निर्माण के बारे में कुछ ज्ञान नहीं, उनके दिमाग में तो एलोपेथिक दवाइयां घुसी हुई हैं, उनको केवल एलोपेथिक का ज्ञान है । आयुर्वेदिक औषधियों के लिये जो नुस्खा लिखा जाता है उसमें यह लिखा जाता है, अमुक-अमुक औषधियों के मिश्रण के बाद यह औषधि बनेगी । उस बारे में हमारे फार्मेसी के मैनेजर और वैद्य लोग उसकी बराबर देख भाल करते हैं, उनके सुपरवीजन में तमाम औषधियों का निर्माण होता है । अगर घटक नहीं होता है, उसकी जगह कौनसी दूसरी औषधि प्रयोग में लायी जा सकती है उसके बारे में बोर्ड बैठकर निर्णय करता है ।

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्य दो बातें पूछना चाहते हैं । सरकार जो दवाइयों का निर्माण करवाती है उसके बारे में पहले भी सवाल उठ चुका है कि जहां लाखों रुपयों की आयुर्वेदिक औषधियां बनती हैं, वे अमुक स्टेन्डर्ड की हैं या नहीं इसके चैक के लिये क्या व्यवस्था है, इसको एनेलीसिस करने की कोई प्रशासनिक व्यवस्था है क्या ? कभी कुछ दवाइयों के सेम्पल लेकर टेस्ट किया है या नहीं ?

श्री दौलतराम सारण : लेबोरेटरी की व्यवस्था नहीं है, लेकिन जैसा कि मैंने कहा जो औषधियां विभाग द्वारा निर्माण करवायी जाती हैं वे शास्त्रीय पद्धति से निर्माण होती हैं ?

श्री अध्यक्ष : इसमें सवाल यही है–इन औषधियों के लिये जो शास्त्रीय विधि है उसका पालन किया गया या नहीं, यह देखने के लिये क्या व्यवस्था है ?

श्री दौलतराम सारण : इसके लिये कोई लेबोरेटरी नहीं है, लेकिन विभागीय निरीक्षक देखरेख करते हैं ।

श्री अध्यक्ष : विभागीय व्यवस्था क्या है ?

श्री दौलतराम सारण : एक मैनेजर है ।

श्री अध्यक्ष : माननीय मंत्री जरा समझ कर जवाब दें । जो औषधियां औषधालयों में पहुंच जाती हैं उसके बाद आपके विभाग ने कहीं से दस-बीस औषधियों के सेम्पल्स लेकर के एनेलिसिस किया है क्या ? जब आप लाखों रुपयों की औषधियां बनाते हैं वे ठीक बनती हैं या नहीं इस बारे में कोई क्रोस चैकिंग की व्यवस्था आपने कर रखी है ?

श्री भीखाभाई : आप जिस प्रकार से फरमा रहे हैं, वह सदन की मन्शा है अतः उस तरह की व्यवस्था के लिये कोशिश करेंगे ।

श्री अध्यक्ष : श्री रावतराम ।

सरदार शहर में राशन की दुकानें

८६. **श्री रावतराम** (सादूलपुर) : क्या खाद्य मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे:—

(१) सन् ६४-६५ में सरदार शहर कस्बे में सस्ते गेहूं (लाल गेहूं) की कुल कितनी दुकानें सरकार ने खोली थीं ?

(२) क्या यह सही है कि इन दुकानों को चलाने वाले लोगों को अभी तक दुकान किराया व गेहूं की बोरियों का कमीशन

Page No 5

(श्री रावतराम)
सरकार ने नहीं दिया है ? यदि हां, तो इसका क्या कारण है और यह कब तक दे दिया जावेगा?

(३) क्या यह सही है कि यहां पर उक्त दुकानें बन्द करदी गई हैं, जबकि जिले की अन्य तहसीलों में दुकानें कायम हैं ? यदि हां, तो इसका क्या कारण है ?

उप-मंत्री, खाद्य (श्रीमती कमला बेनीवाल) : (१) ४ दुकानें थीं ।

(२) चालू वर्ष की किराये की रकम २५००) रु० में से ११२७) रुपये का भुगतान किया जा चुका है और बकाया (मय पुराने) ३७८३ रुपये किराये के व २९०) रुपये कमीशन का दिया जाना शेष है । इसके लिये दिनांक ६-९-६५ को उक्त बकाया रकम का शीघ्र भुगतान करने हेतु आदेश दे दिये गये हैं ।

(३) जी हां, सहकारिता को प्रोत्साहन देने के लिये प्राइवेट दुकानें बन्द की जाकर उनकी एवज में अब अनाज की सप्लाई सहकारी समितियों द्वारा की जा रही है । सहकारी समितियां जिन तहसीलों में सही कार्य नहीं कर रही हैं उनमें पुरानी व्यवस्था के अनुसार सहकारी या प्राइवेट दुकानों द्वारा ही कार्य चल रहा है ।

श्री रावतराम : ये फेमीन के समय में खोली गई थीं, उसके बाद इतने लम्बे अर्से तक दुकानों का किराया व कमीशन न दिये जाने का क्या कारण है ? वहां के कर्मचारी परेशान करते हैं । जब आधा दे दिया और उसके बाद आधे के लिये इतने अर्से से लटकाये रखा है इसका क्या कारण है ?

श्रीमती कमला बेनीवाल : देरी होने का कारण प्रेस्काइब्ड प्रोफॉर्माज़ में बिल आदि नहीं आना है । जिस प्रकार होना चाहिये उस प्रकार के प्रोफॉर्माज भरे हुए नहीं हैं । उसके अलावा उस हैड में रकम की कुछ कमी थी, अब ६ तारीख को हुक्म दे दिया है । सब राशि को शामिल करके मन्जूरी दे दी है, पेमेन्ट हो गया होगा ।

श्री रावतराम : क्या पन्द्रह दिन के अन्दर अन्दर उनका पेमेन्ट हो जायगा ?

श्रीमती कमला बेनीवाल : मैं समझती हूं हो चुका होगा ।

श्री अध्यक्ष : श्री भैरोंसिंह ।

स्ट्रा बोर्ड फैक्टरी, कोटा

८७. **श्री भैरोंसिंह** (किशनपोल, जयपुर) : क्या वन मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे:—

(१) स्ट्रा बोर्ड फैक्टरी, कोटा को सेंलजर, गुड्डी व डूंगरकला आदि गांवों का घास किस दर से कितने कितने रुपये में दिया गया ? कृपया वर्ष वार तालिका सदन की मेज पर रखें ।

(२) इस फैक्टरी से विभाग का क्या एग्रीमेन्ट हुआ है ? कृपया इस एग्रीमेन्ट की एक प्रतिलिपि सदन की मेज पर रखें ।

(३) इस एग्रीमेन्ट में कब कब, क्या क्या संशोधन किये गये और क्यों ?

(४) फैक्टरी ने घास की रॉयल्टी आदि की रकम कब कब जमा कराई और एग्रीमें के अनुसार कब कब जमा कराना चाहिये था ? अब कुल कितनी किस प्रकार की बकाया है ?

Page No 6

(श्री भैरोंसिंह)

(५) इस फैक्टरी के कौन कौन डाइरेक्टर्स हैं ?

उप-मंत्री, वन (श्री दिनेशराय डांगी): (१) सेंलजर, गुड्डी व डूंगरकला आदि गांवों की घास का ठेका स्ट्रा बोर्ड फैक्टरी, कोटा को ४० न० पै० प्रति क्विन्टल की दर से दिया गया है। जिन रेंजों को घास का ठेका दिया है उनकी सूची संलग्न है। यह दर एग्रीमेन्ट की धारा ७ व ९ के अनुसार है।

(२) एग्रीमेन्ट की प्रतिलिपि संलग्न है।

(३) कोई संशोधन नहीं किया गया।

(४) स्टेटमेन्ट संलग्न है।

(५) डाइरेक्टर्स की सूची संलग्न है।

(सूची विस्तृत होने से विधान सभा पुस्तकालय में रखी गई)

श्री भैरोंसिंह : क्या यह सही है कि इस फैक्टरी ने अब तक जो इन्स्टालमेन्ट जमा कराने की ड्यू-डेट निर्धारित थी उन दिनों में उन निर्धारित डेट्स में एक में भी पैमेन्ट नहीं किया ?

श्री दिनेशराय डांगी : जी नहीं, ऐसा नहीं है। आधी रकम जमा करा दी है।

श्री भैरोंसिंह : अध्यक्ष महोदय, जो मंत्री महोदय ने लिखित में जवाब दिया है वही मैं पूछ रहा हूं। आप जरा समझ कर उत्तर दीजिये।

एग्रीमेन्ट में जो डेट फिक्स्ड हैं उन डेट्स में भुगतान होना चाहिये, क्या उन डेट्स में एक भी इन्स्टालमेंट का भुगतान नहीं हुआ ?

श्री दिनेशराय डांगी : मैं प्रश्न के भाग (४) के उत्तर में जो स्टेटमेन्ट दिया है उसमें बता चुका हूं। ६३-६४ और ६४-६५ के रॉयल्टी की जो रकम बाकी है और जिनका भुगतान हो चुका है। १५ हजार बाकी है।

श्री भैरोंसिंह : मैं, टोटल आउटस्टेंडिंग कितनी है यह नहीं पूछ रहा हूं, कितना जमा कराया यह भी नहीं पूछ रहा हूं। क्या यह सही है कि इस फैक्टरी ने आरम्भ से लेकर अब तक जो इन्स्टालमेन्ट एग्रीमेन्ट के अनुसार जिस डेट को जमा होने चाहियें उन डेट्स में आज तक एक भी इन्स्टालमेन्ट का भुगतान किया है ?

श्री दिनेशराय डांगी : वह तो आप सूची में देख सकते हैं।

श्री भैरोंसिंह : आप बतलाइये ना, किसी भी फिक्स्ड डेट को जमा कराया या नहीं ?

वन मंत्री, (श्री भीखाभाई) : सूची में दिया हुआ है। १-१०-६३ को ड्यू था ११-१० को जमा कराया, इस तरह से कुछ देरी हुई है, ऐसा इन्डस्ट्रीज में चलता है।

श्री भैरोंसिंह : मेरा सीधा प्रश्न था जिसका हां या ना में जवाब दे सकते थे। मैं लेक्चर देने के लिये नहीं पूछ रहा हूं।

श्री भीखाभाई : आपने इन्स्टालमेन्ट के बारे में पूछा। तो उसके लिये मैं बता रहा हूं कि जो रेट इकरारनामे में लिखी है उसके अनुसार दो लाख मन मिनिमम घास देने का इकरार है। अब वह चाहे बीस हजार मन उठावे या तीस हजार मन उठावे। उसकी कीमत होती है ९,३७,३५२) और इसकी कीमत कुल मिलाकर ३ हजार होती है।

Page No 7

(श्री भीखाभाई)
पर इसके अगेन्स्ट में हमारे पास १४ हजार उसने एक बार दिया है, फिर दुबारा १५ हजार दिया । अब माननीय सदस्य के मन में कोई भ्रम है कि इसमें कोई संशोधन किया गया है ऐसा नहीं है । आप चाहते हैं कि फैक्टरी को कोई किसी तरह का रिलेक्सेशन नहीं दिया जावे, पर अगर आप चाहते हैं कि फैक्टरी चलानी है तो फैक्टरी के लिये कुछ थोड़ा-बहुत विचार तो करना ही होगा ।

श्री भैरोंसिंह : यह लेक्चर आप किसको दे रहे हैं ? लेक्चर थोड़े ही मांगा था हमने । हम भी चाहते हैं कि फैक्टरी चले । रोड़े तो उसके रास्ते में आप अटका रहे हैं ।

श्री भीखाभाई : कहां अटका रहे हैं ।

श्री भैरोंसिंह : आपने ७५०० की इन्स्टालमेन्ट निर्धारित की थी । समय पर जब उसने भुगतान नहीं किया तो इसके लिये क्या पैनल्टी इम्पोज की ?

श्री दिनेशराय डांगी : कुछ इंन्स्टालमेन्ट्स तो करीब करीब ड्यू डेट्स में दी हैं । जो नहीं दी हैं, उनके लिये शो-कॉज नोटिस दिया है ।

श्री भैरोंसिंह : मैं पूछ रहा हूं पैनल्टी क्या इम्पोज की ?

श्री भीखाभाई : प्रश्न नहीं है इसका according to the agreement के हिसाब से तो एक परसेन्ट सूद लिये जाने की बात है । तो इसका नोटिस दिया है । डी० एफ० ओ० ने, सी० सी० एफ० ने और सरकार ने भी नोटिस दिया है कि अगर रुपया नहीं देते हो तो टर्मिनेट भी किया जा सकता है । फिर भी हमारे पास जो घास है वही लगभग ४० हजार से ७५ हजार के करीब है, जो हमने अपने कब्जे में कर रखी है ।

श्री भैरोंसिंह : इस फैक्टरी ने प्रोडक्शन शुरू किया या नहीं ?

श्री भीखाभाई : ये सारी चीजें तो मुझे मालूम नहीं ; घास चूंकि लिया है इससे तो मालूम पड़ता है कि प्रोडक्शन हो रहा है ।

श्री भैरोंसिंह : आप इन्डस्ट्री चलाते हैं । फैक्टरी ने प्रोडक्शन शुरू किया या नहीं, इसकी भी जानकारी नहीं रहती ?

श्री दिनेशराय डांगी : फैक्टरी ने प्रोडक्शन शुरू कर दिया है ।

श्री भैरोंसिंह : मैं उनसे पूछ रहा हूं, आपसे नहीं । आपकी बात कच्ची है ।

श्री भीखाभाई : एक दूसरे के पूरक हैं ।

श्री भैरोंसिंह : कब से शुरू किया ? अब आप जवाब दीजिये ।

श्री योगेन्द्रनाथ हांडा (रायसिंहनगर) : अब इण्डस्ट्री को चलाने की हालात पैदा की जा रही हैं ।

श्री भीखाभाई : इसकी जानकारी अभी मेरे पास नहीं है ।

श्री भैरोंसिंह : क्या यह सही है कि जिन गांवों को उनके जानवर चराने का प्रिविलेज इनके एग्रीमेंट में दिया गया है उसके लिये गांव वालों को शिकायत है कि फैक्टरी उस शर्त की अवहेलना कर रही है ?

श्री भीखाभाई : जी नहीं । परसों तरसों ही मैंने इसका उत्तर दिया था । उस

Page No 8

(श्री भीखाभाई)
वक्त आप घास का पूछ रहे थे आज फैक्टरी का पूछ लिया ।

श्री कृष्णकुमार गोयल (कोटा) : क्या यह सही है कि ६३-६४ में इस फोरेस्ट की जो मियाद २० जून को खतम होने वाली थी उसको बढाने के लिये फैक्टरी ने फोरेस्ट विभाग से निवेदन किया था ?

श्री भीखाभाई : इसकी जानकारी मुझे नहीं है ।

श्री कृष्णकुमार गोयल : क्या यह सही है कि सरकार ने १० पर्सेण्ट रॉयल्टी अधिक वसूल करके अवधि बढ़ाने की आज्ञा दे दी थी ?

श्री भीखाभाई : इसकी भी जानकारी मुझे नहीं है ।

श्री कृष्णकुमार गोयल : जैसा परसों भी पूछा था, पहले भी यह आ चुका है कि उसे इतनी घास दी गई है कि आज तक वह यूटीलाइज नहीं कर सका है । ६३-६४ में स्वयं फैक्टरी ने कहा कि समय हमें कम मिला, मियाद बढाई जावे । सरकार ने कह दिया कि मियाद बढा देते हैं, पर दस पर्सेन्ट अधिक रॉयल्टी लेंगे । पर तीन चार महीने बाद फैक्टरी ने मियाद बढाने की बात से इन्कार कर दिया । अब इसका नतीजा यह हुआ कि जिसे दो लाख मन घास लेनी चाहिये थी फैक्टरी केवल २६ हजार मन घास ले पाई बाकी सारा का सारा घास या तो सूख गया या बरबाद हो गया ।

श्री भीखाभाई : यह फैक्टरी और सरकार के बीच का मसला है कि हम दो लाख मन प्रतिवर्ष देंगे । अब जब वह पेमेण्ट दो लाख मन का करता है तो सारा अधिकार उनका है वे ही निगरानी करते हैं । वाच एण्ड वार्ड की निगरानी भी उनके द्वारा होती है । अब चाहे वे उससे कम घास लें । अब माननीय सदस्य क्या कहना चाहते हैं, समझ में नहीं पड़ता । जो भी सदस्य की मंशा है हम उसको पूरा करने को तैयार हैं ।

श्री भैरोंसिंह : क्या यह सही है कि १२ डाइरेक्टरों में से ७ महिला डाइरेक्टर हैं ?

श्री भीखाभाई : सूची दी हुई है । आप उसमें देख लें ।

श्री भैरोंसिंह : इसका मैनेजिंग डाइरेक्टर कौन है ?

श्री भीखाभाई : यह भी इसमें है ।

श्री योगेन्द्रनाथ हांडा : आज भीखाभाई का सिक्का जम गया ।

प्रश्न संख्या ८८

श्री अध्यक्ष : नेक्स्ट । श्रीमती लक्ष्मी-कुमारी चूंडावत ।

(अनुपस्थित कृपया आगे देखिए)

ब्रिज के बह जाने से नुकसान

८९. **श्री कृष्णकुमार गोयल** (कोटा) : क्या सिंचाई मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे :

(१) क्या यह सत्य है कि सन् ६१ में राणा प्रतापसागर से सेडल डेम जाने वाला सबमर्सिव ब्रिज पानी से बह गया था ? अगर हां, तो इससे कितना नुकसान हुआ ?

Page No 9

(श्री कृष्णकुमार गोयल)

(२) क्या यह सत्य है कि पुल की हान्च फिलिंग में ड्राई स्टोन फिलिंग किया गया था ?

(३) क्या यह सत्य है कि शिड्यूल ऑफ रेट में इस आइटम का विवरण बोर्डर फिलिंग इन लाइम मोर्टर है ? अगर हां, तो फिर ऐसा क्यों नहीं हुआ ?

(४) क्या सरकार ने इस संबंध में जांच करके किसी अधिकारी को उत्तरदायी ठहराया है ? अगर हां, तो उस संबंध में आगे क्या कार्यवाही हुई ?

उप-मंत्री, सिंचाई (श्री दौलतराम सारण) : (१) जी नहीं ।

(२) जी हां ।

(३) शिड्यूल ऑफ रेट में बोर्डर फिलिंग इन लाइम मोर्टर एक भिन्न आइटम था । हान्च फिलिंग में ड्राई स्टोन फिलिंग किया गया । सब तरह से विचार करने के बाद तै किया गया कि आइटम नम्बर दो ठीक है ।

(४) जी नहीं ।

श्री कृष्णकुमार गोयल : आपने पहले में "जी नहीं" जवाब दिया । मैं निवेदन करना चाहूंगा कि क्या यह सत्य है कि ६१ नहीं है यह ६२ है । मैं कैटेगरिकली पूछना चाहता हूं कि क्या इसका कुछ नुकसान नहीं हुआ ?

श्री दौलतराम सारण : आपने ६१ का पूछा, इसलिए कहा ।

श्री कृष्णकुमार गोयल : यह ६१ कैसे आ गया । मैंने तो ६२ का पूछा था । ६१ के बाद आज तक क्या इस ब्रिज में कोई नुकसान नहीं हुआ ?

श्री दौलतराम सारण : आपने ६१ का पूछा मैंने बता दिया, अब तो आप और कुछ पूछ लेंगे । मैं बता सकूंगा पर इसके लिये नोटिस की जरूरत होगी ।

श्री कृष्णकुमार गोयल : ६२ था, कैसे ६१ हो गया ।

श्री दौलतराम सारण : अब तो आप पूछ लेंगे ६२–६५ ।

श्री कृष्णकुमार गोयल : क्या इस ब्रिज का कभी नुकसान हुआ या नहीं और सरकार ने इसे ठीक करा कर एक्स्ट्रा कोस्ट दी या नहीं ।

श्री दौलतराम सारण : ६१ में रेंक का बायां किनारा बाढ़ की वजह से कट गया था उससे कुछ नुकसान हुआ । ६१ में पुल का कोई नुकसान नहीं हुआ ।

श्री कृष्णकुमार गोयल : बायां किनारा बह गया था, उसकी मरम्मत में सरकार का एक्स्ट्रा कितना पैसा लगा ?

श्री दौलतराम सारण : ९,८००) रु० ।

फोरेस्ट डिविजनों में चराई की दरें

९०. **श्री जुझारसिंह** (चेचट) : क्या वन मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे :-

(१) राजस्थान के अलग अलग फोरेस्ट डिविजनों में चराई की क्या क्या दरें हैं ?

Page No 10

(श्री जुझारसिंह)

(२) क्या यह सही है कि सरकार की चराई संबंधी कोई स्थिर नीति नहीं होने के कारण बरसात के समय चराई पर जाने वाले मवेशियों से झालावाड़, दरा व कोटा के दूसरे स्थानों पर पिछले तीन सालों में कभी १) भैंस, कभी २) भैंस व कभी इससे भी अधिक चराई ली जाती रही है ? कृपया झालावाड़, कोटा व बारां फोरेस्ट डिविजनों के अलग अलग रेन्जेज में ली गई पिछले तीन सालों की दरें साल-वार बतलाने का कष्ट करें ।

(३) क्या यह सही है कि बोंली पंचायत समिति (जिला सवाई-माधोपुर) के ग्राम गूगडोद, जैतपुरा व मंझेवला में पिछले तीन सालों से चार आना गाय, आठ आना बकरी व एक रुपया भैंस की दर से चराई ली जा रही है जो इसी समिति के दूसरे ग्रामों से ली जाने वाली दरों से भिन्न है व ज्यादा है ?

(४) उक्त ग्रामों में ज्यादा चराई वसूल करने के क्या कारण हैं व अनधिकृत रूप से इकट्ठी कर ली गई चराई की बेशी रकम लौटाने या एडजस्ट करने के लिये सरकार क्या विचार रखती है ?

उप-मंत्री, सिंचाई (श्री दिनेशराय डांगी) : (१) सूची संलग्न है ।

(२) जी नहीं। चराई संबंधी सरकार की नीति स्थिर है । झालावाड़ कोटा व बारां फोरेस्ट डिविजनों में साधारण चराई एक रुपया प्रति भैंस ली जाती है और जो स्थान अधिक जमाव वाले (Cattle Concentration Areas) घोषित किये गये हैं, वहां दुगुनी चराई यानि दो रुपया फी भैंस ली जाती है । उक्त डिविजनों में गत तीन वर्षों में उपरोक्त तरहों के अनुसार ही चराई शुल्क वसूल किया गया है । यह स्थिति चराई सूची से स्पष्ट है ।

(३) बोंली पंचायत समिति के ग्राम गूगडोद, जैतपुरा व मंझेवला में पिछले तीन सालों से फी गाय २६ पैसे, बकरी ५२ पैसे व भैंस १) ६ पैसे की दर से चराई ली जा रही है जो इसी समिति के दूसरे ग्रामों में ली जाने वाली दरों से भिन्न नहीं है ।

(४) चराई अनधिकृत रूप से नहीं ली गई है इसलिए प्रश्न नहीं पैदा होता ।

(सूची विस्तृत होने के कारण विधान सभा पुस्तकालय में रखी गई)

श्री जुझारसिंह : डिस्ट्रिक्टवाइज चराई लेते हैं या रेन्जवाइज लेते हैं ?

श्री दिनेशराय डांगी : अलग अलग जगह अलग अलग रेट्स हैं, कई जगह मिलती जुलती भी है क्योंकि पुरानी स्टेट के टाइम पर कहीं पर रेट्स कम थीं और कहीं पर ज्यादा थीं लेकिन इसकी नीति फिलहाल इस तरह से है जो मैंने आपको निवेदन कर दी है ।

श्री जुझारसिंह : आपने कहा कि स्टेट के टाइम की तरह से रेट्स लिये जा रहे हैं तो मैंने कहा कि जिन तीन गांवों के नाम मैंने गिनाये हैं इनमें स्टेट के टाइम पर जो रेट्स ली जाती थीं वह तीन गांव दूसरी तहसील में ले लिए गए, निवाई में इसलिए इनकी रेट्स बढ गई हैं । जब आपने यूनीफाइड रेट्स बनाई ही नहीं हैं तो फिर इन

Page No 11

(श्री जुझारसिंह)
तीन गांवों को दूसरी तहसील में मिला कर क्यों रेट्स रिवाइज़ कीं ? दूसरी तहसील में यह गांव चले गये इसका क्या कारण है ?

श्री दिनेशराय डांगी : वह तो पड़ोस के गांवों में फ्री होती थी तो उसके पास में जिस रेट पर चराई ली जाती थी वह ली जाती है । इसलिए कम और ज्यादा का प्रश्न नहीं उठता ।

श्री जुझारसिंह : मैंने तीन गांवों के लिए पूछा है । मर्जर के बाद में एक तरह की चराई देते आये थे । दो तीन साल हुए तहसीलों का री-ऑर्गेनाइजेशन हुए और इनकी रेट्स बढ़ गई । मेरा निवेदन यह है कि डिस्ट्रिक्ट में और इसमें फर्क है उनको आप एक तरह का क्यों नहीं करते ? या तो पुरानी स्टेट के टाइम पर जो रेट्स थीं वही उनसे ली जाये और या राजस्थान पूरे के लिए अब नए कानून लागू कीजिए । जब तक आपकी यूनीफाइड रेट्स नहीं होती हैं तो छोटे छोटे गांवों को परेशानी में क्यों डालते हैं ?

वन मंत्री (श्री भीखाभाई) : रेट्स को रेशनेलाइज करने के लिए एक कमेटी का निर्माण किया गया है और उसकी रिपोर्ट प्रस्तुत हो चुकी है और मैं समझता हूं कि जो रेट्स में भेदभाव है वह थोड़े मिट जायेंगे।

श्री जुझारसिंह : यह जो तीन गांव जिनके लिए मैंने पूछा है यह गांव एक तरह की चराई पिछले ८-१० वर्ष तक देते रहे उसके बाद में इन तीन गांवों में तहसीलों का रीऑर्गेनाइजेशन हुआ और उसमें यह तीनों गांव शामिल कर दिए गए और इनकी चराई बढ़ा दी गई । जब आप पुरानी रेट्स को फोलो कर रहे हैं तो नई रेट्स दूसरी तहसील की क्यों लगाई ? गधों की चराई आप ले रहे हैं, घोड़ों की ले रहे हैं और दूसरी तहसीलों में बिल्कुल नहीं ले रहे हैं । आपकी नई रेट्स लागू होनी चाहिए उस समय इन गांवों को भी उसमें लगा देते ।

श्री भीखाभाई : उसमें और ज्यादा देरी नहीं है । क्योंकि जो नई रेट्स लागू होने वाली हैं उसमें ज्यादा समय नहीं लगेगा ।

श्री जुझारसिंह : मेरा प्रश्न यह है कि उन गांवों में पिछले १० वर्षों से जो चराई दे रहे हैं उसको क्यों चेन्ज किया जाता है जब कि इनको सिर्फ दूसरी तहसील में बदल दिया गया है । जब कि आपका कहना यह है कि पुरानी स्टेट के टाइम में जो रेट्स लागू थे उन्हीं पर चराई वसूल की जायेगी तो फिर इनको दूसरी तहसील में बदल कर चराई क्यों बढ़ाई गई है ?

श्री अलबाराम (सुमेरपुर-सु०) : अध्यक्ष महोदय, क्या यह सही है कि छोटे-छोटे गांवों में काश्तकार अपने खेतों के अन्दर भैंस, बकरी और बैल चराते हैं और फोरेस्ट वाले उन लोगों से चराई वसूल करते हैं ।

श्री दलपतसिंह (आबू रोड) : मैं भी यही पूछना चाहता था कि कई गांव ऐसे हैं कि किसान अपने खातेदारी की जमीन में पशुओं को चराते हैं फिर भी आप चराई क्यों लेते हैं ?

श्री भीखाभाई : यह तो मुझे जानकारी नहीं है ।

श्री दलपतसिंह : जैसे आबू की तलहटी में किसान अपने खातेदारी की जमीन में पशुओं को चराते हैं और फिर आप उनसे चराई क्यों वसूल करते हैं ?

श्री दिनेशराय डांगी : जो पुरानी यूनिट्स की रेट्स थीं वह यों ही बदस्तूर हैं लेकिन राजस्थान के निर्माण के बाद कोई बात हुई हो तो दूसरी बात है, लेकिन जो मुझे जानकारी मिली है वह यह है कि जो यूनिट्स एग्जिस्टिंग थीं और जो वह लेती थीं उसी प्रकार से रेट्स वसूल की जाती हैं ।

श्री रघुनाथ बिश्नोई (सांचोर) : वहां पर चराई के लिए जमीन नहीं है और सिर्फ खातेदारी खेत हैं तो जमीन नहीं होते हुए भी आप चराई लेते हैं ।

श्री भीखाभाई : जो पुराना कानून होगा वह तो होगा ही । अब मैंने कहा है कि उसको रिवाइज करेंगे ।

श्री जुझारसिंह : मंत्री महोदय ने कहा कि जो पुरानी रेट्स थीं वह ली जा रही हैं तो मैं निवेदन करूंगा कि इन्होंने जो जोधपुर डिवीजन में रेट्स दी हैं उसमें नोट लगा दिया गया कि बाली व देसूरी तहसील में पूरे साल के लिए ५ रु० लिये जायेंगे जब कि जोधपुर डिस्ट्रिक्ट या सब-डिवीज़न के लिए नोर्मल रेट्स १० रु० हैं, तो पुरानी स्टेट के कानून को फोलो करते हैं तो फिर यह दो ब्लॉक्स के लिए क्यों चेन्ज की है ?

श्री दिनेशराय डांगी : बाली और देसूरी की रेट्स इस कण्डीशन पर ली गई थीं कि ५ रु० तो डिपोजिट के लिये जायें और ५ रु० फीस के लिये जायें और फिर गवर्नमेंट का फैसला हो गया उसके अनुसार लिया जायेगा । जब गवर्नमेंट का फैसला ५ रु० का हुआ तो वही रहेगा ।

श्री अध्यक्ष : श्री केसरीसिंह ।

श्री केसरीसिंह (खारची) : अध्यक्ष महोदय, मैं यह बताना चाहता हूं कि यह जो रेन्ज है जोधपुर, सोजत सब-डिवीजन रेन्ज में ५ रु० लिये जाते हैं और दूसरी जगह १० रु० लिये जाते हैं, तो दोनों के बीच में सौतेला व्यवहार क्यों है ?

श्री दिनेशराय डांगी : अध्यक्ष महोदय, आपने पूछा है वह जवाब मैंने दे दिया ।

श्री दलपतसिंह : अध्यक्ष महोदय, चराई का प्रश्न ८-१० साल से चल रहा है और अभी हमारे वन मंत्रीजी ने कहा है कि इसके लिए एक कमेटी बैठ कर इस पर विचार करेगी......

श्री भीखाभाई : विचार हो गया है ।

श्री दलपतसिंह : फाइनल क्या तय किया सदन की इन्फोर्मेशन के लिए बता दें ।

श्री भीखाभाई : केबीनेट की सब-कमेटी ने इस निर्णय को लिया है और जल्दी ही वह पास होने के बाद में उस रेट को लागू कर दी जावेगी ।

श्री जुझारसिंह : आपने एक पर्टीकुलर डिस्ट्रिक्ट में पुरानी रेट्स को क्यों चेन्ज किया ? जोधपुर डिस्ट्रिक्ट में दो रेन्ज के लिए क्यों चेन्ज किया ?

श्री दिनेशराय डांगी : रेट्स के चेन्ज करने का सवाल ही नहीं है ।

श्री विजयसिंह झाला (नाथद्वारा) : अध्यक्ष महोदय, एक प्रश्न है कि ३ साल से वन मंत्रीजी के सामने इस समस्या को रखा है, जिन मवेशियों के लिए जंगल बताया हुआ नहीं है उनसे भी आप चराई वसूल

Page No 13

(श्री विजयसिंह झाला)
करते हैं और उनको आप रसीद देते हैं, तो जिनके जंगल नहीं बताया हुआ है उनसे चराई कैसे और किस आधार पर वसूल करते हैं और उनको वापिस रिफण्ड करेंगे क्या ?

श्री भोलाभाई : यह प्रश्न इससे संबंधित नहीं है।

श्री विजयसिंह झाला : जब आपके द्वारा कोई जंगल ही उनको बताया हुआ नहीं है और चराई वसूल कर रहे हैं तो कैसे संबंधित नहीं है ?

श्री भोलाभाई : हमने तो रेट्स रिवाइज नहीं की है। राजस्थान के फॉर्मेशन के बाद कोई रेट्स रिवाइज नहीं की हैं, जो पहले थीं वही चराई है।

श्री गिरधारीलाल व्यास (आसीन्द) : मैं एक प्रश्न पूछना चाहता हूं। देशी रियासतों के समय में बहुत से ऐसे जंगल थे जिनमें ऊंट की चराई होती थी और उनकी रेट्स प्रेस्क्राइब्ड थीं, अब राजस्थान बनने के बाद में उन ऊंटों को जंगल में चरने से बन्द कर दिया है और चराई की वसूली कर रहे हैं तो मैं मंत्री महोदय से जानना चाहता हूं कि चराई वसूल करने वालों को जंगलों में चराने देंगे या नहीं ?

श्री अध्यक्ष : श्री विजयसिंह झाला। नैक्स्ट।

श्री विजयसिंह झाला : मैं इसी के बारे में पूछना चाहता हूं ....

श्री अध्यक्ष: नहीं, अगला प्रश्न।

पाकिस्तान ले जाया गया पशुधन

९१. **श्री विजयसिंह झाला** (नाथद्वारा) : क्या गृह मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे:—

(१) सन् ६४ में राजस्थान से कितना पशुधन पाकिस्तान में डकैती आदि से ले जाया गया तथा उसमें से वापिस कितना लाया गया ?

(२) गत तीन साल के अनुपात में पशुधन ले जाने में वृद्धि हुई है या कमी ?

उप मंत्री, गृह (श्री निरंजननाथ आचार्य): (१) राजस्थान से सन् १९६४ में २४५ पशु डकैती, लूट, चोरी इत्यादि द्वारा पाकिस्तान में ले जाये गये जिनमें से अब तक १३२ पुनः प्राप्त किये जा चुके हैं।

(२) सन् ६२ तथा ६३ की तुलना में पशुधन पाकिस्तान में ले जाने की संख्या में १९६४ में भारी कमी आई है।

श्री विजयसिंह झाला : वह जरा आप पहले की संख्या बता दीजिए दो सालों की।

श्री निरंजन नाथ आचार्य : यह आपके प्रश्न में तो शामिल नहीं है, फिर भी पूरक सूचना में बता देता हूं। सन् १९६२ में ९३९ ले जाए गए और रिकवरी हुई ५६३। सन् ६३ में ले जाए गए १०५७ और रिकवरी हुई ३६५। सन् ६४ में ले जाए गए २४५ और रिकवरी हुई १३२। इस प्रकार लगभग ४५ प्रतिशत, ६५ प्रतिशत और ५० प्रतिशत तक रिकवरी हुई है। और ६४ की रिकवरी अच्छी है।

श्री अध्यक्ष : श्री दिग्विजयसिंह।

श्री राधाकृष्ण गोयल (टोंक): अध्यक्ष महोदय, उनकी तरफ से अधिकृत होने से मैं पूछ रहा हूं ।

बनास नदी पर बांध

६२. **श्री दिग्विजयसिंह** (उनियारा) [श्री राधाकृष्ण गोयल (टोंक) द्वारा पूछा गया] : क्या सिंचाई मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे :–

(१) क्या यह सही है कि बनास नदी पर बिसलपुर ग्राम के पास एक बहुत बडा बांध बनवाने की योजना है ? यदि हां, तो कार्य कब आरम्भ होगा ?

(२) क्या यह सही है कि इस योजना की सर्वे भी की जा चुकी है ? यदि हां, तो कब और अनुमानतः इसकी कितनी लागत होगी ?

(३) इस बांध के पूर्ण होने के बाद अनुमानतः कितनी भूमि सिंचित हो सकेगी ?

(४) इस बांध के निर्माण में कितनी कृषि भूमि डूब में आवेगी और कितने ग्राम भी डूब में आवेंगे ?

(५) क्या यह सही है कि इसका अभी फिर दुबारा सर्वे हो रहा है ?

उप-मंत्री, सिंचाई (श्री दिनेशराय डांगी) : (१) जी हां, कार्य आरम्भ करने के लिये अभी निश्चित नहीं कहा जा सकता ।

(२) जी हां, केन्द्रीय भू-गर्भ विभाग द्वारा हाल ही में सर्वे किया गया है उसकी अनुमानित लागत दस करोड़ रुपये है ।

(३) लगभग डेढ़ से दो लाख एकड़ भूमि की वार्षिक सिंचाई सम्भव होगी ।

(४) लगभग १४००० एकड़ कृषि भूमि और ५४ ग्राम डूब में आयेंगे ।

(५) विभागीय सर्वे किया गया है तथा विस्तृत सर्वे और किया जावेगा ।

श्री राधाकृष्ण गोयल : दुबारा सर्वे कराने का क्या कारण था ?

श्री दिनेशराय डांगी : गवर्नमेंट ऑफ इंडिया के भू-गर्भ विभाग द्वारा सर्वे किया गया है वह निचले हिस्से के बारे में है कि कितनी जमीन आएगी । लेकिन विभाग द्वारा जो सर्वे किया जा रहा है वह यह है कि कितने गांव आते हैं, कितने पहले के बने हुए तालाब आते हैं, कितनों को वाटर सप्लाई के लिए पानी दिया जायगा । इन सब बातों का सर्वे विभाग द्वारा किया जा रहा है ।

श्री राधाकृष्ण गोयल : इसमें पहले के सर्वे और अब दुबारा सर्वे कराते हैं तो इसमें लागत में कितना फर्क आएगा, कितने गांव डूब में आएंगे ।

(विराम)

क्या प्रश्न समझ में नहीं आया ।

सिंचाई मंत्री (श्री नाथूराम मिर्धा) : समझ में आ गया । बनास के ऊपर जो पहले सर्वे हुआ उसके बाद नए सर्वे की गुंजाइश यों पैदा हुई है कि उस पर कुछ और भी वर्क्स बन चुके हैं जहां से नदी निकलती है । उसके बाद में वहां से पानी कितना बचता है, कितने गांव डूब में आते हैं । करीब ६४-६५ गांव डूब में आएंगे । उसमें कोई एक प्रकार का मंदिर भी है जिसका महत्व है और जिसको बचाया जाना चाहिए । इन सब बातों की वजह से दुबारा डिटेल्ड सर्वे

(श्री नाथूराम मिर्धा)
किया जा रहा है कि इसमें कितना पानी बचता है, कितनी बड़ी योजना होगी। इस योजना के साथ में कई आस-पास के जो कस्बे हैं उनको भी वाटर सप्लाई किया जा सकेगा या नहीं। काम काफी बड़ा है और इसीलिए इसकी डिटेल्ड सर्वे हो रही है। फोर्थ प्लान में इसके लिए कुछ प्रोवीजन रख रहे हैं।

श्री राधाकृष्ण गोयल : कार्य कौन सी पंचवर्षीय योजना में प्रारम्भ हो जावेगा ?

श्री नाथूराम मिर्धा : मैंने अर्ज किया ना कि फोर्थ प्लान में कुछ प्रोवीजन रखा है और क्योंकि फोर्थ प्लान अभी फाइनल नहीं हुआ है इसलिए कुछ नहीं कह सकते कि कितना कितना प्रोवीजन रहेगा। लेकिन आशा है कि फोर्थ प्लान में कुछ काम शुरू हो सकेगा।

श्री अध्यक्ष : श्री जयनारायण।

एम्पलॉयमेंट एक्सचेंज, सवाई-माधोपुर द्वारा बेरोजगार व्यक्तियों को रोजगार

९३. **श्री जयनारायण सालोदिया** (निवांई) : क्या श्रम मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे :–

एम्पलॉयमेंट एक्सचेंज, सवाई-माधोपुर ने सन् ६२ से ६४ तक टोंक तथा सवाई माधोपुर जिले के पृथक पृथक कितने बेरोजगार व्यक्तियों को रोजगार दिलाया है ? उनमें से टोंक जिले के कितने व्यक्ति हैं ?

उप-मंत्री, वित्त (श्री परसराम मदेरणा): सन् १९६२-६३ की जनवरी तक टोंक में अलग एम्पलॉयमेंट एक्सचेंज था जिसके द्वारा ३९१ व्यक्तियों को रोजगार दिलाया गया। एम्पलॉयमेंट एक्सचेंज, सवाई माधोपुर द्वारा १९६२ से १९६४ तक टोंक तथा सवाई माधोपुर जिले के जिन व्यक्तियों को रोजगार दिलवाया गया उनकी संख्या निम्न प्रकार है:—

	सवाई माधोपुर	टोंक
१९६२	२४४	—
१९६३	२२३	२७४
१९६४	४०१	२५१
	८६८	५२५

इनमें से ५२५ व्यक्ति टोंक जिले के थे।

श्री जयनारायण सालोदिया : क्या यह भी माननीय मंत्री महोदय बताने की कृपा करेंगे कि कितने लोगों ने एप्लाई किया और कितने लोगों का रजिस्ट्रेशन हुआ और उसमें से कितने लोगों को रोजगार मिला ?

श्री परसराम मदेरणा : पहले तो दोनों एम्पलॉयमेंट एक्सचेंजेज अलग अलग थीं। जब दोनों का सेपरेशन किया गया जनवरी ६३ में उस वक्त टोंक में ७६४ और सवाई माधोपुर में १४२३ थे। इस वक्त पोजीशन यह है कि ६३ के अन्दर टोंक में १००० प्रार्थियों का रजिस्ट्रेशन हुआ और सवाई माधोपुर में १५६८ ने रजिस्ट्रेशन करवाया। सन् ६४ के अन्दर सवाई माधोपुर में ३३९३ ने करवाया और टोंक में ११३१ ने रजिस्ट्रेशन करवाया।

श्री अध्यक्ष : श्री योगेन्द्रनाथ हांडा।

गंगानगर जिले के सब-इन्सपेक्टरों का स्थानान्तरण

९४. श्री **योगेन्द्रनाथ हांडा** (रायसिंहनगर) : क्या गृह मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे :—

(श्री योगेन्द्रनाथ हांडा)

(१) क्या यह सही है कि माह मई व जून, १९६३ में गंगानगर जिले से पुलिस के १२ सब-इन्सपेक्टरों का स्थानान्तरण, स्थानीय व्यक्ति होने के कारण किया गया ? क्या यह सरकार की नीति विनिश्चय (पॉलिसी डिसीजन) है ? यदि हां, तो यह केवल गंगानगर जिले के लिए ही क्यों ?

(२) क्या यह सही है कि इस परिपत्र (सर्कुलर) के उपरान्त भी इस जिले के कुछ सब-इन्सपेक्टर अभी भी वहां मौजूद हैं ? यदि हां, तो कौन कौन हैं तथा इनका स्थानान्तरण क्यों नहीं किया गया है ?

उप-मंत्री, गृह (श्री निरंजननाथ आचार्य): (१) १२ सब-इन्सपेक्टरों का स्थानान्तरण इसलिये किया गया क्योंकि वे काफी अर्से से वहां थे और प्रशासनिक दृष्टि से उन्हें वहां और अधिक रखना उचित नहीं था। १९६५ में राज्य सरकार ने यह निर्णय लिया कि सब-इन्सपेक्टरों को उनके होम डिस्ट्रिक्ट में न रखा जावे और जैसे ही वे ट्रान्सफर को ड्यू हों उनका स्थानान्तरण कर दिया जावे।

(२) जी हां। मई, १९६५ को राजाज्ञा के बाद भी गंगानगर के रहने वाले निम्नलिखित सब-इन्सपेक्टर्स उस ही जिले में हैं:—

(१) श्री नन्दलाल
(२) श्री लखराम
(३) श्री प्रेमनाथ
(४) श्री महमूद अली
(५) श्री महावीरप्रसाद
(६) श्री मोतीखां
(७) श्री शिवदानसिंह
(८) श्री गुरुचरणदास
(९) श्री रामजस
(१०) श्री रामलाल
(११) श्री सुमेरसिंह।

श्री गुरुचरणदास, रामजस व श्री रामलाल के दो साल मई, १९६५ में उनके स्थान पर हो गये हैं, अब उनका स्थानान्तरण हो जावेगा। बाकी लोगों का भी जब ट्रांसफर ड्यू होगा तब कर दिया जावेगा।

श्री योगेन्द्रनाथ हांडा : ऐसे भी कई लोग हैं क्या आपकी सूचना में जिन्होंने कि अपनी सकूनियत गलत लिखा कर भेज दी और वे वहां पर ही इन्सपेक्टर मौजूद हैं।

श्री अध्यक्ष : श्री रघुनाथ बिश्नोई।
That is no question.

नर्बदा नदी परियोजना से राजस्थान को पानी व बिजली

९५. **श्री रघुनाथ बिश्नोई** (सांचोर) : क्या सिंचाई मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे:—

(१) क्या यह सत्य है कि नर्बदा नदी परियोजना से राजस्थान को पानी व बिजली मिलने की पूरी पूरी संभावना है ? अगर हां, तो राज्य सरकार ने अब तक इस ओर क्या २ सक्रिय कदम उठाए हैं जिससे राजस्थान को उपरोक्त परियोजना से शीघ्र लाभ मिल सके ?

(२) क्या राज्य सरकार केन्द्रीय सरकार से उपरोक्त योजना राजस्थान के लिए शीघ्र मंजूर कराने में भरसक प्रयत्न कर रही है ?

(३) उपरोक्त परियोजना अब किस स्तर पर चल रही है ? योजना का काम कब तक शुरू होगा ? इस योजना से राजस्थान को पानी व बिजली कब तक मिलेंगे ?

Page No 17

उप-मंत्री, स्वायत्त शासन (श्री दौलतराम सारण) : (१) जी हां, राज्य सरकार ने इस विषय में अपने पक्ष का प्रतिवेदन खोसला समिति को प्रेषित कर दिया था। उक्त समिति की रिपोर्ट प्राप्त हो चुकी है जो राज्य सरकार के विचाराधीन है।

(२) जी हां।

(३) इस विषय में अभी निश्चित कुछ नहीं कहा जा सकता है।

श्री रघुनाथ बिश्नोई : यह कार्य कब तक शुरू होने की संभावना है।

श्री दौलतराम सारण : इस विषय में इस समय निश्चित रूप से कुछ नहीं कहा जा सकता।

श्री अध्यक्ष : श्री गोविन्दसहाय।

अनुसंधान शालाओं में विशेषज्ञों के लिए स्थान

६६. **वैद्य श्री गोविन्दसहाय** (गंगापुर) : क्या आयुर्वेद मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे:—

क्या यह सही है कि जयपुर तथा उदयपुर अनुसंधान शालाओं मे विशेषज्ञों के स्थान रिक्त हैं? यदि हां, तो अब तक नियुक्तियां न होने का क्या कारण है?

उप-मंत्री, आयुर्वेद (श्री दौलतराम सारण) : अनुसन्धान केन्द्र में पोलियों और स्नायुक (गिनोवार्म) विशेषज्ञों के दो पद हैं उन पर वांछित योग्यता के व्यक्ति अन सेवा आयोग द्वारा निर्वाचित हैं।

अनुसन्धान केन्द्र में चर्म रोग, मधुमेह विशेषज्ञ पद पर एड हक रूप में वांछित योग्यता के व्यक्ति नियुक्त हैं।

वैद्य श्री गोविन्दसहाय : पब्लिक सर्विस कमीशन के द्वारा रिजेक्ट करने के बाद भी अनुसंधानशाला में कितने दिनों से लगा रखा है।

श्री दौलतराम सारण : किसको?

वैद्य श्री गोविन्दसहाय : जो पब्लिक सर्विस कमीशन के द्वारा पृथक किए गए हैं, जिनको रिजेक्ट किया गया है, उन लोगों को योग्य नहीं होने के बाद भी कितने दिनों से अनुसंधानशाला में लगा रखा है?

श्री दौलतराम सारण : किस पोस्ट पर?

वैद्य श्री गोविन्दसहाय : विशेषज्ञों के, जो पोलियों और स्नायुक रोग के विशेषज्ञों के पद हैं उन पर जिन व्यक्तियों को लगा रखा है क्या वे पब्लिक सर्विस कमीशन के द्वारा सिलेक्टेड हैं? क्या सिलेक्टेड पर्सन्स को ही लगा रखा है?

श्री दौलतराम सारण : श्री जी. के. भट्ट हैं उनको ही पी० एस० सी० ने रिजेक्ट किया है।

वैद्य श्री गोविन्दसहाय : आपने उनको कितने दिनों तक वहां रखा है रिजेक्ट करने के बाद भी?

आयुर्वेद मंत्री (श्री भीखाभाई) : जो रिजेक्टेड थे उनका अपोइन्टमेन्ट एडहॉक था और चूंकि पोलियो के विशेषज्ञ को रखना था इसलिए उन्हें रखा गया।

वैद्य श्री गोविन्दसहाय : क्या राजेन्द्र शंकर की नियुक्ति भी की गई थी?

श्री दौलतराम सारण : जी हां।

वैद्य श्री गोविन्दसहाय : क्या वे कार्य कर रहे हैं ?

श्री दौलतराम सारण : जी हां, कर रहे हैं ।

श्री अध्यक्ष : व्यक्तिगत प्रश्न नहीं पूछे जावें ।

प्रश्न संख्या ६७

श्री भैरवलाल 'कालावादल' ।

(अनुपस्थित–कृपया आगे देखिये)

श्री केसरीसिंह ।

खारची तहसील में चराई शुल्क

९८. **श्री केसरीसिंह** (खारची) : क्या वन मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे:—

(१) सोजत व खारची तहसील में ऊंट, बकरी का चराई शुल्क कितना कितना वसूल किया जाता है ?

(२) क्या यह सही है कि इन दो तहसीलों में चराई शुल्क की दरें भिन्न भिन्न हैं ? अगर हां, तो क्यों ?

उप-मंत्री, वन (श्री दिनेशराय डांगी) :

(१) चराई शुल्क की सूची संलग्न है ।

(२) सोजत तथा खारची दोनों तहसील अलग अलग डिवीजनों में हैं इसलिए चराई की दरें भी भिन्न भिन्न हैं ।

(कृपया परिशिष्ट १ देखिये)

(दो तीन सदस्य प्रश्न पूछने के लिये खड़े हुए)

श्री अध्यक्ष : श्री केसरीसिंह ।

श्री केसरीसिंह : जोधपुर स्टेट के समय में जब ऊंट और बकरी चराई जाती थीं तो उस समय उनसे दस रुपया लिया गया था उसमें से पांच रुपये तो वापिस लौटाने का निर्णय लिया गया है, तो अब अजमेर में उनसे अलग से क्यों लिया जा रहा है ? इसमें बाली, देसूरी का हवाला है जब कि खारची तहसील का हवाला नहीं है ।

श्री दिनेशराय डांगी : यही मैं उनको प्रश्न के उत्तर में बता रहा था कि बाली, देसूरी में जो उनसे दस रुपये लिये गये थे उस में से पांच रुपये तो अमानती जमा रखे गए थे । यह सही है कि उन पांच रुपयों को वापस लौटाने का आॅर्डर तो हो चुका है लेकिन वे रुपये अभी तक लौटाए नहीं गए हैं । अब बाली तहसील की वह रेन्ज नहीं रही वह अजमेर में चली गई है और अजमेर में जो रेट्स लागू हैं वे ही रिवाइज्ड रेट उन पर भी लागू होंगी । रिवाइज्ड रेट्स का मामला केबिनेट के अन्दर डिसिजन के लिए कंसीडरेशन में है, जब वह फाइनल हो जाएगा तो फिर किसी प्रकार की शिकायत नहीं रहेगी ; सारी समस्या हल हो जाएगी ।

एक माननीय सदस्य : ऐसा फैसला कब तक हो जाएगा ?

श्री दिनेशराय डांगी : बहुत जल्दी उम्मीद है ।

श्री अध्यक्ष : पांच रुपये जो जमानत के जमा हैं उनका क्या होगा ?

श्री दिनेशराय डांगी : मैं इस संबंध में कुछ नहीं कह पाऊंगा क्योंकि मुझको इसकी जानकारी नहीं है कि ५ रु० का क्या हुआ, लेकिन ऐसा मुझे मालूम हुआ है कि फाइनेन्स

Page No 19

(श्री दिनेशराय डांगी)
ने इन पांच रुपयों को देने के लिये एग्री नहीं किया है ।

श्री जुझारसिंह (चेचट) : बेसिस ऑफ रेट्स वह पुरानी स्टेट्स की वजह से है और राजस्थान ने कोई नई रेट्स नहीं लगाई हैं। जब बेसिस ऑफ रेट्स पुराना है तो ६० में दूसरी जगह रेट्स आपने अपनी तरफ से राजस्थान बनने के बाद क्यों चेन्ज की ? जहां आपको कन्वीनियेन्ट हुआ है वहां तो आपने रेट्स चेन्ज कर दिये हैं राजस्थान बनने के बाद और जहा कन्वीनियेन्ट नहीं है वहां पर पुरानी रेट्स चल रही हैं व चलती रहेंगी और नई रेट्स नहीं लगेंगी। जहां पर आपको कन्वीनियेन्ट है वहां पर रेट्स चेन्ज करने का कारण क्या है ? पुरानी रेट्स को चालू उन जगहों पर क्यों नहीं किया गया ?

श्री दिनेशराय डांगी : जोधपुर स्टेट के जमाने में वे रिजर्वड फोरेस्ट्स थे और उनमें चराई बन्द थी। रिजर्वड थे इसलिये वे फारेस्ट अच्छे लग रहे हैं। राजस्थान बनने के बाद जो रेट इन्ट्रोड्यूस की गई थीं वह रेट १० रु० नहीं की गई थी। उसमें से पांच रुपया तो अमानत लिये गये थे। नई रेट लागू हुई हो या कोई चेन्ज कियाहो ऐसी बात नहीं थी ।

श्री भैरोंसिंह (किशनपोल, जयपुर) : क्या सरकार ने यह निर्णय ले लिया है कि जो पांच रुपये अमानत जमा किये गये थे उनको वापिस नहीं करेगी ?

श्री दिनेशराय : जी हां, ऐसी बात है कि अमानत का पैसा सरकार देने को तैयार नहीं है ।

एक माननीय सदस्य : यह तो अमानत में खयानत है ।

श्री भैरोंसिंह : सुनाई नहीं दिया कि आप क्या कह रहे हैं ?

अभी तो आपने कहा था कि रुपये का भुगतान कर दी जानी चाहिये थी लेकिन वह क्यों नहीं हुई उसकी जानकारी नहीं है, अब आप कह रहे हैं कि सरकार ने ऐसा निर्णय ले लिया है कि अमानत की रकम का भुगतान नहीं किया जाय, तो इन दोनों में कन्ट्राडिक्शन क्यों है ?

वन मंत्री (श्री भीखाभाई) : अध्यक्ष महोदय, माननीय सदस्य ने जो प्रश्न उठाया है वह केबिनेट के सामने भी आया था। यह बड़ा महत्वपूर्ण सवाल है। वहां पर जो रेट लगाई थी वह पुराने जमाने की कुछ समय के लिये ५ रुपया कर दिया गया था; उसके बाद १० रुपये जमा कराये जाते थे। वह पांच रुपये जो जमा हुए हैं उसके लिये हमने फैसला किया था कि उसके साथ में एडजस्ट कर दिए जाने चाहिए, लेकिन फिर इसमें रेफरेंस किया गया कि किस तारीख से यह डिसीजन लागू होगा तो यह तय हुआ कि जिस तारीख से यह डिसीजन लिया गया है उस तारीख से पहले वाला एडजस्ट कर दिया जाय और बाकी जो बढे हुए हैं वह वसूल कर लिया जाय ईजी इन्सटालमैन्ट्स में ।

श्री भैरोंसिंह : जिस समय ये पांच रुपये अमानतन लिये गये थे उस समय इस प्रकार का क्या कोई ध्यान था कि इन रुपयों को आयन्दा चल कर जो गवर्नमेन्ट के द्वारा टैक्स या चराई शुल्क लगाया जाने वाला है उसके अन्दर एडजस्ट कर लिया जायेगा ?

श्री भीखाभाई : चराई शुल्क लगाने का सवाल नहीं है और न कोई टैक्स लगाया गया था और पांच रुपया वसूल होने के पहले यह कन्क्लूजन था कि बाली और देसूरी के अन्दर १० रुपया लेने का रिवाज था। जोधपुर स्टेट के जमाने में वे रिज़र्वड फोरेस्ट्स थे इसलिये उनमें चराई करने की मुमानयत थी, लेकिन सरकार ने निश्चय किया पांच साल पहले I think 1958-59, exact date I don't know, उसके अनुसार यह तय हुआ कि ५ रुपये छोड़ने वाले नहीं हैं और दस रुपये लेंगे और जब तक ऑर्डर का क्लेरिफिकेशन नहीं आया जब तक १० रुपये जमा कराते रहे। हमने निर्णय किया कि पांच रुपये लेंगे और ये पांच रुपये एडजस्ट किये जायें तो फिर यह बात उठी कि कौनसी तारीख से एडजस्ट किये जाने चाहिये और कौनसी तारीख से १० रुपये मिलने चाहिए। तो नया फैसला किया उसमें कहा है यह एडजस्टमेन्ट जिस तारीख को केबिनेट का डिसीजन हुआ उस तारीख के पहले को जो होगा वह एडजस्ट किया जायेगा और बाकी का रुपया वसूल किया जायेगा जिस दिन से केबिनेट ने डिसीजन लिया है उस दिन से।

श्री भैरोंसिंह : क्या यह सही है कि जिस तारीख से यह टैक्स वसूल किया है जिसमें अमानत की रकम भी शामिल है वह जिस मात्रा में टैक्स लगाया है उस मात्रा में टैक्स वसूल करने की सरकार कानूनन अधिकारी नहीं थी ?

श्री भीखाभाई : कानूनी अधिकार था। ५ रुपये और १० रुपये का सवाल था।

श्री भैरोंसिंह : मेरा सवाल सीधा है कि जिस दिन से रकम वसूल की गई है अमानतन, उसको कहते हैं या और क्या कहते हैं, तो जिस दिन से यह रकम वसूल की गई है उस दिन गवर्नमेन्ट को इतनी रकम वसूल करने का अधिकार नहीं ?

श्री भीखाभाई : यह सब लीगल आस्पेक्ट थे। माननीय सदस्य जो खारची से आये हैं उन्होंने कहा है कि १० रुपये वसूल होने चाहिए। उनका ग्राउंड ही यह है कि हमारे यहां १० रुपये क्यों नहीं हुए। उसी कारण दस रुपये हुए थे। यह आपके सामने प्रत्यक्ष प्रमाण है।

श्री भैरोंसिंह : मैं प्रमाण न पूछ रहा था, मैं आपकी पोजीशन पूछना चाहता हूं कि गवर्नमेन्ट को कानूनी अधिकार था या नहीं ?

श्री भीखाभाई : गवर्नमेन्ट को सब अधिकार है।

एक माननीय सदस्य : फिर जमानत रखने का क्या सवाल था ?

श्री योगेन्द्रनाथ हांडा (रायसिंहनगर) : आज वे हनुमानजी का प्रसाद खाकर आये हैं।

श्री अध्यक्ष : नेक्स्ट।

श्री केसरीसिंह : १६ गांव जो अजमेर मेरवाड़ा रेंज में आये हुए हैं, उनको ऊंट और बकरी की चराई मना है, वहां पर इजाजत देंगे, यह मंत्री महोदय बताने की कृपा करेंगे ?

श्री भीखाभाई : अगर यह बात है तो रिज़र्वड फोरेस्ट में नहीं देते हैं तो जरूर देंगे, क्योंकि १० रुपये देते हैं तो चराई की इजाजत मिलनी चाहिये।

एक माननीय सदस्य : इतने दिन क्यों नहीं दी गई थी ?

श्री अध्यक्ष : नेक्स्ट ।

श्री पोहूमल ईसरदास (अजमेर, पश्चिम) : प्रश्न संख्या ९९ ।

श्री चन्द्रसिंह [illegible] (बिलाड़ा) : मंत्री महोदय द्वारा उत्तर दिया गया था · · · ·

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्य, दूसरा प्रश्न ।

महात्मा गांधी विद्यालय हाई स्कूल, अजमेर के अध्यापकों के बकाया वेतन का भुगतान

९९. **श्री पोहूमल ईसरदास** (अजमेर, पश्चिम) : क्या शिक्षा मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे :—

(१) महात्मा गांधी विद्यालय हाई स्कूल, अजमेर का प्रदेशीयकरण कब तक किया था ?

(२) क्या सरकार ने इस स्कूल की परिसम्पत् तथा दायित्वों (एसेट्स एण्ड लायेबिलिटीज) को स्वीकार कर लिया है ?

(३) क्या सरकार को मालूम है कि इन अध्यापकों को तीन माह अर्थात् मई, जून, व जुलाई, १९५९ का वेतन नहीं मिला है ?

(४) सरकार ने जबकि प्रबंधकों से सारी परिसम्पत् तथा बॉयज फण्ड की ८००० रु० की बड़ी राशि ले ली है तो क्या सरकार का यह उत्तरदायित्व नहीं है कि उसमें से अध्यापकों की बकाया का भुगतान कर दे?

(५) क्या सरकार अब इन अध्यापकों का भुगतान करने का विचार रखती है ? यदि हां, तो कब ?

शिक्षा, मंत्री (श्री बृजसुन्दर शर्मा) : (१) महात्मा गांधी विद्यालय, अजमेर का प्रदेशीयकरण दिनांक १–८–५९ से हुआ ।

(२) राज्य सरकार ने इस शाला की केवल परिसम्पत् को ही स्वीकार किया व पिछली दायित्व को नहीं ।

(३) जी हां, उक्त शाला के अध्यापकों को मई, जून व जुलाई, १९५९ का वेतन शाला के प्रबन्धकों द्वारा नहीं दिया गया है । केवल ७५ रुपये प्रति अध्यापक को अग्रिम धन-राशि के रूप में दिया है ।

(४) बॉयज फण्ड के ८५३६)८० पैसे स्कूल के नाम पर पोस्ट ऑफिस में जमा हैं । नियमानुसार छात्रों से प्राप्त रकम इन्हीं के उपयोग के लिये खर्च होनी चाहिये, अतः उपरोक्त लिखित रकम में से अध्यापकों का वेतन भुगतान करना संभव प्रतीत नहीं होता ।

(५) प्रदेशीयकरण की शर्तों के अनुसार १-८-१९५९ के पहले के जो भी दायित्व हैं उसका भुगतान शाला के प्रबन्धकारिणी सभा को करने की जिम्मेदारी है ।

श्री पोहूमल ईसरदास : अध्यक्ष महोदय, यह स्कूल एक प्राइवेट बोडी चलाती थी, जब वह कमजोर हो गई, उसके पास पैसा नहीं रहा तो प्रोविन्शलाइज किया गया और सारा फर्नीचर, साइन्स मेटिरियल आदि लिया गया । उसके टीचर्स बिचारों को तन्ख्वाह नहीं दी गई । और तीन महीने से तनख्वाह नहीं दी गई ।

Page No 22

श्री बृजसुन्दर शर्मा : उसके लिये प्रबन्धकारिणी समिति जिम्मेदार है।

श्री पोह्रमल ईसरदास : वह तो खत्म होगई, अब सरकार की ड्यूटी नहीं है देने की ?

श्री बृजसुन्दर शर्मा : सरकार ने लाइबिलिटी नहीं ली है। असेट्स कोई थे नहीं और बॉयज फण्ड में से यह नहीं दे सकते।

श्री पोह्रमल ईसरदास : स्कूल का साइंस मेटिरियल था, लाइब्रेरी थी, दूसरा मेटिरियल था और सरकार कहती है कि कुछ असेट्स नहीं थे ?

श्री बृजसुन्दर शर्मा : साइंस मेटिरियल तो लड़कों के काम आ रहा है।

श्री अब्दुल जब्बार (निम्बाहेड़ा) : यह बिल्डिंग किसकी थी ?

श्री बृजसुन्दर शर्मा : स्कूल की बिल्डिंग तो स्कूल के काम में आ रही है।

श्री अब्दुल जब्बार : मालिक कौन था इस बिल्डिंग का ?

श्री रामानन्द अग्रवाल (अलवर) : यह स्कूल की प्रोपर्टी नहीं है क्या ? उस पर दावा नहीं कर सकते ?

श्री बृजसुन्दर शर्मा : यह एग्रीमेन्ट में नहीं है।

श्री रामानन्द अग्रवाल : जो जिम्मेदारी और असेट्स प्रबन्धकारिणी समिति ने आपको सौंपे हैं, क्या उनमें यह लाइबिलिटी नहीं है ?

श्री बृजसुन्दर शर्मा : लड़के भी तो सौंपे हैं, उनके काम में आ रहे हैं।

श्री पोह्रमल ईसरदास : प्रबन्धकारिणी समिति ने अकाउन्ट में दिया था क्या कि लाइबिलिटी तो कोई नहीं है? अगर अध्यापकों ने दावा किया तो डिक्री हो जायेगी।

श्री बृजसुन्दर शर्मा : अध्यापक चाहें तो दावा करके वसूल करलें प्रबन्धकारिणी समिति से। सरकार तो स्कूल को अच्छी तरह चला रही है।

श्री रघुनाथ बिश्नोई (सांचोर) : क्या सरकार अपनी जिम्मेदारी नहीं समझती कि जिन अध्यापकों को वेतन नहीं मिला है और जिनके स्कूल के तमाम असेट्स आपके पास आगये हैं उनको तनख्वाह की पेमेन्ट आप कर दें ?

श्री बृजसुन्दर शर्मा : जब से हमने चार्ज लिया है तब से ही हमारी जिम्मेदारी है, उसके पहले की नहीं।

महारावल श्री लक्ष्मणसिंह (आसपुर): यह स्कूल सरकार के कब्जे में कैसे आया ?

श्री बृजसुन्दर शर्मा : प्रबन्धकारिणी समिति चलाने में असमर्थ थी और उन्होंने सरकार से निवेदन किया और सरकार ने स्कूल को प्रोविन्शियलाइज किया।

महारावल श्री लक्ष्मणसिंह : प्रबन्धकारिणी समिति ने कोई समझौता किया उसके पश्चात् आपने कब्जे में लिया या बिना किसी एग्रीमेन्ट के लिया ?

श्री बृजसुन्दर शर्मा : प्रोविन्शियलाइज करने का आर्डर निकाल कर सरकार ने लिया।

श्री अब्दुल जब्बार : सरकार ने जब कब्जे में लिया तो सरकार के ध्यान में था

(श्री अब्दुल जब्बार)
कि इतने अध्यापकों को वेतन देना बाकी है ?

श्री बृजसुन्दर शर्मा : यह सरकार को बाद में मालूम हुआ।

श्री रामानन्द अग्रवाल : यह एडेड स्कूल था या क्या ?

श्री बृजसुन्दर शर्मा : एडेड था।

श्री रामानन्द अग्रवाल : जो एड टीचर्स की पे के संबंध में स्कूल को दी गई उसका पेमेन्ट उन्होंने नहीं किया तो क्या सरकार इसको मिसएप्रोप्रियेशन नहीं मानती और प्रबन्धकारिणी समिति के खिलाफ कार्यवाही नहीं करना चाहती ?

श्री बृजसुन्दर शर्मा : जून तक की एड की पेमेन्ट कर दी गई है। जुलाई के बाद कोई ग्रांट-इन-एड नही दी गई।

श्री रामानन्द अग्रवाल : सरकार उस ग्रांट-इन-एड, जो सरकार को दनी थी, में से अध्यापको को पेमेन्ट क्यों नहीं करती ?

श्री बृजसुन्दर शर्मा : प्रबन्धकारिणी समिति की तरफ से अकाउन्ट ठीक करने के लिये कोई आता नही है। अगर कोई रकम उनको देना निकलेगी तो टीचर्स को दे देंगे।

श्री अध्यक्ष : नेक्स्ट।

श्रम कल्याण केन्द्र, लाखेरी का भवन

१००. श्री हरिप्रसाद शर्मा (पाटन) : क्या श्रम मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे :—

(१) क्या यह सही है कि लाखेरी, जिला बूंदी में श्रम कल्याण केन्द्र के भवन बनाने की स्वीकृति सरकार ने दी थी ?

(२) यदि हां, तो कुल कितनी लागत का भवन कब तक बन जाना चाहिये था ?

(३) क्या यह सही है कि श्रम कल्याण केन्द्र, लाखेरी की इमारत का सिर्फ आधा हिस्सा ही बनवाया जा सका है और प्रत्येक साल का बजट लेप्स हो जाता है तथा किसी भी प्रकार का निर्माण कार्य नहीं करवाया जाता ?

(४) क्या यह सही है कि उक्त इमारत में किवाड़ आदि नहीं होने से उसमें जानवर भरे रहते हैं और इसका पूरा उपयोग मजदूरों के हित में नहीं होता।

(५) क्या सरकार इस संबंध में कोई व्यवस्था करना चाहती है ? यदि हां, तो कब तक इसका भवन पूरा हो जावेगा ?

उप-मंत्री, वित्त (श्री परसराम मदेरणा) : (१) जी हां।

(२) १ लाख १४ हजार रु. की लागत का भवन बनाना था। पूरा होने की कोई तिथि निश्चित् नहीं की गई थी।

(३) जी हां, आधा भवन बनने का कारण भवन बनने के बजट में संकटकालीन परिस्थिति के कारण कमी करना है।

(४) इमारत में किवाड़ आदि की व्यवस्था है, पर कम्पाउन्ड वॉल नहीं है। इमारत का उपयोग हो रहा है।

(५) जी हां, इस वर्ष के बजट में ३८ हजार रुपए का प्रावधान भवन का काम पूरा करने के लिये रखा गया है।

श्री हरिप्रसाद शर्मा : क्या यह सही है, आपने स्वीकार किया है कि इमारत अधूरी है; किवाड़ नहीं हैं। आपने कहा कि किवाड़ आदि हैं यह भी बता दीजिये कि लाइटिंग वगैरा का प्रबन्ध हो गया है ?

श्री परसराम मदेरणा : मैंने कहा कि भवन का काम पूरा नहीं हुआ है और इस साल ३८ हजार रुपयों का प्रावधान है वह खर्च हो जायगा तब भवन पूरा हो जायगा। मैंने यह नहीं कहा कि पूरा होगया। मैंने कहा कि उपयोग में आ रहा है। कम्पाउण्ड वॉल नहीं बनी है, बीच का हॉल नहीं बना है।

श्री हरिप्रसाद शर्मा : आप कह रहे हैं कि कमरे में किवाड़ नहीं हैं इस कारण दिन में वहां पर जानवर बैठते हैं, क्या इसकी आपको जानकारी है ?

श्री परसराम मदेरणा : दरवाजे बने हुए हैं, वैन्टीलेटर्स नहीं बने हैं, उनमें से जानवर नहीं आ सकते, अलबत्ता चिड़ियां आ सकती हैं।

श्री हरिप्रसाद शर्मा : आप दुबारा जानकारी करवा लीजिये। कमिश्नर साहिब जाकर आए हैं। वहां पर दरवाजे नहीं हैं।

श्री परसराम मदेरणा : बरण्डे में जानवर आ सकते हैं। चौकीदार लगा रखा है, आप खुद जानते हैं। वहां पर श्रम कल्याण केन्द्र है। रेडियो लगा हुआ है लोग आते हैं। सिलाई की मशीन है, औरतें आती हैं, बच्चे आते हैं। संकटकालीन अवस्था के कारण एक्सपेन्डीचर में कमी की गई इसलिये इस प्रकार के सभी कामों में कमी आई। इस काम के लिये बजट भी कम रखा गया था।

श्री हरिप्रसाद शर्मा : इसमें लाइट की व्यवस्था भी नहीं है इसलिये रात में काम नहीं हो सकता।

श्री अध्यक्ष : श्री मुरलीधर व्यास।

श्री हरिप्रसाद शर्मा : लाइट के प्रबन्ध के बारे में क्या कह रहे हैं ?

श्री परसराम मदेरणा : हमने पी. डब्ल्यू. डी. को लिखा है। यहां तक सतर्कता रखी है कि सेक्रेट्री ने डिपार्टमेंन्ट को लिखा है कि लाइट का प्रबन्ध शीघ्र किया जाय ताकि असुविधा न हो।

श्री अध्यक्ष : श्री मुरलीधर व्यास।

तस्कर व्यापार के मामले

१०१. **श्री मुरलीधर व्यास (बीकानेर)** : क्या गृह मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे :—

(१) राज्य में सन् ६२, ६३ व ६४ में तस्कर व्यापार के मामलों में किस किस जिले में कितने कितने आदमी पकड़े गये ?

(२) उनमें से कितने को कितने समय जन सुरक्षा कानून के अधीन जेल में रखा गया तथा कितनों को कितने समय बाद छोड़ दिया गया ? सूची सदन की मेज पर रखें तथा यह भी बतावें कि जिन लोगों को छोड़ दिया गया उनको किन शर्तों पर छोड़ा है तथा उनके छोड़ने का कारण क्या है ?

उप-मंत्री, गृह (श्री निरञ्जननाथ आचार्य) : (१) सूची (क) संलग्न है।

(२) इनमें से ५८ को निरोधक कानून के प्रावधानों के अन्दर नजरबन्द बनाया गया

(श्री निरंजननाथ आचार्य)
बन्दी अवस्था की अवधि प्रत्येक के नाम के आगे संलग्न सूची (ख) में दे दी गई है। छोड़ने के कारण तथा शर्त बतलाना जन हित में नहीं है।

(सूची विस्तृत होने से विधान सभा पुस्तकालय में रखी गई)

श्री मुरलीधर व्यास : सोहनलाल मुसरफ को गिरफ्तार किया गया था उनका नाम इस लिस्ट में नहीं है। क्या वे तस्करी में गिरफ्तार नहीं किये गये थे ?

श्री निरंजननाथ आचार्य : जो लोग गिरफ्तार किये गये उनके नाम हैं।

श्री मुरलीधर व्यास : सोहनलाल का नाम इसमें नहीं है।

श्री योगेन्द्रनाथ हांडा (रायसिंहनगर) : उनको गिरफ्तार होते देखा है।

श्री निरंजननाथ आचार्य : सैक्शन ३० में ११-३-६३ और ३०-१२-६४ की लिस्ट है इसमें यह मोहनलाल है।

श्री मुरलीधर व्यास : मोहनलाल नहीं सोहनलाल मुसरिफ बीकानेर के थे और बीकानेर की लिस्ट में उनका नाम नहीं है।

श्री निरंजननाथ आचार्य : उनका सौभाग्य है कि उनका नाम नहीं है।

श्री योगेन्द्र नाथ हांडा : लेकिन यह देश का दुर्भाग्य है।

श्री मुरलीधर व्यास : जो आदमी दस महीने तक जेल में रहा उसका नाम नहीं है और आप कहते हैं कि सौभाग्य है।

श्री रामानन्द अग्रवाल (अलवर) : आपने उन पर अनुचित कृपा क्यों की ?

श्री निरंजननाथ आचार्य : वह हमारे दिमाग में नहीं है। आप कहते हैं ऐसा व्यक्ति है तो मैं ....

श्री योगेन्द्रनाथ हांडा : सूची इसी बात की मांगी गई थी और उसमें उनका नाम नहीं है।

श्री केदारनाथ (गंगानगर) : जिन व्यक्तियों को पैरोल पर छोड़ा गया उनको छोड़ने का क्या आधार है ?

श्री निरंजननाथ आचार्य : आधार नहीं कह सकता। जन हित में पकड़ा था, क्यों छोड़ा यह बता नहीं सकता।

श्री योगेन्द्रनाथ हांडा : जिनको आपने पैरोल पर छोड़ा है उस समय क्या परिस्थिति थी ? जब पाकिस्तान आक्रमण कर रहा था गंगानगर में आपने अमरचन्द बोठा को पकड़ा और उनको पैरोल पर छोड़ दिया जबकि आक्रमण हो रहा था, कारण बताने में क्या संकोच है ?

श्री निरंजननाथ आचार्य : अलग से प्रश्न है। इस समय इसका विश्लेषण नहीं हो सकता।

श्री योगेन्द्रनाथ हांडा : बिल्कुल संबंधित प्रश्न है।

श्री अध्यक्ष : हर एक व्यक्तिगत प्रश्नों का यहां उत्तर नहीं दिया जा सकता।

श्री मुरलीधर व्यास : इसमें जैसलमेर में एक को उसी दिन छोड़ा है, कन्हैयालाल पुत्र शिवनारायण मेहरा को गिरफ्तार किया.

(श्री मुरलीधर व्यास)
जाता है और उसी दिन छोड़ दिया गया इसका क्या कारण है ?

श्री निरंजननाथ आचार्य : यह कौनसी सूची है ?

श्री मुरलीधर व्यास : पहली सूची नं. १० पर है।

श्री योगेन्द्रनाथ हांडा : क्योंकि १० नम्बर था इसलिये छोड़ दिया गया।

श्री निरंजननाथ आचार्य : यह जवाब आपको मिल गया। कन्हैयालाल पुत्र शिवनारायण पकड़ा गया और छोड़ दिया गया। किस आधार पर पकड़ा और किस आधार पर छोड़ा, यह मैं नहीं बता सकता।

श्री मुरलीधर व्यास : सदन में इस बात को बताना कौनसी जन हित के विरुद्ध बात है ? किस कारण से पकड़ा और किस कारण से छोड़ा। आप कहते हैं कि एमर्जेन्सी के कारण मामला नहीं चलाया जा सकता, तो कुछ को गिरफ्तार किया और फौरन छोड़ दिया, ऐसा कौनसा जन हित का काम आ गया था ?

श्री निरंजननाथ आचार्य : मैंने गिरफ्तारी का कारण अर्ज कर दिया। दफा ३५ में प्रोवीज़न साफ है। रीजन्स जन हित में नहीं बता सकता। इसके अलावा कोई सूचना चाहिये थी तो अलग से प्रश्न पूछते––

श्री अध्यक्ष : आपका उत्तर वही होता।

श्री मुरलीधर व्यास : आपने व्यक्तियों को पकड़ कर फौरन छोड़ दिया तो फिर उनको क्यों पकड़ा ?

श्री रामानन्द अग्रवाल : ऐसे प्रश्नों पर वास्तव में गवर्नमेन्ट को छूट है। जिन बातों को सीक्रेट रखना है उनको जाहिर नहीं कराना चाहते, लेकिन हम यह भी चाहेंगे आपके जारिये कि एग्ज़ीक्यूटिव पॉवर है उसका इस तरह से दुरुपयोग न करें जिसके अन्दर डिस्क्रीमिनेशन की और पक्षपात की बदबू आये। जो सूची इसमें मांगी हैं वह इस दृष्टिकोण से मांगी है कि इस संबंध में जो रिकार्ड सामने आये उसमें कोई ऐसी बात तो नजर नहीं आती है। माननीय सदस्य ने जो एक केस रखा है उसमें ऐसी गंध आती है कि या तो गिरफ्तारी करना गलत था, या फिर वह छूटा है वह पक्षपात दृष्टि से छूटा है। इसके संबंध में मंत्री महोदय को सैटिस्फेक्टरी एक्सप्लेनेशन देना चाहिये। यह एग्ज़ीक्यूटिव पॉवर को एमर्जेन्सी के समय में इस तरह इस्तेमाल न करें जिससे आम जनता को असंतोष हो।

श्री निरंजननाथ आचार्य : अध्यक्ष महोदय, मैं निवेदन करूं . . .

श्री अध्यक्ष: एक दो माननीय सदस्य और बोल लें उसके बाद में आप उत्तर दें।

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल (जौहरी बाजार, जयपुर) : मैं जानना चाहता हूं कि तस्कर व्यापार के सिलसिले में जिन ५०७ व्यक्तियों को पकड़ा है, उसके संबंध में जांच कराई है कि जो प्रोसीक्यूशन किये गये उनमें सक्सेज का क्या परसेन्टेज है ?

श्री निरंजननाथ आचार्य : उसके आंकड़े उपलब्ध नहीं हो सके। इतने विस्तार में प्रश्न है इसलिए आंकड़े उपलब्ध नहीं हो सके।

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : क्या सरकार यह उचित नहीं समझती कि राज्य में जो तस्करी

Page No 27

(श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल)
होती है उसको रोकने की दृष्टि से प्रोसीक्यूशन के मामलों में सख्ती रखी जाय और प्रोसीक्यूशन करने वाली एजेन्सी को और मजबूत बनाया जाय ?

श्री निरंजननाथ आचार्य : उसे सरकार पहले से ही मजबूत बना चुकी है और अब भी बना रही है। और फिर ज्यों ही मालूम होता है कि कहीं पर कोई शिथिलता है तो सरकार उसको मजबूत करेगी।

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : क्या आपको मालूम है कि प्रोसीक्यूशन की जो ऐजेंसी है उनमें अनेक व्यक्ति ऐसे हैं जो लॉ ग्रेजुएट नहीं हैं इसलिए प्रोसीक्यूशन फेल होते हैं ? क्या इस दृष्टि से आपने विचार किया है ?

श्री निरंजननाथ आचार्य : यह अलग से प्रश्न है।

श्री अब्दुल जब्बार (निम्बाहेडा) : जितने तस्करी पकड़े गये हैं उनसे जो माल बरामद किया गया है उसमें कुछ काफी कीमती है, उसके संबंध में आपने क्या किया है ?

श्री निरंजननाथ आचार्य : यह अलग से प्रश्न है।

श्री योगेन्द्रनाथ हांडा : क्या आप यह महसूस नहीं करते हैं कि तस्कर व्यापार को रोकने के लिये कोई मजबूत कानून बनाया जाय ? जो प्रेज़ेन्ट कानून है उसमें तस्करी की जमानत हो जाती है, वह बेलेबल ऑफेन्स है और आम तौर पर तस्करी छूट जाते हैं ?

श्री अध्यक्ष : एक कल का स्थगित प्रश्न है।

श्री मुरलीधर व्यास : अनाज की तस्करी के मामले हैं, वे दर्ज हैं या नहीं ? जितने अनाज की तस्करी के मामले बोर्डर के हैं वे कितने मामले हैं ?

श्री निरंजननाथ आचार्य : यह विश्लेषण नहीं किया गया है। अलग अलग सैक्शन्स के कहां कहां के मामले हैं–इसकी जानकारी मेरे पास नहीं है। मैं अर्ज कर चुका हूं।

श्री मुरलीधर व्यास : इसमें चित्तौड़ के ५५ मामले हैं, वे सोने के तस्कर के मामले नहीं हो सकते। वह अनाज के तस्कर के मामले हैं। उनके खिलाफ आपने क्या कार्यवाही की ?

श्री निरंजननाथ आचार्य : चित्तौड़ के कौन से मामले हैं, सोने के तस्कर व्यापार के कौन से मामले हैं, अनाज के तस्कर के कौनसे मामले हैं और आपके दिमाग में क्या है ?

श्री मुरलीधर व्यास : यह जो आपने पचपन मामले चित्तौड़ के बताये हैं यह किस मामले के हैं ? आप यह बतायें कि सोने की तस्करी के हैं या अनाज की तस्करी के हैं ?

श्री निरंजननाथ आचार्य : पहले ही दो सवालों के संबंध में इतने मामले हैं जिनके बारे में सूचना मैं इस अवधि में कलेक्ट नहीं कर सका। मैंने अपनी विवशता बताई है। आप फिर भी चाहते हैं तो अलग अलग सैक्शन के कहां कहां के मामलात हैं तो मैं उसकी सूची रख दूंगा।

श्री मुरलीधर व्यास : सूची का सवाल नहीं है। सवाल यह है कि आपने उनको छोड़ दिया, जिन्होंने अफीम का तस्कर किया, अनाज का तस्कर किया, सोने का तस्कर किया।

(श्री मुरलीधर व्यास)

उनको आपने रखा और रख कर छोड़ दिया। इस तरह छोड़ने से मतलब क्या निकला? या तो आप ऐसे मामलों में स्ट्रिक्ट कार्यवाही करते, जो दोषी थे उनको दंडित करते। लेकिन आपने कुछ व्यक्तियों को पकड़ा और बिना कुछ किये छोड़ दिया। हम जानना चाहते हैं कि कितने अफीम के तस्कर व्यापारी, कितने सोने के तस्कर व्यापारी और कितने अनाज के व्यापारी थे और कितनों को आपने छोड़ा है?

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : सदन इसमें इन्ट्रेस्टेड नहीं है कि आप ज्यादा डिटेल्स दें। आप डिटेल्स दें या न दें। सदन की इसमें दिलचस्पी है कि राज्य में जो तस्कर व्यापार हो रहा है उसको रोकने के लिये आप प्रभावी कदम उठावें और जिन लोगों को पकड़ा जाय उनका बाकायदा प्रोसीक्यूशन किया जाय और प्रोसीक्यूशन में कोई लूपहोल न रह जाये। आपने कुछ तस्कर व्यापारियों को पकड़ा और छोड़ दिया तो इससे तस्कर व्यापार को बढ़ावा मिलेगा। अफसोस यही है कि राज्य सरकार ने इस संबंध में कोई प्रभावी कदम नहीं उठाये हैं। पहले तो लोगों को पकड़ा ही नहीं और बाद में जब पकड़ने का अभियान चलाया और लोगों को पकड़कर मुकदमें दायर किये गये लेकिन क्योंकि प्रोसीक्यूशन की एजेंसी आपकी वीक है इसमें इसलिए सक्सेज का परसेन्टेज कम है। हम चाहते हैं कि इसको थोड़ा मजबूत किया जाय।

श्री निरंजननाथ आचार्य : मैं माननीय सदस्य की भावनाओं का आदर करता हूं। वे स्वयं कानून के प्रश्न को समझते हैं और प्रोसीक्यूशन के मामले में उनको ज्ञान है, इसलिए जो कुछ कह रहे हैं उसमें सत्यता का आभास होता है। मैं उनको विश्वास दिलाना चाहता हूं कि प्रोसीक्यूशन के मामले में लेप्सेज होंगे या ऐसी कोई चिन्ता होगी तो हम यह प्रयत्न करेंगे कि प्रोसीक्यूशन ठीक ढंग से चले और कोई ब्लंडर नहीं हो।

श्री योगेन्द्रनाथ हांडा : अध्यक्ष महोदय

श्री अध्यक्ष : अब इस प्रश्न पर ज्यादा बहस नहीं होगी।

कल का एक स्थगित प्रश्न है। गृह मंत्री कृपया उसका उत्तर दें।

श्री दयाचन्द सोन : हमारा प्रश्न रोज रह जाता है।

श्री अध्यक्ष : पैरोकार का प्रश्न।

एक माननीय सदस्य : मेरा प्रश्न था। मैंने बोल दिया था।

श्री अध्यक्ष : आपने बोला था नहीं।

स्थगित प्रश्न

(२३-९-६५)

पैरोकारी के पद पर की गई नियुक्ति

६० **श्री भैरोंसिंह** (किशनपोल, जयपुर): क्या गृह मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे:—

(१) क्या यह सही है कि मोहम्मद खां एच० सी० पैरोकारी, रेल्वे मजिस्ट्रेट, जयपुर को दिनांक १४-८-६४ को गिरफ्तार किया जाकर पाकिस्तान भेज दिया गया है? यदि हां, तो क्यों?

(२) यदि यह व्यक्ति पाकिस्तानी नागरिक था तो उसको यहां नियुक्ति किसकी गलती से हुई और उस अधिकारी के विरुद्ध क्या कार्यवाही की गई?

Page No 29

उप-मंत्री, गृह (श्री निरंजननाथ आचार्य) : इस प्रश्न का उत्तर दे दिया था। सप्लीमेन्टरीज में एडीक्वेसी नहीं थी। सप्लीमैन्ट्रीज आप पूछिये, मैं उनका उत्तर दे देता हूं। उत्तर हो गया था। सप्लीमैन्ट्रीज में कमी रही थी।

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल (जौहरी बाजार, जयपुर) : जो क्वेशचन पोस्टपोन होता है, उसका दुबारा उत्तर दिया जाता है।

श्री निरंजननाथ आचार्य : अध्यक्ष महोदय, आदेश दें तो मैं पढ़ देता हूं।

श्री भैरोंसिंह : आप यह बता दीजिये कि आप तैयार होकर आये हैं या नहीं।

श्री निरंजननाथ आचार्य : यह तो बाद में पता लगेगा।

श्री भैरोंसिंह : पता तो लगेगा बाद में। लेकिन अगर आप तैयार होकर नहीं आये हों तो समय क्यों लिया जाय सदन का।

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : प्रश्न पूछने की बात नहीं है। पहले आप प्रश्न का उत्तर दे दें।

श्री भैरोंसिंह : जवाब की जरूरत नहीं है। मैं सप्लीमैन्ट्री पूछ लेता हूं। क्या माननीय मंत्री यह बतायेंगे कि जिस व्यक्ति ने इसकी तस्दीक की थी और वह तस्दीक झूठी साबित हुई तो उसके खिलाफ केस दायर किया गया या नहीं ?

श्री निरंजननाथ आचार्य : अशरफ अली तस्दीक करने वाला। उस व्यक्ति का ससुर हैड कान्स्टेबिल था। उस व्यक्ति की उसने तस्दीक की और ज्यूंहीं रेल्वे एस. पी. ने उसके विरुद्ध कार्यवाही करने का आदेश दिया, उसके पहले ही वह व्यक्ति रिटायर हो गया। और अब प्रश्न यह रहा कि रिटायर होने के बाद उसके ऊपर कोई कार्यवाही की जा सकती है या नहीं। सी. एस. आर. के अन्डर पांच साल अगर उसको हो जाते हैं रिटायर होने के बाद तो कार्यवाही नहीं हो सकती है। लेकिन चूंकि यह मसला गलत तस्दीक करने का है इसलिए हम उसको पीनल कोड में मूव कर रहे हैं कार्यवाही करने के लिए। इसके अतिरिक्त मैं इस संबंध में कुछ नहीं कह सकता।

श्री भैरोंसिंह : पीनल कोड में क्या मूव कर रहे हैं और कब से मूव कर रहे हैं ?

श्री निरंजननाथ आचार्य : पीनल कोड में भी प्रोवीजन्स को एग्जामिन किया तो मामला बडा वैसा मालूम होता है। आज ही मूव कर रहा हूं।

श्री भैरोंसिंह : अब तक आपने क्यों नहीं मूव किया ?

श्री निरंजननाथ आचार्य : अब तक इसलिए नहीं किया तस्दीक गलत थी वह शायद जयपुर का फलां मौहल्ले का है। लेकिन डिटेक्शन होने के बाद मालूम हुआ कि गलत तस्दीक की है उस आदमी को, १६१ पीनल कोड की सजा १।। साल की इसको हो गई। वह भुगतने चला गया और फिर उसको एग्जामिन करने में कुछ पोइन्ट्स पर आंख रखी कि ऐसा तो नहीं है कि हम कार्यवाही भी करें और बाद में मामला कमजोर जाय। मैंने भी इसको एग्जामिन किया है और मैं इस तथ्य पर पहुंचा कि इसमें कार्यवाही की जानी चाहिये।

श्री भैरोंसिह : क्या यह सही है कि मोहम्मद खां को पाकिस्तान में डिपोर्ट किया गया उस व्यक्ति के बारे में सरकार को इत्मीनान हो गया है अशरफ अली ने उसकी गलत तस्दीक की है ?

श्री निरंजननाथ आचार्य : नहीं–रिपोर्ट करने के बाद में मालूम हुआ कि इसकी तस्दीक गलत है ।

श्री भैरोंसिह : आपने कहा कि इस व्यक्ति ने नाम बदला । यह किस वक्त मालूम हुआ कि उसने नाम बदला था ?

श्री निरंजननाथ आचार्य : नाम बदलने की बात उस वक्त जाहिर में आई जब इसकी जांच प्रारंभ हुई ।

श्री भैरोंसिह : जांच कब प्रारंभ हुई थी ?

श्री निरंजननाथ आचार्य : जांच इसकी इसके वीसा की दर्ख्वास्त सैक्रेटेरियेट में थी । और चूंकि इसने अपने सिटीज़नशिप की दर्ख्वास्त पेश की थी गवर्नमेन्ट के सामने और वह रिजेक्ट हो गई । उस रिजेक्शन के ऑर्डर के साथ ही उसकी कार्यवाही सैक्रेटरियेट में थी और सैक्रेटेरियेट ऐसे मामलों में इन्वेस्टीगेशन करता है कि ऐसे लोग हिन्दुस्तान में हैं या नहीं, डिपोर्टेशन हो चुका है या नहीं ? उस सिलसिले में जांच के दौरान मालूम हुआ । यह आदमी यहीं है या डिपोर्ट हो गया इसकी इन्क्वायरी की गई––उस दौरान यह पता लगा ।

श्री भैरोंसिह : सरकार तहकीकी रूप से कह सकती है कि जिस व्यक्ति ने नागरिकता के अधिकार प्राप्त करने का प्रार्थना-पत्र दिया है वह व्यक्ति मौहम्मद खां था और जिसको डिपोर्ट किया जाना था वह यही व्यक्ति था ?

श्री निरंजननाथ आचार्य : हम तहकीकी कहने की स्थिति में हैं जो एप्लीकेशन सिटीजनशिप की रिजेक्ट की वह उसी व्यक्ति की है जिसको डिपोर्ट किया गया ।

श्री भैरोंसिह : तो जब आपने आवेदन-पत्र इस व्यक्ति का रिजेक्ट किया उस समय से लेकर एक्चूअली जब डिपोर्ट किया गया–इतने दिन किसकी गफलत से वह हिन्दुस्तान में रहा ?

श्री निरंजननाथ आचार्य : इसमें कुछ गफलत, अध्यक्ष महोदय, जरूर मालूम होती है । यह एप्लीकेशन रिजेक्ट होने का ऑर्डर जो सैक्रेटेरियेट में था पुलिस में उसकी नकल नहीं भेजी गई । इसलिये कहीं न कहीं यह गफलत जरूर रही है और यह आदमी यहीं रह गया । इसकी इन्क्वायरी कर रहे हैं कि किस लेवल पर गफलत है और कौन जिम्मेदार है ।

श्री भैरोंसिह : इस मोहम्मद खां के खिलाफ जब कि वह हिन्दुस्तान का नागरिक नहीं था और बिना अधिकारों के यहां पर रहा उसको डिपोर्ट ही क्यों किया गया, उसके खिलाफ प्रोसीक्यूशन क्यों नहीं किया गया ?

श्री निरंजननाथ आचार्य : प्रोसीक्यूशन क्यों नहीं किया गया इसके लिये फोरिनर्स एक्ट की धारा ३० है, जहां तक मेरा ख्याल है, उसमें दो ओपशन हैं एक तो यह कि ऐसे व्यक्ति को हम डिपोर्ट करदें या हम उसके खिलाफ कोई प्रोसीक्यूशन की

Page No 31

(श्री निरंजननाथ आचार्य)

कार्यवाही करें। इस व्यक्ति के खिलाफ हमनें प्रोसीक्यूशन की कार्यवाही करना उचित नहीं समझा।

श्री फूलचन्द जैन (सुजानगढ़) : आप साफ साफ कह दीजिये, आपने इतना समय तो इसमें लगा दिया है।

श्री निरञ्जननाथ आचार्य : I am in possession of the Floor, Sir. The Hon'ble. Member has no right to disturb me, Sir. I seek your protection, Sir.

श्री फूलचन्द जैन : आप ठीक तरह से उत्तर दीजिये न ?

श्री निरञ्जननाथ आचार्य : I seek your protection, Sir.

आपको इतना उबाल नहीं खाना चाहिये।

श्री रामानन्द अग्रवाल : अध्यक्ष महोदय, इतने बड़े मामले को इस तरह से गोलमाल उत्तर देकर रफा-दफा किया जा रहा है। इसको इस तरह से इतना लाइटली नहीं लिया जाना चाहिए।

श्री योगेन्द्रनाथ हांडा (रायसिंहनगर) : अध्यक्ष महोदय, इस नौटंकी को बन्द कराया जावे।

श्री निरंजननाथ आचार्य : हमने प्रोसीक्यूशन को जरूरी नहीं समझा। इसलिये हमनें समझा कि जल्दी से जल्दी यह निकल जावे तो अच्छा हो।

श्री रामानन्द अग्रवाल : अध्यक्ष महोदय, इस मोहम्मद खां ने फोरिनर्स एक्ट के तहत जिसको आपने डिपोर्ट किया, उसने यही ऑफेन्स नहीं किया कि वह पासपोर्ट की अवधि के अलावा यहां पर ज्यादा रहा, बल्कि उसने अपना नाम बदल कर सरकारी नौकरी ली जो अलग से ऑफेन्स था ? क्या सरकार ने इस ऑफेन्स में उसके खिलाफ कोई केस रजिस्टर किया और नहीं किया तो क्यों ?

श्री निरञ्जननाथ आचार्य : इस सम्बन्ध में इसलिये जानकारी नहीं ली गई क्योंकि हम उसको डिपोर्ट करना चाहते थे······

श्री रघुनाथ बिश्नोई (सांचोर) : आप क्या इसके लिये अपने सी. आई. डी. विभाग की गलती नहीं मानते कि यह सब उनकी गफलत के कारण हुआ है ?

श्री निरञ्जननाथ आचार्य : इसका जवाब मैं दे चुका हूं।

श्री अध्यक्ष : एक बात मन्त्री महोदय बतावें कि सरकार ने जब उसकी दरख्वास्त खारिज करदी थी तो वह आज्ञा किसको भेजी गई कि इसकी दर्ख्वास्त खारिज करदी गई है या कोई आज्ञा निकली ही नहीं।

श्री निरञ्जननाथ आचार्य : इस आदमी को तो आज्ञा दे दी गई। उसको तो बता दिया गया लेकिन गलती सेक्रेटेरियेट लेवल पर हुई है। पुलिस में ऑर्डर जाने चाहिये नहीं भेजे गये और पुलिस सतर्क नहीं रही। हम इसको एग्जामिन करवा रहे हैं कि यह गलती कहां पर हुई, पुलिस के यहां पर या सेक्रेटेरियेट में।

श्री भैरोंसिंह : जब आप उस व्यक्ति को इस देश का नागरिक नहीं मानते तो वह फिर यहां पर कैसे आया ? यह पास पोर्ट या वीसा से तो नहीं आया। जिस दिन उसने

Page No 32

(श्री भैरोंसिह)
एप्लीकेशन दी उसी दिन आपने उसको अरेस्ट क्यों नहीं किया ? यह आ कैसे गया बिना पास पोर्ट के जब यह पाकिस्तान का नागरिक था ?

श्री निरंजननाथ आचार्य : यह ५७ में वीसा लेकर लीगली आया....

श्री भैरोंसिह : अध्यक्ष महोदय, मौहम्मद खां और मौहम्मद अली ये दो अलग अलग व्यक्ति हैं। यह दूसरा व्यक्ति है जिसके लिये आप कहते हैं कि वह वीसा ले कर आया था और यह दूसरा व्यक्ति है।

श्री निरन्जननाथ आचार्य : यह सारा मामला बडा गम्भीर है। उस आदमी को डिपोर्ट करने से ऐसा मालूम पड़ता है कि सबस्टेन्शियल एविडेन्स को बाहर भेज दिया जिससे मामला खुले नही। इसलिये मैं यह निवेदन करूंगा कि इस मामले की पूरी तफतीश करवाई जावे।

श्री अध्यक्ष : मन्त्री महोदय ने स्वयं ने इस बात को स्वीकार किया है कि सेक्रेटेरियेट लेवल पर या पुलिस में गलती हुई है इसकी पूरे तौर से जांच करावेंगे और जिस व्यक्ति ने गलती की, अब कानून के अनुसार पीनल कोड में कार्यवाही की जा सकेगी। मैं आशा करता हूं कि माननीय सदस्यों को इससे संतोष हो जाना चाहिए । और माननीय मन्त्री जो भी कार्यवाही करें उसकी सूचना सदन को दे दें तो मैं समझता हूं कि माननीय सदस्य इससे संतोष कर लेंगे।

(शेष तारांकित प्रश्नोत्तर के लिये कृपया परिशिष्ट २ देखिये)

अनुपस्थित सदस्यों के तारांकित प्रश्नोत्तर

स्टेट सेन्ट्रल लाइब्रेरी

८८. **श्रीमती लक्ष्मीकुमारी चूंडावत** (भीम) : क्या शिक्षा मन्त्री यह बताने की कृपा करेंगे :—

(१) राजस्थान में स्टेट सैन्ट्रल लाइब्रेरी की स्थापना कब व कहां हुई थी ?

(२) इसकी स्थापना जयपुर में हुई उसके बाद यह बीकानेर कितनी बार शिफ्ट की गई और कितनी बार फिर जयपुर में स्थापित की गई ?

(३) किस कारण से इसका समय समय पर स्थान परिवर्तित किया गया है ?

(४) क्या यह सही है कि इस वक्त यह लाइब्रेरी जयपुर में है फिर भी इसका स्टाफ स्टेट लाइब्रेरीयन, दो क्लर्क और एक चपरासी बीकानेर समाज शिक्षा विभाग में हैं ? यदि हां, तो क्यों ?

(५) क्या यह सही है कि स्टेट सेन्ट्रल लाइब्रेरी काम नहीं कर रही है जबकि पूरा स्टाफ और पुस्तकें मौजूद हैं ?

(६) इस लाइब्रेरी में पुस्तक संख्या क्या है ?

उत्तर

(१) राजस्थान में केन्द्रीय पुस्तकालय की प्रथमवार स्वतन्त्र रूप से स्थापना, द्वितीय पंच वर्षीय योजना काल, सन १९६०-६१ में जयपुर में की गई थी ?

(२) जयपुर में स्थापना होने के पश्चात् यह बीकानेर स्थानान्तरित नहीं की गई ।

Page No 33

(श्री शिक्षा मंत्री)

(३) स्वतन्त्र रूप से जयपुर में स्थापित करने के पश्चात् इसका स्थानान्तरण नहीं किया गया वरन उचित प्रावधान के अभाव में इसे महाराजा सार्वजनिक पुस्तकालय, जयपुर में मिला दिया गया।

(४) सन् १९६२ में इसे महाराजा सार्वजनिक पुस्तकालय, जयपुर के साथ मिला देने से अब इसका अपना अलग से कोई स्वतन्त्र अस्तित्व नहीं है। अब यह महाराजा सार्वजनिक पुस्तकालय, जयपुर में सन्दर्भ शाखा के रूप में, कार्य कर रही है। एक सहायक पुस्ताकालयाध्यक्ष को इस शाखा का कार्यभार सौंपा गया है तथा उसकी सहायता को एक चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी भी है। इसका बाकी का स्वीकृत स्टाफ–एक स्टेट लाइब्रेरियन, एक वर्गीकार, सूचीकार, एक कनिष्ठ लिपिक व एक चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी–उपाध्यक्ष, समाज शिक्षा के कार्यालय में कार्य कर रहा है। राजस्थान में पुस्तकालय सेवाएं उपाध्यक्ष, समाज शिक्षा, राजस्थान की देखरेख में है। अतः उक्त स्टाफ उक्त कार्य में उनकी सहायता करता है। इसके अतिरिक्त यह स्टाफ राज्य भर की शिक्षण संस्थाओं के हेतु पुस्तकों को मान्यता (एप्रूवल) सम्बन्धी कार्य भी करता है।

(५) यह सही नहीं है कि पूरा स्टाफ व पुस्तकों के होते हुए भी सेन्ट्रल लाइब्रेरी काम नहीं कर रही है। स्वीकृत कर्मचारियों की अल्प संख्या एवम् बहुत ही अल्प वार्षिक प्रावधान के होने के कारण केन्द्रीय पुस्तकालय को स्वतन्त्र रूप से चलाना संभव प्रतीत नहीं हुआ, जहां से राज्य भर के लिये विशिष्ट पुस्तकालीय सेवाओं का संचालन किया जा सके। अतः इसका महाराजा सार्वजनिक पुस्तकालय, जयपुर में संदर्भ शाखा के रूप में रूपान्तर उचित समझा गया। महाराजा सार्वजनिक पुस्तकालय, जयपुर राज्य का सबसे बडा व पुराना पुस्तकालय है। अत: इसे ही केन्द्रीय पुस्तकालय बनाना आर्थिक तथा उपयोगिता की दृष्टि से उचित समझा गया, जैसा कि कुछ अन्य राज्यों (मद्रास, बिहार आदि) में भी किया गया है।

(६) इस पुस्तकालय के लिये सन् ६०-६१ तक लगभग, १,००० पुस्तकें क्रय की गई थीं, जो अब महाराजा सार्वजनिक पुस्तकालय, जयपुर की संदर्भ शाखा (केन्द्रीय पुस्तकालय का रूपान्तर) में जनता के उपयोग में आ रही हैं।

पंचायत समिति, सूरजगढ के अध्यापक की पिटाई

९७. **श्री भैरबलाल 'कालाबादल'** (अकलेरा-सु.) : क्या गृह मन्त्री यह बताने की कृपा करेंगे :—

(१) क्या आज से दो वर्ष पूर्व रामेश्वर दयाल, अध्यापक, पंचायत समिति सूरजगढ़ जिला झुन्झुनू को सब-इन्सपेक्टर पुलिस थाना गुढ़ा (गौडजी) ने बिना कसूर बुरी तरह मारा-पीटा था ?

(२) उक्त अध्यापक ने उपरोक्त सब-इन्सपेक्टर के खिलाफ क्या कार्यवाही कब की थी ?

(३) एस. डी. एम. कोर्ट नवलगढ़ से उपरोक्त थानेदार को तारीख पेशी पर हाजिर होने के लिये कितनी बार किस तारीख को नोटिस दिये गये ?

Page No 34

(श्री गृह मंत्री)

उत्तर

(१) श्री रामेश्वरदयाल ने ऐसे आरोपों का एक इस्तगासा सब-डिवीजनल दण्डनायक, नवलगढ़ के न्यायालय में दिनांक ५-७-६२ को प्रस्तुत किया था।

(२) इसका उत्तर उपरोक्त प्रश्न १ के उत्तर में दिया जा चुका है।

(३) न्यायालय से ११ बार थानेदार के विरुद्ध सम्मन निकाले गये :—

६-७-६३, १३-६-६३, ११-११-६३,
२८-१२-६३, ६-३-६४, ११-५-६४,
२२-६-६४, ६-६-६४, २८-१२-६४,
३-३-६५, ३०-८-६५,

अतारांकित प्रश्नोत्तर

आमेर तहसील के पुलिस थानों और चौकियों में अनुसूचित जाति के कर्मचारी

३३. **श्री श्रवणलाल** (हिण्डौन-सु.) : क्या गृह मन्त्री यह बताने की कृपा करेंगे :—

आमेर तहसील में कितने पुलिस थानें और चौकियां हैं तथा इनमें कितने थानेदार, मुन्शी और पुलिस मैन हैं व उनमें से अनुसूचित जाति के कितने हैं ?

उत्तर

आमेर तहसील में ५ पुलिस थाने व ५ चौकियां हैं। जिनमें ५ उप-निरीक्षक, ११ मुख्य आरक्षी व ८५ आरक्षी नियुक्त किये हुए हैं। इनमें से एक आरक्षी अनुसूचित जाति का है।

उम्मेदगंज कृषि फार्म, कोटा

३४. **श्री कृष्णकुमार गोयल** (कोटा) : क्या कृषि मन्त्री यह बताने की कृपा करेंगे :—

(१) उम्मेदगंज कृषि फार्म, कोटा के लिए वन विभाग से कितनी भूमि कब प्राप्त हुई ?

(२) अभी तक कुल भूमि में कितनी भूमि जंगल से साफ करली हैं तथा बकाया भूमि में अनुमानतः कितने मूल्य का जंगल हैं ?

(३) क्या यह सत्य हैं कि इस जंगल में इमारती लकडी के वृक्ष भी थे व चन्दन के वृक्ष भी थे ? अगर हां, तो कितने कितने व किस मूल्य के ?

उत्तर

(१) मई सन् १९६० में १४०० एकड भूमि प्राप्त की गई ?

(२) ८०० एकड भूमि जंगल से साफ करली गई हैं। बकाया भूमि में अनुमानतः ४०००) या ५०००) रु० मूल्य का जंगल हैं।

(३) इस जंगल में इमारती लकडी नहीं थी। हां अडक चन्दन के वृक्ष हैं जिनकी संख्या ४०० या ५०० के लगभग हैं। इनका मूल्य अलग नहीं आंका गया क्योंकि यह अन्य लकडी की तरह जलाने के काम आते हैं।

झालावाड़ में 'ए' श्रेणी का औषधालय

३५. **श्री गोविन्दसिंह** (पिड़ावा) : क्या आयुर्वेद मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे :—

(१) कोटा, बूंदी व झालावाड़ जिलों में 'ए' श्रेणी के आयुर्वेदिक औषधालय कहां कहां पर हैं ?

Page No 35

(श्री गोविन्दसिंह)

(२) क्या यह सही है कि झालावाड़ जिले का हैडक्वार्टर होते हुए भी वहां पर 'ए' श्रेणी का औषधालय न होकर 'बी' श्रेणी का ही है ?

(३) यदि हां, तो झालावाड़ में 'ए' श्रेणी का औषधालय कब तक खोलने का विचार है ?

उत्तर

(१) कोटा, बूंदी व झालावाड़ जिलों में 'ए' श्रेणी के औषधालय कोटा व बूंदी जिलों में हैं ।

(२) जी हां ।

(३) अग्रिम वर्ष बजट प्रावधान होने की परिस्थिति में 'ए' श्रेणी में उच्च स्तरीकरण का प्रस्ताव प्रस्तुत किया जावेगा ।

जिला चूरू और वन संरक्षण कार्य

३६. **श्री मोहरसिंह (चूरू)** : क्या वन मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे:—

(१) चूरू जिले में तृतीय पंचवर्षीय योजना में अब तक कितना रुपया किस किस वर्ष में वन संरक्षण के लिये किस किस स्थान पर खर्च किया गया ?

(२) क्या चूरू जिले में रेगिस्तान को रोकने के लिये वृक्ष लगाने की कोई योजना चालू वर्ष के लिये है ?

उत्तर

(१) तृतीय पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत चूरू जिले में वन संरक्षण के लिए जो विभिन्न योजनायें कार्यान्वित की गई उनके विवरण व साल-वार खर्चे की सूची संलग्न है ।

(२) जी नहीं ।

(सूची विस्तृत होने से विधान सभा पुस्तकालय में रखी गई)

जिला चूरू की शिक्षण संस्थाओं में चतुर्थ श्रेणी के कर्मचारियों की नियुक्तियों में अनुसूचित जाति का अनुपात

३७. **श्री रावतराम** (सादुलपुर) : क्या शिक्षा मंत्री निम्नलिखित प्रश्न का उत्तर देने की कृपा करेंगे:—

(१) चूरू जिले की विभिन्न शिक्षण संस्थाओं में सन् ६३-६४ एवं ६४-६५ में क्लास फोर्थ कर्मचारियों की नियुक्तियां हुई ?

(२) उक्त कर्मचारियों में अनुसूचित जाति के कितने लोग नियुक्त किये गये हैं ?

उत्तर

(१) जी हां ।

(२) ३ अनुसूचित जाति के कर्मचारियों की नियुक्तियां की गई थीं ।

स्कूलों की अधूरी इमारतें

३८. **श्री जुझारसिंह** (चेचट) : क्या शिक्षा मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे:—

(१) पंचायत समिति, चेचट व सांगोद में हाई स्कूल व हायर सैकण्डरी स्कूल की कितनी इमारतों को जनता द्वारा बनाया गया है और उन पर अब तक कितना रुपया किस किस स्थान पर खर्च हो चुका है ?

(श्री जुझारसिंह)

(२) उपरोक्त इमारतों में से किन किन पर कितना कितना रुपया सरकार द्वारा अनुदान के रूप में कब कब दिया गया है ?

(३) जनता के सहयोग व सरकार के अनुदान के बावजूद किन किन जगहों पर इमारतें अधूरी पड़ी हुई हैं और इन्हें पूर्ण रूप से पूरा कराने व काम में लेने के लिये सरकार की क्या योजना है ?

उत्तर

(१) पंचायत समिति सांगोद व चेचट की हाई व हायर सैकन्डरी स्कूल के भवन जो जनता द्वारा तथा जितनी धनराशि से बनवाये गये निम्न प्रकार से हैं:—

पंचायत समिति सांगोद:—

१. हाई स्कूल, सांगोद ..	.. लगभग २२०००) रु. की लागत से।
२. हायर सैकन्डरी स्कूल, आंवा	.. ४ कमरों को छोड़कर; लगभग ४५०००) रु. की लागत से।
३. जूनियर हायर सैकन्डरी स्कूल, कनवास	लगभग २६४५०) रु० की लागत है।

पंचायत समिति चेचट:—

१. हायर सैकन्डरी स्कूल, चेचट	.. लगभग ३८४३२.२५ पै० जनता द्वारा तथा पंचायत समिति चेचट द्वारा १४०००)रु.
२. हाई स्कूल, रामगंज मण्डी ..	.. शाला का निर्माण सन् ४०-४१ में कोटा रियासत तथा जनता द्वारा हुआ। जनता का इसमें ८०००) रु० से १००००) रु० तक का खर्च हुआ।

२. इन स्कूल भवनों में सरकार द्वारा अनुदान निम्न प्रकार से दिया गया:—

१. हाई स्कूल, सांगोद ..	.. कोई अनुदान नहीं दिया।
२. हायर सैकन्डरी स्कूल, आंवा	.. ६०००) सन् १९६०-६१ में।
३. जूनियर हा० सैकन्डरी स्कूल, कनवास	.. ७०००) सन् १९६१-६२ में।
४. हा० सैकन्डरी स्कूल, चेचट ..	.. १००००) सन् १९६१-६२ में।
५. हाई स्कूल, रामगंज मंडी ..	.. १२०००) सन् १९५६-५७ में।
६. हाई स्कूल, सांगोद ..	.. भवन में कोई कमरा आदि अधूरा नहीं है।

(श्री शिक्षा मंत्री)

हायर सैकन्डरी स्कूल, आंवा ..	इमारत में ४ कमरे अधूरे पड़े हैं जनता द्वारा कई बार आश्वासन देने पर भी पूर्ण नहीं किये गये।
जूनियर हा० सैकन्डरी स्कूल, कनवास	भवन में कोई हिस्सा अधूरा नहीं है।
हायर सैकन्डरी स्कूल, चेचट	एक हॉल, ३ कमरे अधूरे हैं।
हाई स्कूल, रामगंज मंडी	भवन का कोई हिस्सा अधूरा नहीं है।

हायर सैकेन्डरी स्कूल आंवा व चेचट को जनता के सहयोग से पूर्ण कराने का प्रयास यहां की पंचायत समिति कर रही है। आर्थिक कठिनाई के कारण सरकार मदद करने में असमर्थ है

हाई स्कूल निवाई का परीक्षाफल

३९. **श्री जयनारायण सालोदिया** (निवाई) : क्या शिक्षा मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे:–

(१) हाई स्कूल, निवाई की दसवीं कक्षा का परीक्षाफल सन् ६४-६५ का कितने प्रतिशत रहा ?

(२) क्या यह सच है कि स्कूल में योग्य अध्यापक न होने से पढाई का स्तर गिर रहा है ?

उत्तर

१. हाई स्कूल, निवाई की दसवीं कक्षा का सन् १९६४-६५ का परीक्षाफल निम्न रहा :

नाम परीक्षा	प्रविष्ट	उत्तीर्ण			योग	परिणाम प्रतिशत
		प्र०	द्वि०	तृ०		
हाई स्कूल	११	..	१	२	३	२७
सैकन्डरी स्कूल	९१	५	१६	१४	३५	३९

२. यह सत्य नहीं है। इस शाला में योग्य अध्यापक पर्याप्त संख्या में हैं। परीक्षा परिणाम कम होने का कारण परीक्षा में नवीन प्रणाली का आयोजन किया जाना है। इस सम्बन्ध में और जांच की जा रही है।

(११.२३ म० पू०)

जनलेखा समिति के प्रतिवेदन का उपस्थापन

श्री अध्यक्ष : श्री फूलचन्द जैन ।

श्री फूलचन्द जैन (सभापति, जनलेखा समिति): अध्यक्ष महोदय, मैं विनियोग तथा वित्त लेखे १९६२–६३ एवं उन पर अंकेक्षा प्रतिवेदन, १९६४ से संबंधित जनलेखा समिति; १९६५–६६ के छठे प्रतिवेदन (प्रथम एवं तृतीय खण्ड) का उपस्थापन करता हूं ।

कार्य सलाहकार समिति के २३ वें प्रतिवेदन का उपस्थापन एवं सदन की उस पर सहमति

श्री हरिदेव जोशी (विधान सभा के मामलात के मंत्री) : अध्यक्ष महोदय, मैं कार्य सलाहकार समिति के २३ वें प्रतिवेदन का उपस्थापन करता हूं ।

(विराम)

अध्यक्ष महोदय, मैं प्रस्ताव करता हूं कि यह सदन कार्य सलाहकार समिति के २३ वें प्रतिवेदन पर अपनी सहमति प्रकट करता है ।

श्री अध्यक्ष : प्रस्ताव प्रस्तुत हुआ ।

(विराम)

प्रश्न यह है कि प्रस्तुत प्रस्ताव स्वीकार किया जावे ।

(स्वीकृत)

प्रस्ताव स्वीकार किया गया ।

प्रवर समितियों के प्रतिवेदनों की प्रस्तुति हेतु समय में वृद्धि

(क) राजस्थान मुद्रांक विधेयक, १९६५

श्री परसराम मदेरणा (उप-मंत्री, वित्त) : अध्यक्ष महोदय, मैं प्रस्ताव करता हूं कि राजस्थान राज्य में मुद्रांक शुल्क संबन्धी विधियों को समेकित और संशोधित करने हेतु विधेयक, ६५ पर प्रवर समिति के प्रतिवेदन के उपस्थापन हेतु नियत समय को १५ अक्टूबर, १९६५ तक बढा दिया जावे ।

श्री अध्यक्ष : प्रश्न यह है कि प्रवर समिति के प्रतिवेदन के उपस्थापन हेतु नियत समय को १५ अक्टूबर, १९६५ तक बढा दिया जाय ।

(स्वीकृत)

प्रस्ताव स्वीकार किया गया ।

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल (जौहरी बाजार, जयपुर) : अध्यक्ष महोदय, कोई 'हां' तो बोला ही नहीं ।

श्री मथुरादास माथुर : आपने सुना नहीं ।

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : कोई बोलते तब सुनते । कोई बोला ही नहीं ।

(ख) राजस्थान कृषि कत्व विधेयक, १९६५

श्री परसराम मदेरणा (उप-मंत्री, वित्त) : अध्यक्ष महोदय, मैं श्री रामप्रसाद लड्ढा की ओर से कृषि भूमियों के कृषि कत्व (टीनेन्सी) से संबंधित विधि में संशोधन करने हेतु विधेयक, ६५, पर प्रवर समिति के प्रतिवेदन के उपस्थापन हेतु प्रस्ताव करता हूं कि नियत समय को आगामी सत्र के प्रथम सप्ताह तक बढा दिया जाय ।

श्री अध्यक्ष : प्रश्न यह है कि राजस्थान टीनेन्सी विधेयक, १९६५ पर प्रवर समिति के

Page No 39

(श्री अध्यक्ष)
प्रतिवेदन के उपस्थापन हेतु नियत समय को आगामी सत्र के प्रथम सप्ताह तक बढा दिया जाय।

(स्वीकृत.)

प्रस्ताव स्वीकार किया गया।

नाथद्वारा मन्दिर (संशोधन) विधेयक, १९६४—प्रवर समिति के प्रतिवेदन का उपस्थापन।

श्री हरीभाऊ उपाध्याय (केकड़ी): अध्यक्ष महोदय, में नाथद्वारा मन्दिर (संशोधन) विधेयक, १९६४ पर प्रवर समिति के प्रतिवेदन का उपस्थापन करता हूं।

(११.२८ म. पू.)

धौलपुर जेल से ६ कैदियों के पलायन विषयक ध्यानाकर्षण-प्रस्ताव

श्री कृष्णकुमार गोयल (कोटा): अध्यक्ष महोदय, प्रक्रिया तथा कार्य संचालन संबंधी नियमों के नियम १३१ के अन्तर्गत धौलपुर जेल से ६ कैदियों के फरार हो जाने से संबंधित मामले पर कारागृह मंत्री का ध्यान आकर्षित करता हूं।

श्री निरंजननाथ आचार्य (उप-मंत्री, कारागृह): अध्यक्ष महोदय, दिनांक २०-९-६५ को दिन के करीब १.५० पर धौलपुर सब-जेल से ६ कैदी जिनमें अन्डर ट्रायल्स भी थे, भाग गये। वह अपने साथ चार ४१० बोर गन व ५८ कारतूस व एक वार्डर की पतलून व बुशकोट व बैल्ट ले गये। जेल के दरवाजों की चाबियां भी ले गये हैं। प्रायमिक जांच से ऐसा मालूम हुआ है कि सब-जेलर उस समय अदालत गये हुए थे और सब-जेल उस समय हैड वार्डर श्री भगवानसिंह के सुपुर्द थी। बाहर के गेट पर छीतरिया वार्डर राइफल संतरी था। हैड वार्डर कैदियों को जेल के बाहरी कम्पाउन्ड में कुछ किचन के सामान को उठवाने लाया था। उसको मरोड़ उठी और वह घर चला गया। अन्दर के गेट को लोक करके चाबी कन्विक्ट ऑफिसर ग्यारसी को दे गया जो मय कैदी हेमसिंह के अन्दर के गेट के बाहर व बाहर के गेट के अन्दर छोड़ गया। बाहर का दरवाजा खुला छोड़ गया बताया। कन्विक्ट ऑफिसर ग्यारसी और कैदी हेमसिंह ने छीतरिया पहरेदार को गिरा कर हेउससे बन्दूक व कारतूस छीन लिये और उसके गोली मारने लगे। उस समय अन्दर के कैदी अन्दर के दरवाजे की तानों पर आ गये और उनके कहने से पहरेदार को नहीं मारा। पहरेदार का कहना है वह फिर बेहोश हो गया। पता चला है कि अन्दर के आये चार और कैदियों को बाहर निकाल कर और आर्मरी की अलमारी से तीन बन्दूक व कुछ कारतूस व एक पतलून व एक बुशशर्ट लेकर कैदी फरार हो गये और टलीफोन का तार काट गये।

भगवानसिंह, हैड वार्डर ने वापस आकर जब यह हाल देखा तो सामने वाले क्वार्टर से दूसरे हैड वार्डर को बुलाया जिसने आते ही अलार्म बजवा दिया। एक वार्डर को पास वाली जगह से एस० डी० एम० को जो जेल के ऑफिसर इन्चार्ज भी हैं इत्तला देने भेजा व एक वार्डर को कोतवाली भेजा। एस० डी० एम० उसी वक्त जीप में मय फोर्स के पहुंच गये और चारों तरफ छान-बीन शुरू करवा दी। बोर्डर डिस्ट्रिक्ट्स की पुलिस को भी एलर्ट कर दिया और सब-जेल के पहरे का पूरा इन्तजाम कर दिया। पुलिस में केस दर्ज हो गया है। हैड वार्डर भगवानसिंह व वार्डर

(श्री निरंजननाथ आचार्य)
छीतरिया को सस्पेन्ड कर दिया गया है व उनके खिलाफ दफा २२३ आई० पी० सी० में भी कार्यवाही जारी है। अभी भागे कैदी नहीं मिले हैं। जेल से दो मील दूर एक पजामा व एक बेड़ी मिली है।

श्री कृष्णकुमार गोयल (कोटा) : अध्यक्ष महोदय, हम मंत्री महोदय से जानना चाहते हैं कि जो कैदी थे वे किस जुर्म के थे ? आपने इतना बता दिया कि अन्डर ट्रायल थे। हम यह जानना चाहते हैं कि अन्डर ट्रायल कितने थे और कन्विक्ट कितने थे, जो कन्विक्ट थे उनको किस जुर्म में सजा दी थी और जो अन्डर ट्रायल थे उनके खिलाफ किस जुर्म में ट्रायल चल रही थी, धौलपुर जेल किस क्लास की जेल थी, किस श्रेणी के मुल्जिम रहते थे, उनके लिये यह जेल पर्याप्त है या नहीं। चौथे आपने यह बताया कि केवल एक संतरी मय राइफल के ड्यूटी पर था तो क्या यह जेल के नियमों के अनुसार पर्याप्त है ? क्या जेल के अलावा बाहर गार्ड रहती है, अगर रहती है तो उस समय थी या नहीं ? एक तथ्य और जानना चाहता हूं कि आर० ए० सी० समय पर पहुंच गई थी, आर० ए० सी० ने इन फरार मुल्जिमों को घेर लिया था पर आर० ए० सी० निहत्थी थी, उनके पास छोटी छोटी लकड़ी थीं इसलिये डाकुओं द्वारा मार डालने की धमकी देने पर आर० ए० सी० को मजबूरन वापिस आना पड़ा और इस तरह फरार कैदी खालों में घुस कर आसानी से फरार हो गये।

श्री निरंजननाथ आचार्य : (१) अन्डर ट्रायल चन्दमा पुत्र श्याम किशन, लोढ़, साकिन पई, राजस्थान, राजाखेड़ा, धौलपुर। जुर्म दफा ३८२।३२४ आई० पी० सी०। इसकी एक दूसरे केस में सैक्शन ३९५ आई० पी० सी० में जरूरत है।

(२) सन्तोष पुत्र नवाबसिंह, साकिन सिरोना, सरमथुरा, धौलपुर। जुर्म दफा ३५२।३३२।१४९ आई० पी० सी० ५ साल की सजा जेर दफा ३५२ आई० पी० सी० भी भुगत रहा है।

(३) अन्डर ट्रायल महाराजसिंह पुत्र श्री चंद ठाकुर, साकिन हथवाई, राजाखेड़ा। जुर्म दफा ३९५, ३९६, ३०२, ४३६, ३६५, ३७३, ३२४ आई० पी० सी०।

(४) कुंवरजी पुत्र सांवलिया गडरिया साकिन शक्तपुर। जुर्म दफा ३९२ आई० पी० सी०। एक साल की सजा जेर दफा १०९ भुगत रहा है।

(५) गयारसी पुत्र कल्या, गंगानगर जेल से तब्दील शुदा। जुर्म दफा ३९४ आई० पी० सी० में ४ साल की सजायाफ्ता।

(६) हेमसिंह उर्फ हमी वल्द नारायन सिंह, साकिन धौलपुर। जुर्म दफा ४११।७५ आई० पी० सी० में एक साल की सजायाफ्ता।

किस जुर्म के कैदी रह सकते हैं, यह मैं इस समय नहीं कह सकता, पर लाइफ इम्प्रिजनमेन्ट के नहीं रहते, शायद एबव फाइव ईयर्स इम्प्रिजनमेन्ट के वहां नहीं रहते।

आपने कहा कि आर० ए० सी० वहां पहुंच गई थी पर उनके पास छोटे छोटे डंडे थे, इस सम्बन्ध में मैं यह अर्ज करना चाहता हूं कि मुझे शीघ्रातिशीघ्र जांच करा कर यह सब यहां रखना था, ये सारे फैक्ट्स अन्डर इन्वेस्टिगेशन जो एन्क्वायरी है उसमें दे रहे हैं, उसके हो जाने के बाद मैं दे सकता हूं।

(श्री निरंजननाथ आचार्य)

सामग्री उपलब्ध हुई वह मैंने दी । यह सारा मामला इन्वेस्टिगेशन में है, सब-जुडिस है । गिरफ्तार होने की हालत में कोई इन्वेस्टिगेशन को हेम्पर करे, इस प्रकार के सवाल न पूछे जायेंगे ।

श्री कृष्णकुमार गोयल : मैंने एक सवाल और पूछा था । एक संतरी मय राइफल के था, उसने राइफल तानी भी पर उसको मारने की धमकी दी और बच कर वे कैदी निकल भागे । यह गार्डिंग अरेंजमेन्ट जिस प्रकार का किया गया वह जिस केटेगरी की जेल है और उसके जो रूल्स हैं उसके अनुसार पर्याप्त था ?

श्री निरंजननाथ आचार्य : गार्डिंग एकोर्डिंग टू रूल्स था, पर्याप्त था, यहां तक तो ठीक है ।

(११.३८ म. पू.)

पाकिस्तान द्वारा भारत पर किए गए आक्रमण विषयक शासकीय संकल्प की प्रस्तुति एवं वीरगति को प्राप्त सैनिकों को श्रद्धांजली तथा संकल्प का सर्व-सम्मति से पारण

श्री अध्यक्ष : अब मुख्य मंत्रीजी अपना संकल्प प्रस्तुत करेंगे ।

[मुख्य मंत्री महोदय द्वारा निम्नलिखित संकल्प प्रस्तावित किया गया :

"सैनिक तानाशाही से शासित पाकिस्तान ने हमारे देश पर ५ अगस्त, १९६५ को आक्रमण कर युद्ध लोलुप एवं साम्राज्यवादी नीति का प्रदर्शन किया है ।

भारत सदैव से एक शान्तिप्रिय देश रहा है और उसने अपने पड़ौसी देशों से अपनी आपसी समस्याओं को शांति एवं सद्भावना के साथ सुलझाने का सतत् प्रयास किया है । लेकिन पाकिस्तान ने इस नीति को हमारी कमजोरी समझ कर भारत के अटूट अंग जम्मू-काश्मीर में पहले लूटेरों की तरह सैनिक व असैनिक भेष में प्रशिक्षित छापामारों को भेजकर एवं उसके बाद अन्तर्राष्ट्रीय सीमा को तोड़कर सैनिक आक्रमण कर भारत की प्रादेशिक अखंडता और धर्मनिरपेक्षता पर आघात करने का प्रयत्न किया है ।

हमारी नभ, थल व जल सेना के वीर जवानों का यह सदन अभिनन्दन करता है तथा उनके प्रति आभार प्रकट करता है । उन्होंने उत्कट देश प्रेम, अदम्य साहस, अपूर्व शौर्य एवं विलक्षण रण चातुर्य के साथ शत्रु की सब चालें असफल कर दी हैं और उसे बराबर पीछे खदेड़ा है । यह सदन इस संघर्ष में वीर-गति को प्राप्त हुए सैनिकों के प्रति अपनी श्रद्धांजली अर्पित करता है और इन वीर-आत्माओं को विश्वास दिलाना चाहता है कि जिस महान् लक्ष्य प्राप्ति हेतु इन्होंने अपना बलिदान दिया है उसे प्राप्त कर ही दम लेंगे। यह सदन राजस्थान सशस्त्र पुलिस के जवानों ने जिस प्रकार अपना कर्त्तव्य निभाया है उसकी भी प्रशंसा करता है और उनमें से शत्रु का मुकाबला करते हुए जो वीर गति को प्राप्त हुए उनके प्रति भी श्रद्धांजली अर्पित करता है ।

सम्पूर्ण भारतीय जनता, राजनैतिक दल, मजदूर-किसान, व्यापारी व अन्यान्य वर्गों से इस विपत्ति की घड़ी में आपसी मतभेदों को भुलाकर जिस एकता एवं राष्ट्र भक्ति का परिचय दिया है, सदन उसकी सराहना करता है ।

पाकिस्तान ने देश के अन्य हिस्सों के साथ साथ राजस्थान के जोधपुर, बाड़मेर एवं गंगानगर जिलों में नागरिक बस्तियों पर अंधाधुन्ध

(श्री मोहनलाल सुखाड़िया)
बमबारी की । यह बमबारी उस समय भी की गयी जब युद्ध विराम को लगभग मान लिया गया था । इससे पाकिस्तान की बर्बरता और क्रूरता का पता लगता है ।

संयुक्त राष्ट्र संघ के प्रयत्नों से २३ तारीख को प्रातः ३।। बजे पाकिस्तान और हमारे देश के बीच में युद्ध विराम हुआ है । लेकिन युद्ध विराम के समय पाकिस्तान के राष्ट्रपति श्री अयूब खां और विदेश मंत्री, श्री जुल्फिखार अली भुट्टो ने जिस प्रकार के विचार व्यक्त किये हैं उनसे पता लगता है कि भारत के अभिन्न अंग जम्मू एवं कश्मीर पर अभी भी उनकी लोलुप दृष्टि है जिससे यह सदन एवं भारत कभी भी सहमत नहीं हो सकता, साथ ही साथ विस्तारवादी चीन का खतरा हमारे देश पर ज्यों का त्यों बना हुआ है । अतः हम सबको सचेत एवं सतर्क रहते हुए जन-बल, मनोबल एवं सैन्य बल को बढ़ाते हुए सुरक्षा के उपायों को निरंतर दृढ़ करना है जिससे हम किसी भी बाहरी आक्रमण के समय अपने देश की अखंडता की रक्षा सफलतापूर्वक कर सकें ।"]

श्री मोहनलाल सुखाड़िया (मुख्य मंत्री) : माननीय अध्यक्ष महोदय, आज इस सदन में हम उस प्रस्ताव पर विचार कर रहे हैं जो हमारे देश के इतिहास में एक प्रकार से पहली बार स्थिति पैदा हुई, आज भी जब हम इस बात पर विचार कर रहे हैं, सारे देश में जो कुछ हुआ, जो कुछ आज के दिन परिस्थिति हो रही है, भविष्य में जो संभावनाएं हो सकती हैं, उसके बारे में प्रत्येक भारतीय का दिमाग लगा हुआ है । हमारा देश सदैव से शान्ति-प्रिय रहा है, सह-अस्तित्व के सिद्धान्त को हम मानने वाले रहे हैं और न सिर्फ हमने खुद ने उस नीति का पालन किया बल्कि संसार में जहां कहीं ऐसी परिस्थितियां पैदा हुईं, हमने यह प्रयत्न किया कि शान्ति कायम रहे ।

अभी कुछ ही महीनों पहले जब कच्छ के बारे में इस प्रकार की स्थिति बनी थी तो हमारी सरकार ने इसी बात को लक्ष्य में रखते हुए कि आपस की समस्या समझौते के द्वारा हल हो सके, इस बात का भी मुकाबला करते हुए कि इससे गलतफहमियां पैदा हो सकती हैं, लोग-बागों को हमारी नीति के बारे में भ्रम हो सकता है, शान्ति को लक्ष्य में रख कर यह फैसला किया कि कच्छ के विवाद का कोई निष्पक्ष तौर से हल किया जाय । पर ऐसा मालूम होता है कि पाकिस्तान के वर्तमान शासक इस बात पर तुले हुए थे कि किसी न किसी बहाने को लेकर भारत पर आक्रमण किया जाय । कच्छ वाला विवाद पूरा हल भी नहीं हो पाया था, उस विवाद पर कोई कार्यवाही ही नहीं हो पाई थी कि ५ अगस्त को पाकिस्तान ने काश्मीर पर अपने रेडर्स, आक्रामक, भेज कर कार्यवाही की । उनको आशा तो यह थी कि ९ अगस्त के दिन वे काश्मीर में बगावत पैदा कर देंगे, काश्मीर की सरकार को पलट देंगे और शायद श्रीनगर के रेडियो स्टेशन से इस बात का ऐलान कर देंगे कि काश्मीर में हुकूमत पलट गई है और वहां अब उन लोगों की आजाद हुकूमत कायम हो गई है; पर हम सब इस बात को जानते हैं कि वहां की सरकार ने, वहां की जनता ने और हमारी फौज के लोगों ने समय पर कार्यवाही की जिसकी

(श्री मोहनलाल सुखाडिया)
वजह से पाकिस्तान के सारे मनसूबे नाकामयाब हो गये। पाकिस्तान को उम्मीद थी कि काश्मीर में ये व्यक्ति जायेंगे तो शायद बगावत हो जायगी, लोग उनका साथ दे देंगे और इसलिए दुनियां को कह सकेंगे कि काश्मीर की जनता में बगावत हुई है, इसलिये किसी को उसमें हस्तक्षेप करने की जरूरत नहीं है। लेकिन दुनियां में साफ हो गया कि वहां जो हम कहते थे वही स्थिति है।

काश्मीर में बाकायदा चुनाव होते रहे हैं, वहां डेमोक्रेटिक गवर्नमेंट फंक्शन करती है और काश्मीर हिन्दुस्तान का उसी तरह का एक हिस्सा है जिस तरह दूसरे प्रदेश हैं। तो वहां के लोगों ने मौका आने पर इस प्रकार घुसपैठ करने वालों के खिलाफ मुकाबला किया और उन लोगों को बाहर निकालने के अन्दर सहायता दी और ज्यादा कुर्बानी भी दी। लेकिन पाकिस्तान ने जो कुछ कार्यवाही की, हम ऐसा निश्चित् तौर से मान कर चलते हैं कि पाकिस्तान ने यह समझ कर कार्यवाही की कि इस सवाल को सिर्फ काश्मीर का सवाल समझ कर चलाया जाय और पाकिस्तान जो कुछ कर रहा है वह काश्मीर के बारे में कर रहा है, काश्मीर के अन्दर युद्ध चलता रहे, काश्मीर की समस्या भारत की समस्या से अलग है, काश्मीर भारत से अलग है, इस बात को मान कर आगे कार्यवाही की जाय। इस प्रकार का प्रचार, इस प्रकार की बातें उसने और दुनियां के कुछ अखबारों ने भी बराबर फैलाने की कोशिश की और यह कहा कि काश्मीर के बारे में युद्ध हो रहा है, काश्मीर के अन्दर झगडा हो रहा है। लेकिन इस बात को पाकिस्तान भी शायद भूल गया कि हिन्दुस्तान काश्मीर को भारतवर्ष का अंग समझ कर चलता है और काश्मीर पर अगर कोई हमला होता है तो भारत पर हमला होता है। इस बात को समझ कर चलने की जरूरत थी। हमने फिर भी इस बात की कोशिश की कि यह युद्ध व्यापक रूप धारण न करे और जो इन्फिल्ट्रेटर्स आए थे उनको वहां से भगा दिया जाय और जिन दर्रों के जरिये वे आते हैं उन पर कब्जा किया जाय, जिस वजह से वहां युद्ध सीमित रहे। लेकिन पाकिस्तान ने अपनी तरफ से छंब-जोरियां क्षेत्र से आगे बढ़कर बख्तरबन्द गाडियों से अन्तर्राष्ट्रीय सीमा पार कर इस बात की कोशिश की कि जो हमारा संबंध जम्मू से लग कर काश्मीर और पूंछ के साथ जुड़ा हुआ है, उसको सैनिक शक्ति से तोड़ दे और फिर वहां पर हर प्रकार का जुल्म ढा सकें।

मैं समझता हूं कि सारा सदन ही नहीं सारा देश इस बात की प्रशंसा करता है कि जिस प्रकार भारत सरकार ने ठीक समय पर पाकिस्तान के खिलाफ पंजाब, राजस्थान और काश्मीर के क्षेत्रों के अन्दर जवाबी कार्यवाही की, जिससे वह आक्रमण सफल न हो सके, पाकिस्तान के सारे मनसूबे असफल हो गए और समय पर इस कार्यवाही के करने से भारतवर्ष की और साथ साथ काश्मीर की, जो भारतवर्ष का अंग है, समुचित ढंग से रक्षा हो सकी।

हमारी तरफ से, अध्यक्ष महोदय, इस बात का बहुत स्पष्ट रूप से उल्लेख किया गया है कि जहां तक काश्मीर का सवाल है, काश्मीर भारत का पूरी तरह से अंग है, अविभाज्य अंग है और काश्मीर के बारे में

(श्री मोहनलाल सुखाड़िया)

चाहे वह प्लेबीसाइट का सवाल हो, चाहे किसी और बात का सवाल हो, हमने साफ तौर से कह दिया है कि काश्मीर हमेशा के लिए हिन्दुस्तान का हिस्सा है और कोई भी दुनिया की ताकत काश्मीर को हमसे अलग नहीं कर सकती ।

(करतल-ध्वनि)

आज जो युद्ध चला उसके अन्दर जिस तरह से हमारे फौजी भाइयों ने, हमारी हवाई सेना ने और दूसरे लोगों ने, भारत के जन-तन्त्र के लिए, भारत की सेक्यूलरिज्म के लिए, भारत की स्वतन्त्रता के लिए, जिस प्रकार का बलिदान किया है, जिस प्रकार की बहादुरी दिखाई है, भारत के इतिहास के अन्दर हमेशा के लिए वह स्वर्णाक्षरों में लिखी रहेगी ।

अध्यक्ष महोदय, पाकिस्तान ही नहीं, कुछ विदेशी ताकतें भी शायद यह समझ कर चलती थीं कि क्योंकि कच्छ के मामले में, हमने युद्ध करके उनको पीछे नहीं धकेल दिया, क्योंकि चीन की तिब्बत की पहाड़ियों के अन्दर हमारी फौजों पर अचानक हमला हुआ और उनको कुछ इलाकों से पीछे हटना पड़ा, इसलिए वे समझते थे कि हिन्दुस्तान की फौज तो एक कमजोर फौज मालूम होती है । मुझे अच्छी तरह से याद है कि जब कच्छ के अन्दर पाकिस्तान ने हमला किया था तो उसके रेडियो से यह कहा जाता था कि हिन्दुस्तान के बुजदिल सिपाही अपनी जगह छोड़कर पीछे भागते चले जा रहे हैं । लेकिन मैं समझता हूं कि वर्तमान संघर्ष ने इस बात को साफ तौर से जाहिर कर दिया है कि हिन्दुस्तान के सिपाहियों ने किस प्रकार पेटन टैंकों का नाश किया, जिनके बारे में यह समझा जाता था कि ये तो इस प्रकार के टैंक्स हैं कि इनका मुकाबला हिन्दुस्तान कर ही नहीं पाएगा । जिन सेबर जेट्स के बारे में यह समझा जाता था कि हिन्दुस्तान के हवाई जहाज इनका मुकाबला नहीं कर पाएंगें, अब स्पष्ट हो गया है कि उसके पास पेटन टैंक्स ताकतवर थे, सेबरजेट्स ताकतवर थे, लेकिन भारतवर्ष के बहादुर सिपाहियों का दिल और दिमाग जितना मजबूत और साफ था और जितना आगे बढ़ा हुआ था, उसने पास्कितान की इस ताकत को पराजित किया ।

(करतल-ध्वनि)

हमारी थल सेना और वायु सेना के जो लीडर्स हैं, कमाण्डर-इन-चीफ और दूसरे लोग, उन्होंने जिस रण-कौशल का परिचय दिया, उसका हिन्दुस्तान के कमांडर्स को पहला मौका था आजादी के बाद, क्योंकि काफी समय से हम शासित रहे और यही समझते थे कि हिन्दुस्तान के लोग फौजी लड़ाई में नेतृत्व कर सकें वह मुश्किल होगा और यह तो अंग्रेज था जो हिन्दुस्तान के सिपाहियों से काम लेता था । लेकिन जो हमारे फौज के लीडर्स हैं उन्होंने रणकौशल, चातुर्य, और बुद्धिमता से, दृढ़ता से जो मुकाबला किया है वह न सिर्फ हमें बल्कि सारे संसार को चकित कर रहा है कि किस प्रकार से उन्होंने यह काम कर दिया । हमारे सामने इतना लम्बा चौड़ा क्षेत्र है काश्मीर का, पाकिस्तान का, चीन का और तमाम दूसरी जगह सीमा की रक्षा के लिए इन्तजाम करके चलना पड़ता है और जब पाकिस्तान अपनी सारी ताकत से घुस आया तो हमारे बहादुर लोगों ने जो कुछ किया है, मैं समझता हूं

Page No 45

(श्री मोहनलाल सुखाड़िया)

कि उन्होंने हमेशा के लिये हिन्दुस्तान का गौरव दुनियां के अन्दर बढ़ा दिया है, जो समझते थे कि हिन्दुस्तान के व्यक्ति कामजोरी की वजह से शान्ति चाहते हैं। अगर हम शांति की बात करते हैं तो वह इसलिये करते हैं कि दिल से हम चाहते हैं कि दुनियां में अमन रहे, हम दिल से चाहते हैं कि युद्ध न हो, हम दिल से चाहते हैं कि पाकिस्तान और हिन्दुस्तान के बीच संबंध अच्छे रहने चाहिए, लेकिन उसका मतलब यह नहीं था कि हम युद्ध से घबरा कर या डर कर या किसी बुजदिली की वजह से शांति की नीति दुनियां के सामने रखते थे। मैं समझता हूं कि आज दुनियां इस बात का अनुभव करेगी कि हिन्दुस्तान की शांति की नीति के पीछे केवल एक भावना ही नहीं बल्कि एक ताकत भी है और उस ताकत के बाद भी हम कहते हैं कि दुनिया के अन्दर शांति रहनी चाहिए।

हिन्दुस्तान का पाकिस्तान के लोगों से कोई झगड़ा नहीं, लेकिन पाकिस्तान की जो हुकूमत है वह निश्चित तौर से जंगखोर हुकूमत है और चीन और इण्डोनेशिया से मिल कर जंग को बढ़ावा देना चाहती है। दुनियां के नक्शे पर आज चीन, पाकिस्तान और इन्डोनेशिया ये तीनों मुल्क इस बात के अन्दर लगे हुए हैं कि दुनियां में शांति नहीं होनी चाहिये, अमन नहीं रहना चाहिये। ये तीनों मिल कर ख्वाब देखते हैं कि ये एशिया में छा जायें और आपस में बांट लें। लेकिन यह निश्चित बात है कि हिन्दुस्तान जिसकी वीरता का इतना इतिहास है; इतिहास ही नहीं, आज के दिन उस इतिहास को सच्चा करके बताया है कि किस प्रकार हम कर्त्तव्य को पूरा कर सकते हैं, वह चीन, पाकिस्तान और इन्डोनेशिया के मनसूबों को हरगिंज पूरा नहीं होने देगा। हम नहीं चाहते कि पाकिस्तान या इण्डोनेशिया पर कब्जा करें या चीन की धरती खा जायं लेकिन हम इस बात को हरगिंज बरदाश्त नहीं करेंगे कि इस देश को ताकत से या धमकी से दबा कर हमारी स्वतन्त्रता पर कोई आक्रमण करना चाहता है तो यह देश पूरी ताकत से उसका जवाब देगा, चीन की ताकत से घबराने वाला नहीं।

(करतल-ध्वनि)

और किसी की ताकत से घबराने वाले नहीं हैं। लेकिन यह निश्चित बात है, अध्यक्ष महोदय, मैं समझता हूं कि काश्मीर पर हमला करने के बाद हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के बीच में जो स्थिति खड़ी हुई है और जिसको एक लम्बे अर्से से कह कर चल रहे थे कि पाकिस्तान, अमेरिका और दूसरे देशों से जो फौजी सहायता ले रहा है इस नाम से कि वह साम्यवाद के खिलाफ लड़ने के लिये सहायता ले रहा था, हमने वक्त वक्त पर इस बात को कहा है कि पाकिस्तान का साम्यवाद से लड़ने का इतना इरादा नहीं है जितना पाकिस्तान अपनी ताकत हिन्दुस्तान के खिलाफ काम में लेने के लिये इकट्ठा कर रहा है। हम इस बात को कहते थे अमेरिका, इंगलैण्ड और उसके दूसरे मित्र देशों से भी लेकिन हमारी बात को यह समझ कर छोड़दी कि शायद हम पाकिस्तान को मदद न मिले और हिन्दुस्तान की ताकत बढ़ जाय इसलिये कहीं नाटो की समस्या उनके सामने आती थी, कहीं सीटो उनके सामने आता था, कहीं एक दूसरी जगह पर अड्डे कायम किये जाते थे यह समझ कर कि पाकिस्तान तो

श्री मोहनलाल सुखाड़िया)

अन्तर्राष्ट्रीय साम्यवाद का मुकाबला करने के लिये दूसरे का मित्र बना हुआ है वह उनकी भ्रामकता थी और एक नीति थी, इस संघर्ष ने उसको दुनियां के सामने बहुत साफ लाकर रख दिया है ।

अध्यक्ष महोदय, आज सुबह ही रेडियो पर, जैसा कि मालूम हुआ है, यू० ए० आर० काहिरा का समाचार था कि जब पाकिस्तान और हिन्दुस्तान के बीच संघर्ष चल रहा था पाकिस्तान का मिलिट्री मिशन चीन के अन्दर जाता है, उनसे बातचीत करता है और उसके बाद कौन दुनियां में इस बात को नहीं जानता कि चीन की इस थोथी दलील को कि हमने उनकी सीमा में जाकर कुछ मोर्चे कायम कर दिये हैं हम उनको आकर तोड़े, ७२ घंटे का नोटिस और फिर ७२ घंटे का नोटिस । दुनियां उस बात को अच्छी तरह से समझती है कि चीन का एक ही इरादा था कि पाकिस्तान यू० एन० ओ० में सीज फायर के बारे में प्रस्ताव पास किया जाय उसको न माने और यह समझ कर चले कि उसकी मदद पर चीन आने वाला है, वह लड़ता रहे, युद्ध का विस्तार हो, ज्यादा समय तक चले और दुनिया युद्ध में फंसे और व्यापक स्वरूप उसका बने ।

अध्यक्ष महोदय, यू. एन. ओ. ने एक प्रस्ताव पारित किया उसके पहले हमने इस बात को भी देखा कि जब यहां से भुट्टो अमेरिका पहुंचे तो उनके पहुंचने के पहले, यह निश्चित मालूम होता है यू.एन.ओ. को बाद में बताया गया और चीन को पहले ही कह दिया होगा कि हम सीज फायर को मानने वाले हैं इसलिये चीन ने एक रात पहले ही कहा कि हिन्दुस्तान उन मोर्चों को तोड़ कर वापस चला गया है । यह साफ बात है कि सीज फायर आपस में कराये जाने वाली है चीन ने यह समझ कर कि पाकिस्तान आगे लड़ता दिखाई देता नहीं उसने अल्टीमेटम वाली बात पर किसी तरह से पर्दा डालने के लिये एक रात पहले ही यह बात कह दी और भुट्टो साहब ने दूसरे दिन कही ।

युद्ध तो बन्द हो गया जहां सीमाओं पर आपस में गोलियां चलती थीं । या एक तरह से कहा जाय, जैसा चव्हान साहब ने कहा उस बात को खयाल में रखकर, एक तरह से युद्ध बन्दी का ऐलान तो हो गया है लेकिन अध्यक्ष महोदय, भुट्टो साहब ने धमकी दी है और चीन का पीकिंग रेडियो साफ तौर से कहता है कि सीज फायर को मान कर न चला जाय, यू. एन. ओ. छोड़ने की बात पाकिस्तान की ओर से कही जाती है, कश्मीर के मामले के लिये अयूब साहब जो राष्ट्रपति हैं यह कहते हैं कि अगर इस सवाल को ठीक तरह से हल नहीं किया गया तो जो कुछ हुआ उससे भयानक युद्ध होगा और व्यापक रूप से दुनियां उसमें उलझ जावेगी । मैं समझता हूं, ये चीजें बहुत स्पष्ट संकेत देने वाली हैं, किस तरह पाकिस्तान इसको आगे लेजाना चाहता है, किस तरह चीन आगे ले जाना चाहता है । इन बातों से यह भी शंका होती है, हो सकती है कि पाकिस्तान और चीन को यह उम्मीद नहीं होगी कि हिन्दुस्तान कश्मीर के मामले में पाकिस्तान के आक्रमण के कारण वह पंजाब और दूसरे क्षेत्रों में आक्रमण कर देगा और इस वजह से उनका समय आगे बढ़ाने का इरादा हो, आपस में मिल जुल कर कोई कार्यवाही करने की साजिश की हो, क्या इसके पीछे होगा इसके लिये तो हिन्दुस्तान को सतर्क रह कर देखना होगा लेकिन जो बातें उनकी तरफ से कही जारही हैं, जो बातें सामने

(श्री मोहनलाल सुखाड़िया)

आ रही है, मैं समझता हूं, हम सब के लिये सदैव यह समझते रहते हुए चलना होगा कि किसी भी समय यह आग भड़क सकती है क्योंकि पाकिस्तान जिसको इस बात का जबरदस्त जीम था कि वह ताकत से काश्मीर के प्रश्न को हल करेगा, भुट्टो साहब कहते थे हजार वर्ष तक लड़ना पड़ेगा तो लड़ेंगे लकिन काश्मीर वापिस लेंगे। एक तरफ उनका यह अल्टीमेटम है। दूसरी तरफ हमने भी साफ तौर से यह ऐलान किया है कि चाहे कुछ भी हो जाय काश्मीर हिन्दुस्तान से अलग होने वाला नहीं है।

(करतल–ध्वनि)

अध्यक्ष महोदय, जिस सवाल को लेकर पाकिस्तान ने पहले हमला किया आज भी उस बात को लेकर चलता है। जो नीति उसने पहले कायम की थी उसी नीति पर आज भी कायम है। जो आज हालत हैं और जो बातें कही जाती हैं वे निश्चित रूप से हम लोगों के लिये एक चेतावनी के रूप में हैं। जो कुछ भी होता है, मैं समझता हूं हिन्दुस्तान की धरती पर सैंकड़ों वर्षों के बाद यह पहला मौका था जब हमारी धरती पर हवाई जहाजों से बम्ब व रोकेट्स गिरे और भी चीजें हुई और हमारी फौजों ने आगे जाकर आक्रमण किया। यह भी हमारे इतिहास की अभूतपूर्व घटना है कि हमारी फौजों ने आगे जाकर आक्रमण किया देश की हिफाजत के लिये; किसी देश को जीतने के लिये नहीं किन्तु अपने इस देश की हिफाजत के लिये। जो कुछ हमने कार्यवाही की, आज देश के विभिन्न विचार रखने वाले लोगों में जो एकता है, लोगों का जो मनोबल है, लोगों के मन में देश की अखंडता, उसकी सार्वभौमिकता, देश में जनतन्त्र और उसके साथ सैकुलरिज्म, उनको कायम करने के लिये देश ने जो इस मौके पर सक्रिय रूप से कार्य करके दिखाया है, मैं समझता हूं, यह बहुत बढ़ी शक्ति देश को मिली है और दुनिया भी समझने लगी कि भारतवर्ष वक्त आने पर डेमोक्रेसी में जहां आपस में झगड़े चल रहे हों, मत-भेद चलते रहे हों, लेकिन जब देश पर संकट आकर खड़ा होता है, तो सारा देश एक ही आवाज से खड़ा होता है, जैसा कि उसने चीन के आक्रमण के समय और आज पाकिस्तान के आक्रमण के समय भी करके बता दिया कि हम सब एक होकर खड़े हैं।

अध्यक्ष महोदय, काश्मीर के मामले में पाकिस्तान का मजहब के नाम पर एक दावा पेश किया गया। आज दुनिया इस बात को जानती है कि हिन्दुस्तान में जितने लोग रहते हैं, अलग अलग मजहब, उसूलों को मानने वाले लोग रहते हैं, हम हिन्दुस्तान में सैकुलरिज्म की नीति मानकर चलते हैं, मैं समझता हूं, कि काश्मीर के मामले में जो भी सवाल उठते हों, दुनिया के जितने भी मुल्क काश्मीर के मामले को और तरह से सोचते हों उनको अच्छी तरह से सोच कर चलना चाहिये कि हिन्दुस्तान में डेमोक्रेसी का ही सवाल नहीं है, सैकुलरिज्म को स्थायी तौर से कायम रखना है। ताकत का भी सवाल उसके साथ जुड़ा हुआ है।

(करतल ध्वनि)

यह संघर्ष कई उसूलों का है। कई उसूल इसके साथ जुड़े हुये हैं। एक तरफ पाकिस्तान का मिलिट्रीट अधिनायकवाद, दूसरी तरफ चीन की डिक्टेटरशिप, इन्डोनेशिया का अधिनायकवाद। यह जाग्रत एशिया और अफ्रिका में छा जाना चाहते हैं, चारों तरफ से उनकी तरफ से घेरा डाला जा रहा है ताकि, मैं समझता

(श्री मोहनलाल सुखाडिया)
हूं, जो जनतन्त्र के मानने वाले देश हैं, फ्री डेमोक्रेसी में जिनका विश्वास है, जो नॉनएलॉइनमेन्ट को मानने वाले देश हैं, जो देश इस बात को मानते हैं कि चाहे अलग अलग आपस में विचारधारा हों लेकिन उनके बीच में एक को एग्जिस्टेन्स आवश्यक है, उन सब के इस बात को सोचने का प्रश्न हो जाता है। भारतवर्ष आज संघर्ष कर रहा है वह संसार में अलग अलग विचार-धाराओं वाले मुल्कों में आपस में को एग्जिस्टेन्स के लिये कर रहा है, जनतन्त्र की रक्षा के लिये कर रहा है, यह अपनी आजादी की भी लड़ाई लड़ रहा है, और जैसा मैंने निवेदन किया हिन्दुस्तान आज सैकुलरिज्म के लिये भी लड़ाई लड़ रहा है।

(१२.०० मध्यान्ह)

तो ऐसे महत्वपूर्ण सवाल के ऊपर आज दुनियां में और कुछ मुल्कों में मुगालता है। कुछ डिप्लोमेसी के कारण इधर-उधर करते हैं। अब वक्त आ गया है आज दुनियां के देशों को यह सोच-विचार करके चलना होगा कि इस संघर्ष के पीछे आक्रामक कौन था? इस बारे में दुनियां को साफ कहना चाहिये। दुनियां को यह समझ कर चलना चाहिये कि हिन्दुस्तान जिन सिद्धान्तों को लेकर चल रहा है उन सिद्धान्तों के अनुसार एक्सपीडियेन्सी के लिहाज से या और कारणों से ऊपर होकर निर्णय करना है। दुनियां के मुल्क आज यह अनुभव करने लगे हैं और समय आने पर और भी यह चीज स्पष्ट होती जायेंगी; चीन का इरादा क्या है? आज उसका इरादा यह है कि वह दुनियां के ऊपर छा जाय, पहले एशिया पर छा जाय और फिर दूसरी जगहों पर बढ़ता हुआ वह यह चाहता है कि दुनिया के अन्दर जो जनतन्त्र आगे बढ रहा है वह बढने नहीं पाये। लेकिन इसके साथ २ दुनिया को यह भी पता लगने लगा है कि छोटे-बड़े देशों की आजादी को कायम रखना है, लोगों को प्रजातन्त्रीय सरकारों में आस्था हो तो उसके लिये भारतवर्ष ही एक ऐसी शक्ति है, जो दुनिया के अन्दर सही मायने में इस प्रकार की व्यवस्था होने देने की शक्ति रखता है। हिन्दुस्तान जितना ताकतवर बनता है, जितनी शक्ति वह प्राप्त करता है उतनी ही संसार में शांति कायम रह सकती है।

अध्यक्ष महोदय, इस संघर्ष ने निश्चित तौर से यह हमें बतला दिया है कि हमारी आर्थिक विकास की योजनायें आवश्यक हैं; जिन योजनाओं के जरिये उत्पादन होता है, दूसरी आर्थिक शक्ति बढती है वह आवश्यक है लेकिन इसके साथ साथ इस बात की भी आवश्यकता है और हमने स्पष्ट कहा है कि चौथी पंचवर्षीय योजना के अन्दर खेती के उत्पादन बढे और उत्पादन हो लेकिन इनके अलावा हमको सोशियल एमेनिटीज छोड़नी पड़ेंगी, सोशियल एमेनिटीज को कुछ अर्से के लिये छोड़ दें और उसके बजाय हमें अपने देश की फौजी ताकत बढ़ानी चाहिये। ताकि इस बात का [illegible] को मौका नहीं मिल सके कि हम जाकर हिन्दुस्तान पर हमला कर सकते हैं। दूसरे लोग जो हमारे मित्र हैं वे हमें मदद दें वह हमें स्वीकार है, लेकिन सच्ची शक्ति के लिये, सच्चे लक्ष्य के लिये आत्म निर्भर होना परमावश्यक है; सेना की दृष्टि से, खाद्य की दृष्टि से और ख्यालों से भी। हम दूसरों पर अब निर्भर नहीं रह सकते और न रहना चाहते हैं ताकि वे लोग यह न समझें

(श्री मोहनलाल सुखाड़िया)

कि वे हमारे पर ही निर्भर हैं। इस संघर्ष ने दुनिया को यह तो बता दिया है और पाकिस्तान के लोग भी यह कहने लगे हैं हिन्दुस्तान तो ८० प्रतिशत चीजें अपने यहां बनाता है, हमें तो हर चीज बाहर से मंगानी पड़ती है, अगर मदद में कमी हो जायगी तो दिक्कत हो जायगी। हम आज जो ८० प्रतिशत ही युद्ध में प्रयुक्त होने वाली सामग्री बनाते हैं हम चाहते हैं हिन्दुस्तान शत-प्रतिशत चीजें यहीं पर पैदा करे, मोटर कारों का निर्माण न हो तो कोई बात नहीं उनके स्थान पर टैंक पैदा हों और और चीजें पैदा हों। हमारे देश में मानवीय ताकत है, उसके साथ साथ वीरता और कुर्बानी करने की क्षमता हमारे यहां के लोगों में है, लेकिन आज के इस विज्ञान के युग में आवश्यकता होती है शस्त्रों की, टूल्स की, जिनके जरिये हम शत्रु का मुकाबला कर सकें।

अध्यक्ष महोदय, हमने इस बात को इस मौके पर देखा कि जो हमारे पास टूल्स थे उन्हीं टूल्स से जिस प्रकार के करिश्मे हमारे जवानों ने बताये हैं उससे आज सारा संसार चकित है। अध्यक्ष महोदय, मैं समझता हूं इस हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के संघर्ष में हमारे देश की सीमाओं पर दबाव पड़ा उसमें पंजाब पर सबसे ज्यादा पड़ा, काश्मीर पर पड़ा और हमें इस बात की खुशी है कि राजस्थान को भी अपने हिस्से की कुर्बानी देने का मौका मिला और गुजरात पर भी इसका असर पड़ा। अध्यक्ष महोदय, इस मौके पर देश की सीमाओं की रक्षा के लिये हमारे देश के सिपाहियों और अफसरों ने जिस बहादुरी और साहस का परिचय दिया है उसमें यह बात बहुत महत्वपूर्ण है कि हमारे फौज के जवानों के साथ साथ जब हम रेडियो पर यह सुनते थे कि जितने जवान हताहत हुए हमारे अफसरों के हताहत होने की तादाद पाकिस्तानी अफसरों से ज्यादा है इससे जाहिर होता है कि हमारे अफसर जवानों के साथ साथ आगे बढ़े हैं। इससे हमारे अफसर ज्यादा संख्या में वीरगति को प्राप्त हुए। इससे हमारे देश के उच्च करेक्टर का आभास मिलता है। हमारे हवाई जहाजों के चालकों ने जिस प्रकार सरगोदा आदि शत्रु के अड्डों पर जिस साहस के साथ प्रहार किये वे इतिहास के उदाहरण बन गये हैं। गांव-गांव तक उनकी बहादुरी की गाथायें पहुंच गई। हर व्यक्ति की जबान पर उनके साहस और शौर्य की प्रशंसा सुनने को मिलती है।

राजस्थान के अन्दर, अध्यक्ष महोदय, जोधपुर शहर और उसके आस-पास का इलाका—बाड़मेर, गडरा रोड, गंगानगर का इलाका, जैसलमेर का इलाका और बीकानेर की कुछ सीमा के अन्दर पाकिस्तान के मुजाहिद, पाक रेन्जर्स और उनके साथ मिले-जुले मिलिट्री के लोगों ने आकर हमारी सीमा के गांवों पर आक्रमण किया। मुझे इस बात की खुशी होती है और मैं इस बात की प्रशंसा करना चाहता हूं कि हमारी आर्म्ड फोर्सेस ने, आर० ए० सी० के लोग जो वहां पर थे, उन्होंने हिम्मत और हौसले के साथ अपना कर्तव्य अदा किया उसमें कुछ लोग वीरगति को प्राप्त हुए। इसी प्रकार, अध्यक्ष महोदय, हमारी युनिवर्सिटी के और कॉलेज के छात्रों ने जो एन० सी० सी० में काम करते हैं होम गार्ड में काम करते हैं, सिविल डिफेन्स में काम करते हैं, उन

(श्री मोहनलाल सुखाड़िया)

लोगों ने भी जिस अनुशासन और साहस का परिचय दिया वह भी प्रशंसनीय है। इसके साथ साथ जोधपुर में जब रात को बम पड़ते थे लेकिन एन० सी० सी० के छात्रों ने, होम गार्डस् ने, सिविल डिफेन्स में काम करने वालों ने जिस प्रकार से अपना कर्तव्य सतर्कता पूर्वक निभाया उसकी हम सराहना करते हैं। इस मौके पर, अध्यक्ष महोदय, चारों तरफ सीमाओं पर हमारे जो सिविल सर्वेन्ट्स हैं और दूसरे हैं उन्होंने जिस साहस और तत्परता का परिचय दिया मैं उनकी सराहना किये बिना नहीं रह सकता।

अन्त में, अध्यक्ष महोदय, मैं यह कहना चाहूंगा कि युद्ध विराम की घोषणा तो हो चुकी लेकिन हमें पूर्ण रूप से सतर्क होकर चलना होगा। आज हम यह नहीं चाहते कि विश्व शांति को खतरा पैदा हो और हमारे और पाकिस्तान के बीच में संघर्ष खड़ा हो।

काश्मीर के बारे में निश्चित तौर से हमारे प्रधान मंत्री ने साफ कह दिया है कि काश्मीर का जहां तक सवाल है, वह भारतवर्ष का अखण्ड और अविभाज्य अंग है, वही बात हमारे सामने है।

इस बात को लेकर कोई भी प्रश्न अगर हमारे सन्मुख खड़ा होता है तो मैं समझता हूं आज से अधिक बलिदान और साहस के लिये हमें तत्पर रहना है। आज हमारे सन्मुख यह वस्तु-स्थिति है।

मैं आज इस बात को कहे बिना भी नहीं रह सकता कि जिस प्रकार हमारे प्रधान मंत्री, श्री लालबहादुरजी शास्त्री ने इन कठिनाइयों से भरे हुए और काफी उलझे हुए हालतों में जिस स्थिरता और साहसपूर्ण बुद्धिकौशल के साथ देश का नेतृत्व किया है सारा देश उसके लिये उनकी हृदय से सराहना कर रहा है।

इन्हीं शब्दों के साथ मैं सदन के समक्ष इस प्रस्ताव को प्रस्तुत करता हूं और मैं यह भी निवेदन करना चाहता हूं कि सभी माननीय सदस्य इस बात से सहमत होंगे और मैं अपनी तरफ से भी और इस सदन की तरफ से भी उन साहसी सैनिकों को, अफसरों को और उन व्यक्तियों को जो मोर्चे पर अलग-अलग सीमाओं पर काम करते हुए दुश्मन का मुकाबला करते हुए वीरगति को प्राप्त हुए हैं उनको मैं अपनी तरफ से हृदय से श्रद्धांजली अर्पित करता हूं। जय हिन्द।

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल (जोहरी बाजार जयपुर) : The resolution be taken as moved.

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्यों ने मुख्य मंत्रीजी के भाषण को सुना। जो संकल्प प्रस्तुत किया गया है, उसकी प्रतिलिपियां पहले से ही वितरित कर दी गई हैं। इस संकल्प में कई बातों का उल्लेख है, परन्तु मुख्य रूप से हमारे वीर सैनिकों ने जो हमारे देश की रक्षा के लिये वीरता और साहस का परिचय देते हुए अपने प्राणों की आहूतियां दी हैं उसका इसमें उल्लेख है। इस संकल्प पर बहस आगे बढ़े इससे पहले मैं माननीय सदस्यों से निवेदन करूंगा कि हम उनके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिये दो मिनट मौन खड़े होकर इसमें अपना योगदान दें।

(तदनन्तर सदन दो मिनट मौन खड़ा हुआ)

Page No 51

(१२. १५ म. प.)

महारावल श्री लक्ष्मणसिंह (ग्रासपुर) : अध्यक्ष महोदय, हमारे देश में जब यह संकट-कालीन स्थिति उत्पन्न हुई उस समय देश के अन्दर जो एक फ़िज़ा पैदा हुई, यह एक अभूतपूर्व प्रेरणादायक थी । क्या पुरुष, क्या नर, क्या बच्चा और क्या बूढ़ा–इस महान् और विशाल देश के समस्त नागरिक-एक मत और एक भावना होकर दृढ़ संकल्पी हो गये कि हमारी मातृभूमि की हम हर कीमत पर रक्षा करेंगे और जीवन की जो सबसे मूल्यवान वस्तु है, उन प्राणों तक की बाजी लगा देंगे; प्राण तक उत्सर्ग कर देंगे । यह प्रदर्शन एक बड़ा उत्साहप्रद प्रदर्शन था कि जिसके द्वारा यह हमारा भारतवर्ष पूर्णतया एक प्रस्फुटित राष्ट्र के रूप में सारे विश्व की नजर में आया । इससे सारे विश्व में हमारे जनतंत्र की प्रतिष्ठा बढ़ी । एशिया भर के अन्दर जनतन्त्रवाद की दुहाई और प्रेरणा देने वाला यह एक महान देश जो है, उसकी प्रतिष्ठा एशिया भर में और विश्व भर में ही नहीं बढ़ी, अपितु उस प्रदर्शन के द्वारा शत्रु के हौसले भी पस्त हो गये, चाहे वह हमारा शत्रु पूर्व का हो, चाहे पश्चिम का ।

अध्यक्ष महोदय, हमारे देश पर संकटकालीन स्थिति सन् १९६२ में भी आई । उस समय शायद हम तैयार नहीं थे । किन्तु हमारे देश के समस्त नागरिकों ने तब भी ऐसा ही प्रदर्शन किया था जैसा आज किया । शत्रु अगर एक विशाल देश की सीमा पर बिना कोई नोटिस के आक्रमण करता है तो मेरे ख्याल से यह कोई असम्भव चीज नहीं है कि कुछ दिन के लिये वे सफलता प्राप्त कर लें । किन्तु चीन अगर कुछ देर तक और घुसपैठ की और आक्रामक नीति अपनाता तो उस वक्त भी, मुझे विश्वास था, हम उसका मुकाबला बराबर कर सकते थे । किन्तु यह नहीं होने के कारण और चीन के पीछे हट जाने के कारण ३ अन्तर्राष्ट्रीय कारणों के द्वारा यह बात दुनिया के कुछ लोगों के दिमाग में, इस देश के लोगों के दिमाग में नहीं, कुछ देश के नागरिकों के दिमाग में यह बात बैठ गई कि भारतवर्ष आक्रमण को सहन करने की क्षमता नहीं रखता है । यह एक कमजोर राष्ट्र है और शायद इसमें आक्रमणात्मक भावना का माद्दा नहीं है आदि, आदि ।

इस विवाद में पाकिस्तान जो हमेशा से लोलुपता की दृष्टि काश्मीर पर डाले हुए था उसने मौका पाकर और काश्मीर के अन्दर इन्फिल्ट्रेटर्स के द्वारा, घुसपैठियों के द्वारा एक ऐसी योजना, एक ऐसी साजिश की कि जिस के द्वारा एक बहुत ही वैधानिक रूप से स्थापित सरकार का तख्ता उलट दिया जावे और काश्मीर को हस्तगत कर लिया जावे ।

अध्यक्ष महोदय, काश्मीर भारत का अभिन्न अंग है । बहुत सी छोटी बड़ी रियासतें जब यह निर्णय ले चुकी थीं कि अमुक रियासत पाकिस्तान में जावे और अधिकांश रियासतें भारतवर्ष के संघ के अन्दर सम्मिलित हों उस वक्त भारतवर्ष ने वैधानिक दृष्टिकोण से काश्मीर का एक एक्सेशन प्राप्त कर लिया, उस एक्सेशन के द्वारा काश्मीर भारतवर्ष का अविभाज्य अंग हो गया है । अब यदि काश्मीर पर कोई भी आक्रमण आक्रान्ता करता है तो वह सारे देश पर आक्रमण है और इस आक्रमण का मुकाबला जिस तत्परता से, जिस साहस और दिलेरी के साथ, जिस दृढ़ता के साथ हमने किया है उसके लिये मैं समझता हूं कि काश्मीर के नागरिक और

Page No 52

(महारावल श्री लक्ष्मणसिंह)
काश्मीर की सरकार सर्व-प्रथम बधाई की पात्र है ।

(करतल-ध्वनि)

हमारी फौजें, हमारी आर्मी, पुलिस, कॉन्स्टेबुलरी पुलिस ने जिस दृढ़ता और तत्परता के साथ अपने कर्तव्य का पालन किया है वह मेरे ख्याल से एक ऐतिहासिक और उच्च कोटि का उदाहरण है। आज हमारी फौजें और हमारे जवानों ने हमारे मनों के अन्दर एक ऐसा ऊंचा स्थान प्राप्त कर लिया है कि जिसके लिये मैं कोई शब्द अपने पास नहीं पाता अपने हृदय के उद्‌गारों को प्रकट कर सकने के लिये ।

इसमें कोई संदेह नहीं, अध्यक्ष महोदय, कि पाकिस्तान के पास टैंक्स थे, आधुनिकतम थे, इसमें कोई शक नहीं कि पाकिस्तान के पास आधुनिकतम हवाई जहाज थे और यह सबको मालूम था, दूसरे राष्ट्रों को और हमारी सरकार को भी कि आर्मरी के लिहाज से और हवाई सेना के लिहाज से हम शायद पाकिस्तान के मुकाबले में न हो सकें। लेकिन बी.बी.सी. की खबरों से, हमारे समाचार-पत्रों से पाकिस्तान ने जो कुछ बात कही है उसके अनुसार यह निर्विवाद बात है कि मेरी मान्यता में कम से कम हमारी इण्डियन आर्मी ने पाकिस्तान के पैटन टैंकों की तीन रेजोमेन्टों को फना, बिस्मार और खत्म कर दिया ।

अध्यक्ष महोदय, ३ टैंकों के रेजीमेन्ट्स को खत्म करना एक हंसी या मजाक का सवाल नहीं है और वह किस तरह से किया, हमने उसी तरह से किया कि जिस तरह से पाकिस्तान सोचता था कि मिनटों में इण्डियन आर्मी गाजर और मूली की तरह तोड़ दी जायेगी उसी तरह से हमारी फौज ने भी यह पूर्ववत निर्धारण करके, निश्चित कर लिया था कि पाकिस्तान की फौज के टैंकों को उनकी आखों, के अन्दर हमारे तोपची और हमारे गोलन्दाज उनकी आखों के अन्दर गोली का निशाना बनाकर उनके टैंकों को तितर-बितर करके और टुकड़े-टुकड़े करके फेंक देंगे ।

अध्यक्ष महोदय, हवाई जहाजों का भी यही किस्सा है । हम यह मानने को तैयार हैं कि उनके पास हवाई जहाज, वायुयान, विशेष आधुनिक रूढ़ि के थे और मुकाबलतन, मेरे ख्याल से कुछ हद तक, हमसे कुछ विशेष भी थे, लेकिन पाकिस्तानी हवाई बेड़े को मुंह की खानी पड़ी और वे जो अनुमान करते थे उससे कुछ भी नहीं हुआ ।

जब वे काश्मीर के अन्दर बिल्कुल परेशान हो गये तो उन्होंने एक नया रास्ता अपनाया और वह नया रास्ता जो अपनाया वह अन्तर-राष्ट्रीय कानून और सभ्यता के सिद्धान्तों के बिल्कुल विपरीत होकर हमारे इन्टरनेशनल बोर्डर के ऊपर छम्ब के अन्दर उन्होंने पेनीट्रेशन किया । हमने उसका जवाब ईंट को जगह पत्थरों से दिया । हम यदि उस तरह से जवाब नहीं देते और अगर हम इस पशोपेश में बैठे रहते कि आज इन्डोनेशिया क्या कहेगा, आज यू०ए०आर० और अरब राष्ट्र को खुश रखने के लिये इन्टरनेशनल ओपीनियन से हमको चलना है, तो हम दीन के और दुनिया के नहीं रहते । लेकिन हमने दृढ़ता और आत्म-विश्वास जो प्रकट किया, उस दृढ़ता और आत्म-विश्वास, जो सरकार का था उस आत्म-विश्वास और दृढ़ता का समर्थन भारतवर्ष के बच्चे-बच्चे ने किया और परिणाम

Page No 53

(महारावल श्री लक्ष्मणसिंह)

दिया जिसके द्वारा हमारी सेना के हौसले इतने हद तक बढ़ गए कि उनको पूर्ण विश्वास हो गया कि दिल खोलकर निश्चित् रूप से वह लड़ सकते हैं, सारा देश उनके साथ है।

अध्यक्ष महोदय, हम किसी से लड़ाई मोल लेना नहीं चाहते। हमारा सिद्धान्त शांति का सिद्धान्त है। हम शांति के प्रतीक रहे लेकिन वह शांति कायरता की शांति नहीं है यह भी हमने सारे विश्व को बता दिया। वह शांति वीरता की है, वह शांति एक सिद्धान्त को लेकर है और अगर हमारी शांति भंग करने के लिये और हमारी सीमा का खंडन करने के लिये कोई शांति भंग करता है तो हम शांतिमय उपायों को छोड़कर युद्ध यों करेंगे कि पुनर्स्थापित हम शीघ्रातिशीघ्र शांति कर पायें। हमारा जो संघर्ष पाकिस्तान से था वह सिद्धान्ततः शांति का संघर्ष था, आवश्यक संघर्ष था और जो भी हुआ, मैं समझता हूं कि यह भविष्य के लिये हमारे लिए हितकर ही होगा, यह मुझे विश्वास है। किन्तु हमें कभी भी हमारी दृढ़ता को नहीं छोड़ना चाहिए। विश्वास के अभिमत यूनाइटेड नेशन्स, संयुक्त राष्ट्र संस्था के निर्णयों को आदर की दृष्टि से हम देखें किन्तु हम इस सिद्धान्त को अपना करके चलें कि आप भला तो जग भला, जो हमारे लिए हितकर है वह सर्व प्रथम है और दूसरी बातें गौण रखते हुए अगर हम दृढ़ता के रूप से भविष्य में इस काश्मीर की समस्या का हल निकाल पायेंगे तो मेरे खयाल से, मुझे विश्वास है अपने अपने लक्ष्य को प्राप्त करके पाकिस्तान का हौसला सदा के लिये पस्त कर सकेंगे।

पर मैं यह कहे बिना नहीं रह सकता कि सन् ४७ और ४८ में यह काश्मीर की समस्या उत्पन्न हुई और काश्मीर की समस्या जो आज उत्पन्न हुई उन दोनों के बीच में एक क्लोज़ एफीनिटी, एक समानता है। इस समस्या का हल उस समय हम आसानी से निकाल सकते थे, यह मेरी मान्यता है। किन्तु कई कारणवश शायद सरदार वल्लभ भाई पटेल को उस वक्त छूट सरकार की ओर से नहीं मिली हो कि वे अपने इरादों को पूरा कर सकें उसके फलस्वरूप यह समस्या जितनी खटास में पड़ती गई उतनी ही विषमता धारण करती गई और जब पाकिस्तान ने यह देखा कि वह हथियारबन्द लैस हो चुका है, अमेरिका से उसने कई गलत बातों से भरमा-भरमा करके ये हथियार प्राप्त किए, साम्यवादी देशों के विरुद्ध लड़ने की बातें करके हमेशा, लेकिन हमेशा पाकिस्तान के दिल में एक ही लक्ष्य, एक ही ध्येय था और वह ध्येय यह था कि येन-केन-प्रकारेण वह काश्मीर को प्राप्त करे। हम अभी कच्छ की समस्या लेकर उलझे हुए थे। कच्छ की समस्या भी एक ऐसी समस्या है कि अगर रात को कोई भी सद्-गृहस्थ सोता हुआ है तो उसके घर में कोई चोरी-छिपे सामान ले जाये, कोई बर्तन ले जाये, तो इस तरह का कोई एक्शन माना जा सकता है। पाकिस्तान को क्विक एक्शन के जरिये से हमारी सीमाओं में दाखिल होकर भी विदड्रॉ होना पड़ा। उसी उदाहरण को लेकर यह काश्मीर के इश्यू को फोर्स करने के हेतु यहां पर कोई न कोई नतीजा प्राप्त करने के हेतु जो उसने प्रतिक्रिया की है उसका सबक अच्छी तरह से उसको मिल चुका है। यह देश का विश्वास नहीं है लेकिन यह अन्तर्राष्ट्रीय अभिमत भी है। उसको अब मेरे ख्याल से टैंक्स नहीं मिलेंगे लेकिन उसकी डिप्लोमेसी है

Page No 54

(महारावल श्री लक्ष्मणसिंह)

वह चीन को आनायेगा, संभवत: सिएटो नाटो अलाइन्स के द्वारा ईराक, टर्की से वह हथियार प्राप्त कर सकेगा और छुपे-चोरी वह अपने आपको सशस्त्र बना सकेगा ।

अध्यक्ष महोदय, कहा है, "Constant vigilance is the price of liberty." तो हमको इस सिद्धान्त के अनुसार निरन्तर सतर्क रहना है । निरन्तर सतर्कता ही स्वतन्त्रता का दाम है और इस लक्ष्य को ले करके हम सतर्क बराबर बने रहेंगे । यह मेरे ख्याल में सरकार को भी एक उच्च कोटि का लेसन, शिक्षा मिली है कि जिसके द्वारा हम अपने भविष्य का निर्माण कर सकें ।

अध्यक्ष महोदय, हमारा शत्रु एक नहीं । हम विश्वास करते थे कि शायद भारतवर्ष के कोई शत्रु नहीं हैं, लेकिन हमारे अशुभचिंतक इस विश्व के अन्दर एक से अधिक हैं । आज चीन महत्वाकांक्षी है । आज चीन का सिद्धान्त साम्यवाद के अलावा विस्तारवाद का है और उसके पास आज अणु शक्ति है । यह विज्ञान का युग है और इस अणु युग के अन्दर आज चीन का एटम बम्ब दो वर्ष या तीन वर्ष के बाद क्या रूप या क्या शक्ति धारण करे इसकी मेरे ख्याल में हम कल्पना भी नहीं कर सकते । अध्यक्ष महोदय, आज जो हमारे एशिया की शक्ल है, जो दृष्टि, जो नजारा एशिया का दृष्टिगोचर हो रहा है वह तीस वर्ष पहले आज से यूरोप का भी था । सन् १९३५ में दो तानाशाह यूरोप के कॉन्टीनेंट के अन्दर पैदा हुए--एक हिटलर और एक मुसोलिनी । हिटलर उत्तर में था और मुसोलिनी दक्षिण में था । मुसोलिनी जो विंस्टन चर्चिल के शब्दों में एक 'fattered lockey of the great monster" था, एक चापलूस, फटी हुई वर्दी के अन्दर जो पिछलग्गू के रूप में था । इन दोनों तानाशाहों ने अपने आपको इस हद तक शाश्वत कर दिया कि वहां की जनता के लिए उनको संतुलित रूप से अपने आपको आसनारूढ़ रहने के लिए कोई दूसरा चारा नहीं रहा, सिवाय इसके कि वे युद्ध छेड़ें । हम सबको मालूम है, अध्यक्ष महोदय, कि यूरोप की क्या दशा हुई । कितनी भयंकर क्षति हुई । किन्तु दोनों विस्तारवादी, दोनों महत्वाकांक्षी तानाशाह खत्म हुए । आज वही नजारा हमारे एशिया के अन्दर है । आज माओत्से तुंग और चाऊ-एन-लाई की हुकूमत विस्तारवाद को लेकर अपने आपको शास्ता बना रहे हैं । वे उत्तर में हैं और दक्षिण में इंडोनेशिया है । इंडोनेशिया का तानाशाह कहता है कि मैं तो पालियामेंट से भी सुप्रीम ऑथोरिटी हूं, मैं सर्वोपरि हूं और पालियामेंट की विल, पालियामेंट की इच्छा, मेरी इच्छा की प्रतीक है ! आज वह देश हमारी एम्बेसी का अपमान करके और हमारी एम्बेसी को जला देती है । हम उसके प्रति क्षमता रखें, उदारता बरतें । मैं यह नहीं कहता हूं कि हमको ऐसी आवश्यकता है, हमने तो पाकिस्तान के ऊपर भी युद्ध की घोषणा नहीं की, हमको कोई ऐसी आवश्यकता नहीं है कि उससे डिप्लोमेटिक रिलेशन्स तोड़ दें । लेकिन हमको कोई न कोई ऐसे रूप में इंडोनेशिया को भी बता देना चाहिए कि जिसके द्वारा वह इस तरह गीदड़ धमकियां और भभकियां हम पर नहीं करे । मेरे निवेदन करने का लक्ष्य यही है कि जिस तरह से हिटलर पश्चिम में तीस वर्ष पूर्व था उसी तरह से चाइना का विस्तारवाद आज

Page No 55

(महारावल श्री लक्ष्मणसिंह)

तीस वर्ष के पश्चात् एशिया के अन्दर है । उत्तर में वह है और दक्षिण में इंडोनेशिया है । उनके सेटेलाइट्स कई एक हैं । इसलिए हम विश्वास करें, हम अफ्रोएशियाई कांफ्रेंस में जायं, हम बांडुंग, बेलग्रेड, अल्जिरिया के अन्दर जायं । लेकिन साथ ही आज अधिकांश एशिया और अफ्रीका के देशों के अन्दर जनतंत्र नहीं है । हम जनतंत्र की आन, बान, शान इस रूप से निभा रहे हैं कि सारे विश्व के लिए एक यही उच्च कोटि का उदाहरण नहीं लेकिन जनसंख्या के अनुपात से यह सबसे कम्परेटिवली सबसे विशाल जनतंत्र, गणतंत्र राज्य विश्व का आज है । इसको एक मिनिट के लिए यह तानाशाह और चीन नहीं देख सकते । उनकी बड़ी हसद है हमारी योजनाओं को परत करने की, हर तरह से येनकेन प्रकारेण हमको नीचा दिखाना चाहते हैं । मुझे विश्वास है कि हिन्दुस्तान आगे बढ़ता रहेगा और अवश्य बढ़ता रहेगा । मैं जानता हूं कि पाकिस्तान भी रहे । लेकिन कहीं ऐसा नहीं हो कि विस्तारवादी चीन तड़क-भड़क कर, दूसरे देशों को तंग करके, दूसरे देशों को सीमाओं में गड़बड़ी करके कहीं ऐसी आग न भड़का दे कि जिसके द्वारा वह लक्ष्य ही नष्ट न हो जाये ।

अध्यक्ष महोदय, यह संकटकालीन स्थिति है । इस संकटकालीन स्थिति के अन्दर मेरे दल का जो दृष्टिकोण है उसके संबंध में भी मैं दो शब्द कहूंगा । मुझे यह कहने की आवश्यकता नहीं कि हरएक नागरिक को, इस देश के हर एक नागरिक को इस संकटकालीन स्थिति के अन्दर तन-मन-धन से देश के लिए बलिदान देने को तैयार रहना है और वह बलिदान देने को तैयार है । लेकिन अगर सरकार यह समझती है और सरकार इस संबंध में विशेष जानकारी रखती है कि यह संकटकालीन स्थिति अभी और भी कायम रखी जाय तो मेरे ख्याल में विरोधी पक्ष को इतना कहने की गुंजाइश उत्पन्न होती है कि जब आप उनका भावनात्मक एकता के रूप में, तन-मन-धन से सहयोग मांगते हैं तो उसका एवजाना भी, दोनों हाथों से ताली बजाने के नाते, वे भी कुछ आशा रखते हैं । मेरे ख्याल से जो जो सीमावर्ती प्रान्त हैं वहां पर कोई न कोई कारण से अगर संकटकालीन स्थिति छः महीने के अन्दर समाप्त होने वाली है तो हमको कुछ नहीं कहना है । लेकिन अगर संकटकालीन स्थिति निरन्तर जारी रहती है, अनलिमिटेड पिरियड के लिए जारी अगर रखते हैं तो मेरे ख्याल में मिली जुली सरकार सीमावर्ती प्रान्तों में स्थापित होनी चाहिए । और मैं कहता हूं कि व्यक्तिगत मेरे लिए मैं आपको निवेदन करूं कि मुझे कोई मिनिस्ट्री नहीं चाहिए और न ही मैं कोई मिली-जुली सरकार में रहना पसन्द करूंगा । लेकिन कम से कम इस विरोधी पक्ष के अन्दर ऐसे लोग हैं जिनकी क्षमता, जिनकी योग्यता, जिनकी निष्ठा इतनी है कि वह मेरे ख्याल में मेरे सामने जो विराज-मान व्यक्ति हैं उनके साथ अगर वे बैठेंगे तो उनसे किसी हालत में अपने आपको कम साबित नहीं करेंगे । यहां पर जहां तक मुझे मालूम है पंचमार्गी कोई माननीय सदस्य विरोधी पक्ष में नहीं हैं । यदि कोई चीन का समर्थक है तो वह दूसरी बात है । चीन के समर्थक के लिए हम समझते हैं कि उसको मिली-जुली सरकार के अन्दर रहने का तो कोई अधिकार ही नहीं है लेकिन भारतवर्ष के नागरिक के नाते उसको अपने आपको भारतवर्ष का नागरिक कहने का

(महारावल श्री लक्ष्मणसिंह)

भी अधिकार नहीं है। वह देशद्रोही की श्रेणी के अन्दर आता है, यह मैं मानता हूं। लेकिन अगर कोई कॉम्युनिस्ट विचार का व्यक्ति है, अगर वह रूस का समर्थन करता है तो आज रूस हमारा बहुमूल्य और मानेता मित्र है, हम उसका भी स्वागत करें। मेरे ख्याल से, अध्यक्ष महोदय, अगर ऐसी मिली-जुली सरकार बनती है तो हमको डिफेन्स फ्रण्ट के साथ साथ होम फ्रण्ट भी कायम रखना है।

होम फ्रण्ट और फूड फ्रण्ट। होम फ्रण्ट के अतिरिक्त एक महान्, महत्वपूर्ण फ्रण्ट है फूड फ्रण्ट। जैसा कि बिजनेस एडवाइजरी कमेटी के द्वारा निर्णय हुआ है कि फूड की डिबेट अलग से रखी गई है, मैं फूड के संबंध में, खाद्यान्न के संबंध में, कोई निवेदन नहीं करूंगा और सदन के नेता मेरे से पहले अभी यह कह चुके हैं कि प्लान के संबंध में पुनर्विचार करने की आवश्यकता है, प्लान की प्रायोरिटीज के ऊपर हमको फिर से विचार करना पड़ेगा, और जहां तक हमारा अभिमत है हम तो बराबर सरकार से यह कहते रहे हैं कि प्लान के अन्दर परिवर्तन होना चाहिए और आज की संकटकालीन स्थिति के अन्दर डिफेन्स को फर्स्ट प्रायोरिटी दी जाय। फूड प्रोडक्शन, खाद्यान्न के उत्पादन, को आप उतना ही महत्व दें जितना कि डिफेन्स को दें, क्योंकि सुरक्षा भूखे पेट से नहीं हो सकती है। अगर ईश्वर न करे ६ महीने तक हम निरन्तर संघर्ष की स्थिति में आ जाते हैं तो जो लोग आज लम्बी-चौड़ी बातें करते हैं वे भूखे पेट मेरे ख्याल में दूसरी और बातें करने लगें। तो हम स्वावलम्बी बनें, लेकिन मैं यह कह देना चाहता हूं कि हम तटस्थता को अपनाकर अकेले चीन का मुकाबला नहीं कर सकते। हम बाण्डुंग, बेलग्रेड और अफ्रोएशियन नेशन्स का साथ दें लेकिन हमको उन राष्ट्रों का भी साथ देना चाहिए कि जिनकी शासन-पद्धति, शासन प्रक्रिया हमसे मिलती-जुलती है। हम चाहते हैं कि आप चाहे उनमें कितना ही विश्वास न करें लेकिन मेरा यह विश्वास है कि वे हमारे अशुभचिन्तक नहीं हैं। उनकी समानता और हमारी समानता जहां तक शासन-पद्धति का ताल्लुक है एक है, डिक्टेटर आज भारत के साथ सहानुभूति रखें यह मेरे ख्याल में एक्सेप्शन टू दी जनरल रूल होगा। एक ऐसी समस्या होगी जो साधारणतया ऊपर समझने से विवाद हो, लेकिन जिनकी पद्धति जनतन्त्र के प्रतिकूल नहीं है, जिनकी पद्धति जनतन्त्र में विश्वास रखती है और मेरा विश्वास है कि हमारा देश भी जो जनतन्त्र के अन्दर विश्वास रखता है, तो ऐसी स्थिति के अन्दर हमको किसी न किसी ऐसे राष्ट्र की तलाश करनी पड़ेगी जो हमारी तरफ से आये और हमारी संकट की घड़ी के अन्दर सीक्रेट पैक्ट के द्वारा हम उनका विश्वास प्राप्त करें कि जब मौका आये तब वह हमारी मदद करें। अगर हम ऐसा करते हैं तो मुझे विश्वास है कि चीन के हौसले भी पस्त होंगे। अगर हम ऐसा करते हैं तो मेरा विश्वास है कि पाकिस्तान भी हमारे सामने आंख ऊंची करके नहीं देख सकेगा।

मेरा उसके साथ साथ यह भी विश्वास है कि अगर होम फ्रन्ट को हम मजबूत बनाते हैं तो कम से कम यह सरकार संकटकालीन स्थिति की ओट में तरह-तरह के ऑर्डिनेन्स न लाये। पंचायतों के सम्बन्ध में शपथ-ग्रहण करने के लिए जो ऑर्डिनेन्स अभी, अध्यक्ष महोदय

Page No 57

(महारावल श्री लक्ष्मणसिंह)

आया है उसके बारे में मैंने बैठकर अपनी आत्मा से यह प्रश्न पूछा कि मान लिया जाय कि यह मुश्किल है, कठिन है, मैं मानता हूं लेकिन असम्भव नहीं है। मान लिया जाय कि आज की स्थिति में इसी सरकार के अन्तर्गत जिला परिषद् और पंचायत समितियों का बहुमत विरोधियों का होता तो क्या यह ऑर्डिनेन्स आता ? मेरी आत्मा ने तुरन्त उत्तर दिया कि यह ऑर्डिनेन्स नहीं आता। म्युनिसिपल कमेटियों के चुनाव स्थगित कराने के लिये जो ऑर्डिनेन्स आया वह भी मेरे ख्याल में संकटकालीन स्थिति की ओट में एक अनुचित लाभ सरकार ने लिया, ऐसा मैं अनुभव करता हूं। मेरे ख्याल से सरकार की यह नीति कि अपने लोगों को अनुचित रूप से प्रश्रय दें, चाहे भृष्टाचार के मामले आयें तो इस समय में मेरे ख्याल में मिली-जुली सरकार की स्थापना होती है तो कुछ न कुछ सरकार को बल मिलेगा और होमफन्ट दृढ़ होगा।

हमको जिम्मेदारी से जो कुछ भी आज की स्थिति में कहना है वह विरोधी पक्ष के नाते जिम्मेदारी से हम कहते हैं, चाहे आपको उचित लगे चाहे अनुचित लगे। इसका मतलब यह नहीं कि मत-मतान्तर के द्वारा हम अलग हों इस संकटकालीन स्थिति के अन्दर या हमारी कोई असहयोग की भावना हो, लेकिन जो कुछ भी भाषावाद हो, सूबावाद हो इनको बालाये-ताक रखकर हम एक होकर अगर विरोधी पक्ष के नाते हमारे कर्त्तव्य का पूर्णतया पालन करते हैं तो रेस्पोन्सिबल अपोजीशन के लिए मैं आपको यह भी निवेदन करूंगा कि रेस्पोन्सिबल कोऑपरेशन सरकार की ओर से हमको मिलना चाहिए। ऐसी मैं आशा करता हूं।

इन्हीं शब्दों के साथ मैं इस प्रस्ताव का समर्थन करता हूं।

श्री भैरोंसिंह (किशनपोल, जयपुर): अध्यक्ष महोदय, माननीय मुख्य मन्त्री जी ने जो प्रस्ताव रखा है मैं उसका समर्थन करता हूं। अध्यक्ष महोदय, पिछले कई दिन भारत के इतिहास में बहुत ही महत्वपूर्ण रहे हैं। २२ तारीख को देश के सामने दो प्रकार के अल्टीमेटम थे, एक साढे बारह बजे दिन के युद्ध बन्द किया जाय और दूसरा अल्टीमेटम था कि रात के १२ बजे युद्ध के लिये तैयार रहा जाय। मैं ऐसा समझता हूं कि विश्व के इतिहास में कई महत्वपूर्ण दिनों का हमें स्मरण होगा, लेकिन आज तक के इतिहास में ऐसा कोई दिन मुश्किल से ही आया है कि जिस दिन देश के सामने युद्ध बन्द करने और युद्ध करने दोनों का अल्टीमेटम हो। यह हमारा सौभाग्य है कि इन दोनों अल्टीमेटमों को हमने स्वीकार कर एक चुनौती के रूप में सारे संसार के समक्ष उसको रखा। चीन का अल्टीमेटम जिस समय हमारे सामने आया उस समय लोगों के समक्ष और खास तौर से विदेशी ताकतों के समक्ष यह भाव था कि हिन्दुस्तान की जनता, हिन्दुस्तान की सरकार और हिन्दुस्तान की सेना इस अल्टीमेटम से घबराकर पाकिस्तान के सम्बन्ध में, पाकिस्तान और उसके हिमायती जो कुछ चाहते हैं उस इच्छा को पूरी करने के लिए भारत मजबूर हो जायेगा। लेकिन इन पिछले दिनों में भारत ने युद्ध क्षेत्र में, कूटनीतिक क्षेत्र में जिस दृढता का परिचय दिया है वह भारत के लिए ही नहीं बल्कि मैं ऐसा समझता हूं कि सम्पूर्ण विश्व की राजनीति में निश्चित रूप से परिवर्तन लाने वाला एक कदम होगा।

(करतल-ध्वनि)

(श्री भैरोंसिंह)

आज हमें अहसास हुआ है कि मित्र कौन होता है, मित्रता किससे की जाती है, शक्तिशाली कौन है और केवल जबानदराजी कौन करता है। अमेरीका और ब्रिटेन को अपनी सैनिक सामग्री के आधार पर यह विश्वास होगा कि भारत और पाकिस्तान के बीच युद्ध हुआ तो इस सैनिक सामग्री का उपयोग कर पाकिस्तान भारत पर हावी हो जायेगा।

लेकिन ५ अगस्त से लेकर कल तक इस १ महीने और १७ दिन के समय में भारत की सेना ने जिस शक्ति का परिचय दिया उस परिचय ने यह सिद्ध कर दिया कि लड़ाई जीतना टैंकों के हाथ में नहीं है, लड़ाई जीतना सेबरजेट विमानों के हाथ में नहीं है बल्कि लड़ाई जीतना उस सेना के हाथ में है जिस सेना के जवानों के हृदय में, जिन जवानों के शरीर में अपनी देश भक्ति के लिये मर मिटने का एक संघर्ष है।

(करतल-ध्वनि)

अध्यक्ष महोदय, यह सही है कि पाकिस्तान के मुकाबले में भारत को उतनी सैनिक सामग्री नहीं मिली, उस प्रकार के हथियार नहीं मिले जिन हथियारों के आधार पर पाकिस्तान का मुकाबला किया जा सकता था, जिन हथियारों के मुकाबले पर पाकिस्तान को सही ठिकाने पर रखा जा सकता। हथियार तो इम्पोर्टेड होते हैं और पाकिस्तान ने हथियार इम्पोर्ट भी किये। लेकिन खून इम्पोर्ट नहीं होता। भारत को खून इम्पोर्ट करने की आवश्यकता नहीं थी। भारत में जिस प्रकार का खून था उस खून ने इम्पोर्टेड सैनिक सामग्री को ताक पर रख कर अमेरीका और इंग्लैंड के सम्मुख दिखा दिया कि तुम्हारे हथियारों के मुकाबले में कमजोर हथियारों से भी लड़ा जा सकता है। हिन्दुस्तान के लोगों के शरीर में ताकत है जिसके द्वारा तुम्हारे पैटन टैंकों को तोड़ा जा सकता है और सेबरजेट गिराये जा सकते हैं।

अध्यक्ष महोदय, युद्धविराम हुआ है। हिन्दुस्तान ने अब तक ५ युद्ध विराम किये हैं। पहला युद्ध विराम सन् १९४८ में लगभग ४५ हजार स्क्वायर माइल भूमि पर पाकिस्तान का कब्जा छोड़ कर, और दूसरा युद्ध विराम १९६२ में लगभग १३ हजार स्क्वायर मील भूमि चीन के कब्जे में छोड कर किया है। तीसरा युद्ध विराम कच्छ में लगभग १३ स्क्वायर मील भूमि पाकिस्तान के कब्जे में छोड़ कर हुआ है, लेकिन अभी का युद्धविराम कुछ देकर नहीं हुआ है बल्कि लाहौर और स्यालकोट क्षेत्र में ऐसा कब्रिस्तान देख कर किया है जिसमें फातिहा पढ़ने की इजाजत पाकिस्तान मांग रहा है। जिसमें पैटन टैंकों और सेबरजेटों को दफना करके और पाकिस्तान के जिहाद के नारों को दफना करके किया है। जो लोग भारत को कमजोर समझते थे उनकी भावना को दफना दिया है। आज वह कब्रिस्तान ऐतिहासिक कब्रिस्तान बन गया है। यदि पाकिस्तान इससे सबक लेगा तो अच्छा है। इस पर भी श्रीमान भुट्टो साहब यह कहते हैं कि हजार वर्ष तक हिन्दुस्तान से लड़ेंगे और काश्मीर पर कब्जा करेंगे। हजार वर्ष तो बहुत होंगे, १ महीना और १७ दिन में ही वे प्रेसिडेन्ट जोनसन से अपील करने लगे, चीन के सामने घुटने टेकने लगे तथा टर्की और ईरान से साहायता मांगने लगे, इंडोनेशिया से सहायता मांगने लगे, रूस

(श्री भैरोंसिंह)

हालत में जब कि हिन्दुस्तान को किसी ने मदद नहीं दी, मौखिक सहानुभूति भी नहीं थी। इंग्लैंड कहता था कि वह हथियार नहीं देगा। अमेरीका भी कहने लगा कि हथियार नहीं दूंगा जबकि टर्की और ईरान कहते थे कि हम पाकिस्तान को सहायता देंगे और चीन कहता था कि पाकिस्तान की सहायता के लिये हम दूसरा मोर्चा चलायेंगे। इस हालत में भी हमने जो युद्ध विराम स्वीकार किया है वह युद्ध विराम कुछ विजय प्राप्त करके स्वीकार किया है। मैं समझता हूं पिछले युद्ध विराम के मुकाबले में यह विजय का युद्ध विराम है। हम पाकिस्तान की भावना को समझ सकते हैं और विश्लेषण की आवश्यकता नहीं है।

पाकिस्तान का निर्माण घृणा के आधार पर हुआ है और जिस दिन से इसका निर्माण हुआ है, उस दिन से हिन्दुस्तान के लिये यह संकट ही साबित हुआ। सन् ४७ में कबायलियों के नाम से सबसे पहले पाकिस्तान ने काश्मीर पर अतिक्रमण किया। उस दिन से पाकिस्तान के जितने भी शासक हुए, सबसे पहले शासक लियाकतअली थे जिन्होंने कबायलियों की मार्फत जम्मू-काश्मीर में प्रवेश कराया; उस समय से आज अयूब तक जितने भी शासक आये उन्होंने अपनी गद्दी बनाये रखने के लिये पाकिस्तान में जिहाद का नारा हिन्दुस्तान के विरुद्ध लगाया। इसको राजनैतिक स्लोगन बनाकर उस पर आश्रित रहे। पिछले चुनाव में जब अयूब के फौजी शासन को पता लगा कि पाकिस्तान की जनता भूख, अराजकता और दुनिया भर के संकटों का सामना करती हुई अब फौजी शासन के विरुद्ध आवाज उठा रही है; उन्होंने चुनाव तो साम, दाम, दंड, भेद, और आतंक के बल पर जीता लेकिन यह समझ गये कि पाकिस्तान की जनता फौजी शासन के विरुद्ध बगावत करने वाली है तो उन्होंने सोचा कि पहला नारा जो लियाकतअली खां ने लगाया था वह अब काम नहीं देगा, जो नारा मोहम्मदअली ने लगाया था वह भी काम नहीं देगा, जो नारा सुहरावर्दी और इस्कन्दर मिर्जा ने लगाया था वह भी काम नहीं देगा। अब तो नये नारे के लिये भारत से युद्ध करना ही पड़ेगा। उसको यह पता नहीं था कि भारत की ४४ करोड़ जनता आज जागरूक है और पाकिस्तान का मनसूबा समझती है। जब ५ अगस्त को काश्मीर में दुबारा प्रवेश कराया उसके साथ साथ सैनिक शक्ति के आधार पर अंतर्राष्ट्रीय सीमा का उल्लंघन करके जम्मू-काश्मीर में प्रवेश किया, उस समय शायद लोगों को यह ध्यान होगा कि एक बार ऐसा लग रहा था कि हमारी सेना जो पाकिस्तानी सेना के मुकाबले में डटी है, छंब क्षेत्र में भी घमासान युद्ध हो रहा था, पाकिस्तानी एयर कवर और आर्टिलरी के द्वारा हिन्दुस्तान की सेना से युद्ध कर रहे थे उस समय किसी को कल्पना नहीं होगी कि पाकिस्तान से लड़ने का तरीका हमारी सेना ने निकाल लिया है। जो सेना जम्मू की तरफ बढ़ने वाली है वह जम्मू की तरफ नहीं बल्कि लाहौर की ओर बढ़ने लगी। हिन्दुस्तान की ४४ करोड़ जनता ने हमारी सरकार की सराहना की है। जिस दिन जम्मू के अलावा लाहोर क्षेत्र में हिन्दुस्तान की सेना बढने लगी उस दिन से हिन्दुस्तान की सेना का सबने लोहा माना। आज के समाचार पिछले दिनों में पढने को मिले हैं उनसे पता लगता है कि पाकिस्तान ने युद्ध की तैयारी एक दिन में नहीं की, बल्कि

Page No 60

(श्री भैरोंसिंह)

जब से फौजी शासन पाकिस्तान में आया उस दिन से लाहोर क्षेत्र में पिल-बॉक्सेज बनने लगे थे। जिस तरह से जर्मनों ने पिल-बोक्स सिमेन्ट और कांकरीट के बनाये थे उसी तरह के पिल-बोक्स लाहोर क्षेत्र में बनाये जाने लगे। टनेल्स माइल्स तक बनाई गईं। अन्दर से आर्मामेन्ट्स से इक्विप किया गया। पाकिस्तान की तैयारी बहुत पहले से थी। पाकिस्तान के पास दुनिया भर के हथियार थे। पाकिस्तान का इरादा, उसके हथियार, उसके पिल-बोक्स सारे के सारे मिट्टी में मिल गये। आज सारे विश्व को और अमेरिका को महसूस करना पड़ेगा इंग्लैंड को महसूस करना पड़ेगा कि जिस पाकिस्तान को साम्यवाद से युद्ध करने के लिये, विशेषतौर से चीन के प्रसार को रोकने के लिये सैनिक सामग्री दी थी उसका उपयोग किस जगह हुआ।

मैं मानता हूं, उस समय अमेरिका ने यह आश्वासन दिया था कि उसके हथियारों का उपयोग भारत के विरुद्ध नहीं होगा। भारत की जनता को उसने आश्वस्त किया कि भारत के विरुद्ध उपयोग नहीं होगा हमारे नेताओं ने जब उस समय कहा कि इन हथियारों का उपयोग भारत के विरुद्ध होगा तो उस समय अमेरिका ने, उस समय न मालूम अनजाने या जान-बूझकर यह कमिटमेन्ट किया था कि उनका उपयोग भारत के विरुद्ध नहीं होगा। यह सही है कि जिस समय पाकिस्तान ने उन हथियारों का प्रयोग भारत के विरुद्ध शुरू किया तो अमेरिका ने उस समय कहा कि उन्होंने ब्रीच ओफ ट्रस्ट किया, कन्डीशन की अवहेलना की। लेकिन अमेरिका को स्मरण होगा कि उसने हमारे प्रधान मन्त्री को यह आश्वासन दिया था कि यदि पाकिस्तान द्वारा ब्रीच होता है तो हम भारत की मदद करेंगे। आज उस आश्वासन पर कोई अमल नहीं हुआ। जिस समय अमेरिका के हथियारों का उपयोग किया, हिन्दुस्तान से जंग छेडा तब अमेरिका को संकोच नहीं रहा मानने में कि भारत के विरुद्ध उपयोग किया जा रहा है, लेकिन उस समय अमेरिका ने हमारी मदद नहीं की, इंग्लैन्ड द्वारा हमको सैनिक सहायता दी जा रही थी उसमें किसी प्रकार की कन्डीशन नहीं थी, एक तरह का ट्रेड एग्रीमेन्ट था लेकिन उसने उसको भी देने से रोका। बाकी मुल्कों ने उस बात की हिम्मत नहीं की कहने की कि पाकिस्तान ने आक्रमण किया है, उसको आक्रमणकारी कहते यह इस बात का

(१ म० प०)

सुबूत है कि आज विश्व की राजनीति में कोई सत्य की या कोई सिद्धान्त की पूजा नहीं होती। आज विश्व की राजनीति में शक्ति की पूजा होती है। आज विश्व की राजनीति में मित्र वही है जो शक्तिशाली है और दुश्मन वह है जो कमजोर है। हिन्दुस्तान ने अब तक अपनी नीतियों के आधार पर विश्व में अपनी शक्ति की छाप नहीं छोडी थी, हिन्दुस्तान ने विश्व में अपनी शक्ति का परिचय नहीं दिया—इसी कारण यह हुआ कि जिस इन्डोनेशिया को हमारे देश के नेताओं ने आजाद कराया, जिस इन्डोनेशिया को हमारे देश के नेताओं ने उसके आजादी के संघर्ष में हर प्रकार का सहयोग दिया था, मिडल ईस्ट और ईस्ट के देशों की आजादी के लिये इस देश के नेताओं ने अपनी आवाज को बलन्द करके उन देशों को गुलामी के शिकंजे

(श्री भैरोंसिंह)

से निकाला था, वे देश पाकिस्तान को हथियार देने के लिये तैयार होगये थे। इसका कारण केवल मात्र यह था कि अब तक हमारी शक्ति छिपी हुई थी, अब तक हिन्दुस्तान की शक्ति का प्रदर्शन नहीं हुआ था। अब हिन्दुस्तान ने अपनी शक्ति का प्रदर्शन किया है तो कुछ दिनों के बाद में आप देखेंगे कि छोटे छोटे मुल्क, जो आज चीन का खौफ खाकर चीन के विरुद्ध अपनी आवाज नहीं उठा सकते थे जो छोटे-छोटे मुल्क अमरीका और पाकिस्तान की सैन्य संधि के कारण पाकिस्तान से खौफ खाकर सही बात नहीं कह सकते थे—लेकिन अब कुछ दिनों के बाद में विश्व की राजनीति में एक बडा परिवर्तन आने वाला है और जो कमजोर मुल्क, शक्ति से दबे हुए होने के कारण अपनी सही बात कहने में हिचकिचाते थे, वे अब आगे आकर हिन्दुस्तान से सही मार्ग-दर्शन लेकर हिन्दुस्तान की सही बात को संसार के सामने रखने में निश्चित रूप से सहयोग करेंगे।

यह शक्ति किस प्रकार पैदा हुई, किस परिस्थिति में पैदा हुई, क्यों पैदा हुई, किस तरह से पैदा हुई—इसका अहसास हमें करना पड़ेगा। सन् १९६२ में चीन ने हिन्दुस्तान पर हमला किया। उस वक्त सारा देश एक हो गया था और जो कुर्बानी सरकार ने चाही थी उस प्रकार की कुर्बानी करने के लिये सारा देश तैयार हो गया था। लेकिन पाकिस्तान ने सन् १९६५ में जो कच्छ में हमला किया और फिर जो ५ अगस्त से युद्ध आरम्भ किया, इसके बाद में हिन्दुस्तान में जो जोश आया हिन्दुस्तान की सेना में जो जोश आया, हिन्दुस्तान के लोगों में जो कुर्बानी की भावना पैदा हुई-इन दोनों में एक बहुत बड़ा अन्तर है, इन दोनों में एक बहुत बड़ा भेद मालूम होता है। वह इसलिये कि जिस समय हमारा चीन से युद्ध आरम्भ हुआ उस समय हम यह कह कर निकल गये थे, यह कह कर हम दुनिया के सामने अपना मुंह दिखाने के लिये खड़े हो गये थे कि चीन का हमला हमारे ऊपर अचानक हुआ था, चीन और हिन्दुस्तान के दोस्ताना ताल्लुकात थे और चीन ने हमारे साथ में धोखा किया। वह धोखा हमने खाया और उसके बाद में पिछले तीन वर्षों में जो तैयारी हम कर पाये, यह उसी का परिणाम था कि आज हिन्दुस्तान की जनता ने आश्वस्त होकर निश्चय कर लिया था कि पाकिस्तान को मुंह तोड़ जवाब देना है, पाकिस्तान को सदा के लिये सबक सिखाना है, पाकिस्तान जो हिन्दुस्तान के खिलाफ रोज रोज जिहाद के नारे लगाता रहा था, उसके नारों की बुलन्दगी को हमेशा के लिए समाप्त करना है। उसको हिन्दुस्तान की सेना ने समाप्त किया, लेकिन पाकिस्तान आज भी कहता है, अयूब साहब कल बोल रहे थे, वे कह रहे थे, युद्ध विराम तो हुआ, युद्ध विराम अवश्य हुआ लेकिन काश्मीर के मामले में जब तक भारत से काश्मीर लेकर पाकिस्तान को नहीं दिया जायगा, जब तक काश्मीर में प्लेबीसाइट के सिद्धान्त को स्वीकार नहीं किया जायगा तब तक युद्ध चलता रहेगा। लेकिन अयूब साहब देखें कि काश्मीर भारत का मुकुट है और इस भारत के मुकुट काश्मीर के ऊपर सबसे पहले लियाकत अली खां ने अटैक किया था, और उसी लियाकत अली खां को पाकिस्तान के लोगों ने गोली से उड़ा दिया था। यह काश्मीर भारत का मुकुट है और इस भारत के मुकुट काश्मीर के लिये भारतमाता के रत्न डाक्टर श्यामाप्रसाद मुखर्जी ने अपना रक्त दिया था। और उन भारतमाता के रत्न डाक्टर श्यामाप्रसाद

(श्री भैरोंसिंह)

मुखर्जी को मारने वाला शेख अब्दुल्ला आज दस वर्ष से जेल में सड़ रहा है। और अब भारत के मुकुट काश्मीर पर अयूब साहब ने हाथ डालने का दुस्साहस किया है वह भी अपने दिन निकाल रहे हैं। अब भुट्टो और अयूब के बीच में युद्ध चल रहा है और कौन किसको मार देगा—यह अभी भविष्य के गर्भ में है। लेकिन हम यह मान कर चलते हैं कि भारत का मुकुट काश्मीर भारत के समाप्त हुए बगैर भारत से अलग नहीं हो सकता है। आज यह दुनिया के ताकती देश देखलें कि भारत किस प्रकार काश्मीर के लिये लड़ने वाला है। काश्मीर हमारा है। इस काश्मीर को हमने बनाया है। लेकिन आवश्यकता इस बात की थी कि काश्मीर के प्रश्न को लेकर हम पिछले सत्रह वर्षों में संसार में इस प्रकार का प्रचार करते कि काश्मीर के जिस भाग पर पाकिस्तान ने कब्जा कर रखा है उस भाग को पाकिस्तान के शासन से मुक्त कराया जाय। यह हिन्दुस्तान की कमजोरी रही कि इस प्रश्न पर संसार का प्रबल समर्थन प्राप्त करने की स्थिति पैदा नहीं कर सके। अब यह युद्ध किस कारण हुआ है, किस बात के लिए युद्ध हुआ है ? हम पाकिस्तान पर हमला कर रहे थे, वह पाकिस्तान को गुलाम बनाने की गरज से नहीं किया, वह पाकिस्तान की सेना की शक्ति को नष्ट करने के लिये किया और आज काश्मीर में युद्ध विराम किया है वह वहां युद्ध विराम नहीं हो सकता। हमें हाजी पीर दर्रा लेना था यह मैं नहीं कहता। काश्मीर के मुख्य मन्त्री सादिक अली साहब ने भी कहा है और हिन्दुस्तान के प्रधान मन्त्री ने भी कहा है, हिन्दुस्तान के रक्षा मन्त्री ने भी कहा है कि काश्मीर के अन्दर काश्मीर यद्ध विराम स्वीकार किया है वह किसी कन्डीशन के साथ स्वीकार नहीं किया है। जब किसी कन्डीशन के साथ में युद्ध विराम स्वीकार नहीं किया है तो भारत को इसके लिये तैयार रहना चाहिये कि भारत की जिस भूमि के ऊपर आज से सत्रह वर्ष पहले से पाकिस्तान का कब्जा है उसको हम हमारे अधिकार में करलें। उस पर हमारा अधिकार हम छोड़ेंगे नहीं और जो भारत की भूमि पाकिस्तान के कब्जे में रही है उसके लिए हमें संघर्ष करना पड़ेगा और संघर्ष करके उस भूमि को हम आजाद करायेंगे। (करतल-ध्वनि) अध्यक्ष महोदय, हाजी पीर दर्रे के पास जिस क्षेत्र पर हमने कब्जा किया है उसकी आज हालत क्या है ? वहां के लोगों को आज चौदह वर्ष से शक्कर के दर्शन नहीं हुए हैं, पिछले चौदह वर्ष तक उन्हें केरोसिन तेल नहीं मिला है। जब वहां पर काश्मीर के मन्त्री गये तो लोगों ने भारत जिन्दाबाद के नारे लगाये। जय जयकार के नारे लगे। हमने उस क्षेत्र के लोगों को आजादी का सन्देश दिया है। हमने उनको आजाद कराया है और पिछले सत्रह वर्ष की गुलामी के बाद हमने उनको आजाद करा दिया है। तो आज जिन लोगों को आजादी का सन्देश दिया, जिन क्षेत्रों पर हमने तिरंगा झंडा लहराया है, जिन क्षेत्रों को हमने पाकिस्तान की गुलामी से आजाद किया है, उनको दुबारा युद्ध विराम की बात को लेकर पाकिस्तान की गुलामी में डाल दें, मैं समझता हूं—हमारी सरकार ऐसा नहीं करेगी।

(करतल-ध्वनि)

हम इस बात को कहने के लिये तैयार हों और सरकार इसके लिए तैयार होकर चले कि अब संसार की बड़ी ताकतें इस बात के

(श्री भैरोंसिंह)

लिए फिर आयेंगी। अब इस सम्बन्ध में कूटनीति-क्षेत्र में फिर युद्ध चलेगा कि जो युद्ध विराम का समझौता हमने किया है उसके फलस्वरूप हमारी सेना को ५ अगस्त की स्थिति पर चला जाना चाहये। जो ५ अगस्त की स्थिति में जाने की बात है, इस ५ अगस्त का अर्थ क्या है ? जिस क्षेत्र के अन्दर, आजाद काश्मीर के इलाके के अन्दर हम अपनी सेना को लेकर आगे बढ़े और उस क्षेत्र में जो पाकिस्तान की चौकियां थीं उनको हमने समाप्त किया और जिन जगहों से पाकिस्तानी इन्फिल्ट्रेटर्स आते थे उन जगहों पर हमने अधिकार किया और उनका आने का मार्ग हमने अवरुद्ध किया। अब जो स्थान हमारे कब्जे में हैं हम उनको छोड़ कर आ जायेंगे, मैं मानता हूं कि भारत इसके लिए तैयार नहीं होगा ? भारत को उन स्थानों को कभी नहीं छोड़ना है । हमारी सरकार उसके लिए कभी तैयार नहीं होगी।

(करतल-ध्वनि)

और यदि सरकार तैयार हो गई तो इससे जनता का मनोबल गिरेगा। जनता उसको कभी स्वीकार करने वाली नहीं है। मैं ऐसा चाहता हूं कि हमारी सेना, हमारी सरकार और हमारी जनता में जो मतैक्य रहा है, जो विचारधारा का साम्य रहा है, उस विचार-धारा को हमारी एक संगठित शक्ति पैदा होने का स्थान बनाना है और वह स्थान इस प्रकार बनाना है तो उस हालत में दुबारा संकट आ सकता है। उस संकट का मुकाबला करने के लिये हमें उसका मुकाबला करने के लिए तैयार रहना चाहिये क्योंकि हम युद्ध विराम से सहमत होकर चल रहे हैं और युद्ध विराम भी किससे; पाकिस्तान से, जिसके मन में हिन्दुस्तान के प्रति घृणा है, जो मानवता का पूजक नहीं है, जो मानवता को नष्ट करने के लिये तुला हुआ है, जो चीन के इशारे पर हिन्दुस्तान को कमजोर करने पर तुला हुआ है, जो इन्डोनेशिया और चीन की हुकूमत के इशारे पर हिन्दुस्तान की लोक-तान्त्रिक स्थिति और सिक्यूलरिज्म को खत्म करने को तुला है, जिसने हिन्दुस्तान को खत्म करने का बीडा उठाया है, वह पाकिस्तान किसी हालत में, किसी भी मौके पर, जब भी उसे मौका मिलेगा, स्थिति का लाभ उठाने का प्रयत्न करेगा । ऐसी स्थिति में हिन्दुस्तान को युद्ध करना है और हिन्दुस्तान को सावधान रहना है क्योंकि श्रीनगर के बोर्डर पर चीन बैठा है। ऐसी स्थिति में जो देश सिविल पोपूलेशन पर बम्ब पटकता है, फौजी अस्पताल पर बम्ब पटकता है, जो जेलखाने के अस्पताल पर बम्ब पटकता है और नागरिकों को मार सकता है—उससे हिन्दुस्तान को सतर्क रहना पड़ेगा।

मैं समझता हूं कि युद्ध विराम केवल एक सांस भर लेने का अवसर प्राप्त करना है। युद्ध विराम की आड़ में पाकिस्तान सांस लेना चाहता है। पाकिस्तान की जो पिटाई हुई है उस पिटाई के बाद वह सम्भलना चाहता है। विश्व के अन्दर जो पाकिस्तान का अपमान हुआ है और जो उसका अभिमान चूर-चूर हुआ है उसको वह सम्भालना चाहता है। हिन्दुस्तान से चोट खाकर पाकिस्तान चुप रहेगा—मैं ऐसा नहीं मानता। पाकिस्तान चुप रह सकता है अपनी शक्ति के आधार पर। शक्ति समाप्त होने पर वह भारत के मुकाबले लड़ेगा नहीं। इसी प्रकार का एक किस्सा हुआ है। एक गीदड एक बाग में आम खाने

(श्री भैरोंसिंह)

चला गया। कई बार जाने पर बाग में जाकर आम खाने की उसकी आदत पड़ गई। बागवान ने उसे रोका, लेकिन वह नहीं माना और वह बागवान को गुर्रा कर डराता। उसके बाद बागवान ने क्या किया कि उसने आम की गुठलियां निकाल लीं और उसकी जगह एक बिच्छू रख लिया। गीदड़ आया तो वह आम को खाते खाते उसके अन्दर के बिच्छू को भी खागया। उसके बाद जब गीदड मरने लगा तो उसने एक वसीयतनामा लिखा कि बेटों कभी बाग में मत जाना और बाग में जाना तो आम मत खाना और आम भी खाओं तो थोथा आम मत खाना। इसी प्रकार अयूब साहब भी एक वसीयतनामा लिख कर जा रहे हैं कि लड़ाई मत लड़ना, लड़ाई भी लड़ों तो हिन्दुस्तान से मत लड़ना, और हिन्दुस्तान से लड़ो भी तो पेटन टैंक, सेबरजेट भूल कर काम में मत लाना। यह वसीयतनामा लिख कर वे जा रहे हैं। लेकिन संसार की दूसरी शक्तियां हैं वे कभी नहीं चाहती कि हिन्दुस्तान का युद्ध में सम्मान बढे, हिन्दुस्तान ने जो शक्ति का परिचय दिया है उससे हिन्दुस्तान की इज्जत बने। वे शक्तियां पाकिस्तान को उकसायेंगी। वे पाकिस्तान को कई प्रकार की सहायता देंगे और फिर हिन्दुस्तान से लड़ने के लिये तैयार करेंगे और वे यह चाहते हैं कि भारत के विरुद्ध पाकिस्तान तैयार हो जाए। चीन पाकिस्तान को तैयार करने में और इन्डोनेशिया पाकिस्तान को तैयार करने में और बाकी के दूसरे मुल्क भी कई ऐसे हैं जो पाकिस्तान को हिन्दुस्तान के विरुद्ध लड़ने के लिये तैयार करेंगे। आज तो युद्ध विराम हो गया, लेकिन मैं एक बात सीमावर्ती क्षेत्र है उसके लिये निवेदन करना चाहता हूं और जिसमें हमारा राजस्थान भी आता है, इसलिये मैं राजस्थान के मुख्य मंत्री से और राजस्थान की सरकार से खास तौर से निवेदन करना चाहता हूं कि अपनी सीमा जो बहुत लम्बी चौड़ी है इस सीमा पर अच्छी तरह से चौकसी रखें। ऐसा न हो कि हमारी सीमा में किसी प्रकार से पाकिस्तानी घुस आएं, क्योंकि पाकिस्तान अन्तर्राष्ट्रीय मंडल के सामने यह सिद्ध करने की कोशिश करेगा कि जिस प्रकार से हमारी सेनाएं लाहौर और स्यालकोट के बोर्डर में हैं, उसी प्रकार वह यह सिद्ध करने की कोशिश, चेष्टा करेगा कि हम भी भारतवर्ष की सीमा में इतने मील आगे बढ़े हैं। पाकिस्तान के सामने युद्ध विराम और नैतिकता कोई चीज नहीं है, पाकिस्तान के सामने युद्ध विराम और नैतिकता का संकल्प कोई महत्व नहीं रखता है। इसलिये ओब्जर्वर्स के आने से पहले २ पाकिस्तान हर क्षेत्र में यह कोशिश करेगा कि किसी न किसी तरह से चाहे पैराश्यूट्स के द्वारा या और किसी रूप से इसका प्रयत्न करेगा कि हम भी भारत की सीमा में इतने दूर घुसे हुए हैं और कब्जा किया है। हम भी उस समय तक वहां से नहीं हटेंगे जब तक लाहौर और स्यालकोट से हिन्दुस्तान की फौजें नहीं हटती हैं।

अध्यक्ष महोदय, यह हिन्दुस्तान के लिये बड़े गर्व की बात है कि हमारी सेना ने जिस प्रकार के युद्ध-कौशल और वीरता का परिचय दिया, उसको देख कर आज जिन लोगों ने पहले फर्स्ट और सैकन्ड महायुद्ध में जो टैंकों की लड़ाई देखी थी उसके साथ हमारी लड़ाई की तुलना करने लगे हैं। विदेशी समाचार-पत्र, कुछ की बात छोड़िये, जहां हमारे सैनिकों ने एक दिन में ६३ टैंक तोड़े,

Page No 65

(श्री भैरोंसिंह)

उसकी तुलना रोमेल के उस युद्ध से जो अफ्रीका में हुआ, जिसमें ७२ टैंक तोड़े गये, उससे करने लगे हैं। सरगोदा के जिस रेडार को हमारे नौजवानों ने डैश करके तोड़ा उसने डैथ स्क्वेड्रन का काम किया। जिस प्रकार डैथ स्क्वेड्रन का नाम आज जापान में, जिन्होंने प्रिन्स ऑफ वेल्स की चिमनी में घुस कर तोड़ते हुए देखा, आज हिन्दुस्तान के वीर जवानों ने इसी प्रकार का एग्जाम्पल दिया। बाकी के देशों में डैथ स्क्वेड्रन डंडे के जोर पर तैयार कराते हैं जब कि हिन्दुस्तान के लोग दुश्मनों के विरुद्ध जूझते हैं तो डैथ स्क्वेड्रन की तरह अपनी जान की परवाह नहीं करते और दुश्मन को साफ करने की कोशिश करते हैं।

(करतल-ध्वनि)

राजस्थान के कई जिलों के लोगों ने इस लड़ाई में हिस्सा लिया और अपना बलिदान दिया है। राजस्थान के कई सैनिक लद्दाख के क्षेत्र में लड़ाई में वीरता से लड़े हैं और वीर शैतानसिंह ने सारे हिन्दुस्तान में राजस्थान के नाम को उज्ज्वल किया है। कई लोगों को वीर चक्र और परमवीर चक्र मिले हैं। अभी हमारे मेजर मोडसिंह को इस प्रकार वीर चक्र मिला और कुछ लोगों को अभी मिलने वाले हैं। उसके लिये सारी युद्ध की स्टोरीज कलेक्ट की जा रही हैं। मैं समझता हूं कि युद्ध के बाद जिन लोगों को इनाम मिलेगा, उसमें राजस्थान के लोगों का भी काफी हिस्सा होगा। मगर मैं राजस्थान के मुख्य मंत्रीजी को यह बात बता देना चाहता हूं हालांकि कहनी नहीं चाहिये, खेद है कि मुझे कहनी नहीं चाहिये लेकिन कहनी पड़ती है कि जो आश्वासन १९६२ में युद्ध के अवसर पर हमने दिये थे और जिनकी घोषणा की थी, जो जो बातें मिलिट्री मेनों के लिये सहूलियतों के रूप में डिक्लेअर की थीं उनका हम पूर्णतया पालन नहीं कर पाये। आज आवश्यकता इस बात की है कि जो लोग देश की आजादी के लिये युद्ध में लड़ने के लिये जाते हैं और राजस्थान के जवानों ने मैंटल द्वारा राजस्थान की सेवा की उन सब चीजों के लिये हमें उनमें आत्म-विश्वास पैदा करने की आवश्यकता है और यह आत्म-विश्वास उनमें पैदा करना होगा कि मैं सेना में भरती होता हूं और मरता हूं पर मेरे पीछे मेरे परिवार की देख-रेख के लिये सरकार जिम्मेदार होती है। उसको इस बात की चिन्ता नहीं कि उसके मरने के बाद उसके बच्चे भूखे रहेंगे, उसको इस बात का विश्वास होना चाहिये कि मेरे बच्चे भूखे नहीं रहेंगे, मेरे पीछे मेरे बच्चों की शिक्षा का प्रबंध रह सकेगा और इस प्रकार का विश्वास पैदा करने की जिम्मेदारी सरकार पर रहती है।

हम सब युद्ध के मौके पर एक थे, हमारे में कोई वर्ग भेद नहीं था। सभी लोगों ने सरकार का साथ दिया। आज इस बात की जरूरत है कि सरकार ऐसी मशीनरी मोल्ड करे जो जनता के सारे कोऑपरेशन को कैच करे। जनता में जो त्याग और बलिदान की भावना है उसका उपयोग लेने के लिये सरकार को व्यवस्था करनी चाहिये। इस युद्ध में जनता ने अपना सभी प्रकार से कोऑपरेशन दिया। जनता के कोऑपरेशन में किसी प्रकार की कमी नहीं थी। हो सकता है, अनुभव की कमी के कारण या साधनों की कमी के कारण या व्यवस्था नहीं कर सकने के कारण जो जोश था उसका पूर्णतया उपयोग

(श्री भैरोंसिंह)
हम नहीं कर पाये, मगर जोश अभी भी बचा हुआ है। मैं यह निवेदन करूंगा कि सरकार इस जोश को राइटली यूटिलाइज कर सके तो करे यह सिविल गवर्नमेंट का कार्य होगा। इसलिये मैं निवेदन करूंगा कि जनता ने जो कुछ भी कुर्बानियां की हैं और जो कुछ कुर्बानियां करने को जनता अभी भी तैयार है इसके लिये जनता को प्रेरणा मिले, ऐसे प्रयत्न करने के लिये सिविल गवर्नमेंट को तैयार रहना चाहिये। इसके साथ साथ मैं यह भी निवेदन करना चाहूंगा कि हमने युद्ध में विजय प्राप्त की है, हम जीते हैं, यह ठीक है, लेकिन आज इस बात का भी तकाजा है कि हम अपने यहां पर सिविल एडमिनिस्ट्रेशन को भी सुधारें और जो खामियां इसमें घुसी हुई हैं, जो खराबियें इसमें घर कर गई हैं उनको दूर करें। न कि केवल जनता ने जो सहयोग दिया उसको चेनेलाइज करें। जरूरत इस बात की है कि सिविल एडमिनिस्ट्रेशन को, जो करप्ट होगया है, इतना शुद्ध करें कि कोई उसमें किसी प्रकार की खराबी न रहने पावे और सिविल एडमिनिस्ट्रेशन के खिलाफ कभी कोई उंगली उठा कर यह न कह सके कि सिविल एडमिनिस्ट्रेशन खराब है। इसकी जिम्मेदारी आती है सरकार पर, जनता में कॉन्फीडेन्स की, सरकार ने जो सहूलियत दी है उसको प्राप्त करने की। यह सारी चीजें हमारे सामने आज कुछ क्षणिक मालूम होती हैं। विश्व का इतिहास इस बात को सिद्ध करता है कि कोई भी मुल्क दूसरे मुल्क पर हावी हुआ है तो वह उसकी आन्तरिक शक्ति कमजोर होने के कारण हुआ है। जिस मुल्क की आंतरिक शक्ति कमजोर होगी उसकी सेना की शक्ति कमजोर होती जाती है।

आज आवश्यकता इस बात की है कि हमने आपनी फौजी ताकत को तो मजबूत बना लिया और हमारी आंतरिक शक्ति कमजोर है तो यह ठीक नहीं है। हमने युद्ध में अच्छे साहस का परिचय दिया। हमको चाहिये कि जनता में इस बात का विश्वास पैदा कर दें कि हमारे सैनिक जो मोर्चों पर लड रहे हैं उनको अपने परिवार की तरफ की कोई चिन्ता नहीं होनी चाहिये, उनके परिवार की जिम्मेदारी सरकार पर है। इस प्रकार की एक नहीं कई बातें हैं जिनको हमें देखना पडेगा और तैयारी करनी पडेगी। हम युद्ध के समय में संकटकालीन स्थिति के अवसर पर सैनिकों से युद्ध की अपेक्षा करें और सिविल एडमिनिस्ट्रेशन में आपके यहां पर कई कमजोरियें पाई जावें तो मैं समझता हूं कि यह बात हमारी सरकार के लिये कोई शोभा की बात नहीं है। मैं राज्य सरकार से निवेदन करूंगा कि सरकार अपने सिविल एडमिनिस्ट्रेशन को सुधारने के लिये तैयार रहें।

जहां तक चीन की शक्ति का प्रश्न है, मैं यह कहूंगा आप यह मान कर चलिये कि चीन कभी भी चुप रहने वाला नहीं है क्योंकि वह जानता है कि एशिया में यदि कोई शक्तिशाली राष्ट्र है जो चीन से टक्कर ले सकता है और एशिया में साम्यवाद के प्रसार को रोकने वाला है, और प्रजातन्त्र का हामी है तो वह है भारत और इस युद्ध में जो भारत का सम्मान बढा है उसको चीन अपनी फूटी आंख से भी देखना नहीं चाहता। चीन यह मान कर चलता है कि यदि हिन्दुस्तान को नहीं गिराया गया तो हिन्दुस्तान की ताकत बहुत बढ जावेगी और भारत एशिया में शक्तिशाली राष्ट्र बन जावेगा।

इसलिये मैं निवेदन करूंगा कि आपका सिविल एडमिनिस्ट्रेशन अच्छा होना चाहिये

(श्री भैरोंसिंह)

और जो वायदे और आश्वासन सैनिकों को दिये जावें उनकी पूरी तरह से पूर्ति हो जिससे कि सैनिक बाकी सभी चीजों को भुलाकर संग्राम में लग जावें। उनको इसबात की चिन्ता न रहे कि उनके पीछे उनके बच्चों को रोटी की समस्या पैदा हो जायेगी।

आज यह सही है कि हमें रोटी चाहिये और हथियार चाहियें। इनसे हम देश के स्वाभिमान को बढा सकते हैं। लेकिन में यह कहूंगा कि यदि रोटी का भी सही ढंग से प्रबन्ध नहीं किया तो रोटी हमारे लिये संकट बन सकती है।

आज पाकिस्तान और चीन निरन्तर इस बात की ताक में रहने वाले हैं कि हिन्दुस्तान पर धावा किया जाय और किस प्रकार हिन्दुस्तान को परास्त किया जाय। आप देखेंगे कि भारत की उत्तरी सीमा पर भारत चौकियां लगा कर बैठा था, कुछ फिर राजस्थान की लम्बी सीमा पर चौकियां स्थापित करके निगरानी करनी पड रही थी, इस युद्ध के समय पंजाब और दूसरे स्थानों पर जहां हमने कब्जा किया वहां चौकियां रखकर निगरानी करनी पड़ेगी, खर्चा ज्यादा है, ज्यादा टैक्स देने की जनता में क्षमता नहीं, जनता के उबाल पर उसका सर्वस्व ले सकते हैं, इसका भी अन्त आने वाला है, जनता कितना दे सकती है, इसकी भी सीमा है, उस सीमा के बाहर टैक्स लगाने की व्यवस्था को तो वह जनता को सह्य नहीं होगी। इसका एक ही उपाय है सरकार अपने एडमिनिस्ट्रेशन के खर्चे में कटौती कर, अपने एडमिनिस्ट्रेटिव खर्चों में इस प्रकार की इकोनोमी करें, जैसे मुख्य मंत्रीजी ने कहा कि हमें सोशियल सर्विसेज नहीं मिलती हैं तो बर्दाश्त किया जा सकता है, पर इसके अलावा और आइटम्स हैं जिनमें कटौती की जा सकती है। यदि सरकार चाहे तो हम विरोधी दल के सदस्य बैठ कर बता सकते हैं, जहां खर्च को कम करने की आवश्यकता है, जहां वेस्टेज हो रहा है, उसको रोकने की आवश्यकता है, जो अतिरिक्त भार हमने अपने ऊपर ले रखा है, उसको कम करने की आवश्यकता है। मैं मुख्य मंत्रीजी से निवेदन करूंगा कि मिल-जुल कर इस प्रकार के कदम उठावें, इससे अगर कोई लोग नाराज होते हैं तो उसकी परवाह न करें। स्टेट एक्सपेन्डीचर में इतनी कटौती करदें कि जिससे जनता में विश्वास पैदा हो जाय कि एक एक पैसा जो हम टैक्स के रूप में देते हैं, उस एक एक पैसे का उपयोग होता है, आज हमारे यहां फूड प्रोब्लेम इकोनोमी का प्रश्न है, आन्तरिक सुरक्षा का प्रश्न है, इनको हम सतत सतर्क रह कर सोल्व करें। साथ ही में यह निवेदन करूंगा कि फौजियों के बारे में जो घोषणाएं सरकार ने की हैं. उनका पूरी तरह से पालन करें।

मैं एक सुझाव रखना चाहूंगा, मुख्य मंत्रीजी ने स्वीकार किया, इस सदन ने स्वीकार किया, देश ने स्वीकार किया कि हमारे नौजवानों ने मैंटल शो किया, एक इतिहास बनाया, उनके बलिदानों से हर व्यक्ति प्रेरणा लेना चाहता है। राजस्थान सरकार से मैं निवेदन करना चाहूंगा कि राजस्थान में उन सारे राजस्थान के नौजवानों का जिन्होंने महान् वीरता दिखाई है, राजस्थान के जो बहादुर बलिदान हुए हैं, उन पर जो आश्रित हैं, उन सारे व्यक्तियों को एक स्थान पर एकत्रित करके मेला लगावें, उनका स्वागत करें, उनका सम्मान बढ़ावें, उनकी आर्थिक स्थिति को बढ़ाने की योजना, उसमें

Page No 68

(श्री भैरोंसिंह)

जनता का पूरा सहयोग होगा, मुख्य मंत्री जी मानते होंगे कि जनता उस सहयोग में किसी तरह की कमी नहीं रखेगी। सरकारी स्तर पर इसकी लिस्ट बनायें, उनके प्रति पूर्ण सम्मान प्रदर्शित किया जाय। ताकि फिर कभी युद्ध आये तो सैनिकों के दिलों में इस बात की चिन्ता नहीं रहेगी कि मेरे परिवार का क्या होगा। उनको केवल यही एक चिन्ता रहेगी कि युद्ध के मैदान में आगे बढ़ें। तो राजस्थान की हुकूमत राजस्थान के सैनिकों का सम्मान करने के लिये इस प्रकार का मेला लगावें। सरकार की सामर्थ्य हो तो परम वीर चक्र, महावीर चक्र, वीर चक्र जिन बहादुरों को मिले हैं उन सब को महाराणा प्रताप की इस भूमि में लाकर उनका सम्मान करें। यह राजस्थान की ओर से ही नहीं सम्पूर्ण देश की ओर से सम्मान होगा। इससे उनके परिवार के लोग गौरवान्वित होंगे और बाकी लोगों को प्रेरणा मिलेगी।

इन्हीं शब्दों के साथ में, मुख्य मंत्रीजी ने जो प्रस्ताव रखा है उसका समर्थन करते हुए अपना स्थान ग्रहण करता हूं।

श्री रामकिशन (वैर) : अध्यक्ष महोदय, अभी अभी मुख्य मंत्रीजी ने जो प्रस्ताव प्रस्तुत किया है, उसका मैं समर्थन करता हूं। लेकिन इस युद्ध के बाद जो देश की हालत हुई है, या आगामी १०-१५ सालों में जो प्रश्न हिन्दुस्तान के सामने खड़े होने वाले हैं उनके लिये आवश्यकता है कि राजस्थान के जितने चैतन्यशील व्यक्ति हैं वे इन सब पर गम्भीरता से विचार करें। हमारी सेनाओं ने जो वीरता दिखाई है उसके लिये सारा देश आभारी है, उनका अभिनन्दन करता है और उनके प्रति कृतज्ञता प्रकट करता है और जो योद्धा वीरगति को प्राप्त हुए हैं उनको हजारों सालों तक, जब तक हिन्दुस्तान जीवित रहेगा, उन्हें श्रद्धान्जलि अर्पित करता रहेगा। पर जो प्रश्न अब हमारे सामने खड़े होने वाले हैं, वह हमारी सरकार के लिये और देश की जनता के लिये सोचने की बात है। पाकिस्तान के विदेश मंत्री ने युद्ध विराम के कुछ घंटे पहले उसके बाद और उससे पहले भी कहा है कि हम हिन्दुस्तान के साथ १ हजार साल तक युद्ध जारी रखेंगे। हिन्दुस्तान की सरकार यह कभी नहीं चाहेगी कि वह एक इंच भी विदेशी जमीन पर कब्जा करे। मैं यह कहूंगा कि इसे किसी पागल आदमी का प्रलाप न समझें, या किसी दम्भी आदमी का भाषण न समझें, पाकिस्तान सरकार का एक जिम्मेदार आदमी है, उसका यह भाषण है। इसलिये मैं हिन्दुस्तान की सरकार से और राजस्थान की सरकार से निवेदन करना चाहूंगा कि हम अपनी रक्षा की एक हजार साल की पूरी तैयारियां करें।

हमने युद्ध में सफलता प्राप्त की है, हमारे देश की फौजें, हमारे देश की जनता और सरकार बधाई के पात्र हैं, पर जो आने वाले संकट हैं, साधारण संकट नहीं हैं, हमें इस पर बड़ी गम्भीरता से सोचना होगा कि जो संकट आगे होने वाले हैं, उनसे बचने के लिये हमें क्या उपाय करने चाहियें ?

हमने चाहा था कि शान्ति के साथ भाईचारे से, सह-अस्तित्व के सिद्धान्तों पर अमल करते हुए रहें पर पाकिस्तान एक पड़ौसी का साधारण धर्म भी नहीं निभा सका, वह एक हजार साल तक के युद्ध की घोषणा करता है तो मैं चाहूंगा कि नये ढंग से राष्ट्र का हम निर्माण करें और योजनाओं में उत्पादन को

(श्री रामकिशन)

प्रमुखता दें। यह मेरी मंशा कभी नहीं हो सकती कि हमारे इस राष्ट्र को केवल सैनिक, फौजी तैयारियों का राष्ट्र बना दिया जाय जिससे कि आम जनता की सुख-सुविधाएं छिन जायं, आज एशिया का कोई भी राष्ट्र नहीं है जो अपने आपको केवल फौजी तैयारियों का सैनिक राष्ट्र बना सके, पाकिस्तान की तो औकात ही क्या है बल्कि चीन भी जो हमें गम्भीर परिणामों, कार्यवाहियों का कहता है, उसकी भी हालत ऐसी नहीं है कि अपने देश को केवल सैनिक देश में परिणत करदे। बहुत बड़े मिलिट्री बजट को आज एशिया का कोई राष्ट्र बर्दाश्त नहीं कर सकता। तो युद्ध की अनिवार्यता हमारे ऊपर चीन और पाकिस्तान की सांठ-गांठ से रखी जा सकती है। मुख्य मंत्री ने कहा और विरोधी दल के नेता ने भी कहा कि हमें सतर्कता रखनी है, पर कौनसी सतर्कता? आज की परिस्थितियों में सबसे आवश्यक यह है कि हम अपनी आन्तरिक व्यवस्था को मजबूत करें और आम लोगों को यह महसूस करने की प्रेरणा दे सकें, कोई वेतनभोगी सेना इतनी बड़ी संख्या में देश में खड़ी नहीं की जा सकती जो चीन का मुकाबला करे, इसलिये ३० साल के जो स्वस्थ्य नवयुवक हैं उनको फौजी शिक्षा दी जाय और इस तरह देश के स्वस्थ्य नवयुवकों की सेना तैयार की जाय। चीन की नियमित सेना है उसके अलावा करोड़ों की संख्या में अनियमित सेना है। हिन्दुस्तान भी अगर पाकिस्तान और चीन का मुकाबला करना चाहता है तो उसे स्वस्थ्य नवयुवकों को फौजी शिक्षा देनी होगी। इसके साथ ही मैं चाहूंगा कि हमारी विदेश नीति में अब तक जो ढिलाई रही है उसमें परिवर्तन करना होगा। हमारी विदेश नीति निरर्थक सिद्धान्तों के आधार पर चलती रही, उनके पीछे कोई दम नहीं था, केवल थोथी नीति के पीछे चलती रही।

अगर हमें पाकिस्तान से लड़ना है तो पख्तून आंदोलन को मजबूत करना पड़ेगा। आज हमारे नेता, खान अब्दुल गफ्फार खां, जितने भी, हमारे जीवित नेता हैं राष्ट्र में, उन सब में ज्यादा सम्मानित व्यक्ति हैं। उनको राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय पैमाने पर नैतिक समर्थन करना पड़ेगा। हमें दक्षिण पूर्व एशिया के थोथे नारों से बचना पड़ेगा।

सरकारी पार्टी के प्रवक्ताओं को भाषण बंद कर देना चाहिए, कोई राय जाहिर न करें। सभी जानते हैं कि हिन्दुस्तान की आंतरिक हालत आज ऐसी नहीं है कि चीन जैसे राष्ट्र से मुकबला कर सकें। अमरीका चीन से यदि भिड़ता है तो हमें चुप लगानी चाहिए। न हमारा कहीं धर्म नष्ट होता है, न सिद्धांत नष्ट होता है। केवल हम सिद्धांतों का नारा लगाएंगे तो हम चीन के बढ़ते हुए प्रभाव को रोक नहीं पाएंगे। जब दो जर्मनी हो सकते हैं, दो वियतनाम हो सकते हैं, दो कोरिया हो सकते हैं, दो चीन हो सकते हैं, तो हमें फोर्मूसा सरकार को भी मान्यता देने के लिए कोई राय बनानी चाहिए जिससे हिन्दुस्तान और हिन्दुस्तान के मित्र देश भी फोर्मूसा को मान्यता दें। जब तक हम चीन को उनके पड़ौसियों से नहीं उलझाते तब तक विदेश नीति में हमें सफलता नहीं मिल सकती।

आज खास तौर से संयुक्त राष्ट्र संघ का जो आचरण है एशियाई राष्ट्रों के लिए वह मालिक नौकर जैसा है। पाकिस्तान हिन्दुस्तान की लड़ाई में उन्होंने युद्ध-विराम के आदेश

(श्री रामकिशन)

दिए हैं। वियतनाम के बारे में वह चुप क्यों रहा, हंगरी में युद्ध हुआ, वह चुप क्यों रहा मिस्र पर आक्रमण हुआ वह चुप क्यों रहा? तब संयुक्त राष्ट्र संघ कहां गया था? इसलिए हम भारत सरकार से चाहेंगे कि संयुक्त राष्ट्र संघ के चार्टर में परिवर्तन के लिए वह पहल करे, उसमें कितनी सफलता मिलती है उस पर बहस न करें, हमें अपनी राय बनानी चाहिए।

सुरक्षा परिषद में ५ बड़े राष्ट्र स्थाई सदस्य हैं जो गोरे लोग हैं और उनका प्रतिनिधित्व करते हैं और उनकी स्थिति एशिया व अफ्रीका में निहित स्वार्थों की है। हमें कभी सुरक्षा परिषद पर गुस्सा आता है, कभी ब्रिटेन पर गुस्सा आता है, लेकिन उनके कारणों को समझ नहीं पाए। इसलिए हमें मांग करनी चाहिए कि यह अंतर्राष्ट्रीय वर्ण व्यवस्था समाप्त करनी चाहिए।

अभी कुछ दिन पहले मैं दिल्ली गया था। मेरी घाना के विद्यार्थियों से बात हुई थी। उनका कहना था कि अगर भारत सरकार इस मामले में नेतृत्व करे तो एशिया अफ्रीका के राष्ट्रों का मन जीत सकता है। आज चीन का फौजी मोर्चे पर मुकाबला करने की हम सोचते हैं, तैयारी करते हैं लेकिन जो प्रचार का मोर्चा है उससे एशिया और अफ्रीका में उसका प्रभाव बढ़ता जा रहा है; इस युद्ध से हमको यह जानकारी प्राप्त हो गई है, इंडोनेशिया और पाकिस्तान को उसने पूरी तौर से पिछलग्गू राष्ट्र बना दिया है। इसलिए हमें सारी विदेश नीति को दुबारा बनाना होगा।

हमने अरब राष्ट्रों को खुश करने के लिए इजराइल को मान्यता नहीं दी है जिनमें ईरान व जोर्डन भी हैं। हमें इजराइल को भी मान्यता देनी चाहिए और अरब राष्ट्रों से भी संबंध नहीं तोड़ने चाहिए। आज पाकिस्तान के पक्ष में जोर्डन बोला, हमारी तरफ से कोई नहीं सुरक्षा परिषद में बोला। एक मलेशिया राष्ट्र है जिसने दोनों बार हमारा साथ दिया है। लेकिन उसके बारे में हमारी नीति क्या है? जब चीन ने आक्रमण किया तो मलेशिया के प्रधान मंत्री ने खून दिया लेकिन जब मलेशिया पर आक्रमण हुआ तो भारत सरकार ने नैतिक वक्तव्य देने के बाद मलेशिया की इंडोनेशिया के खिलाफ कोई मदद नहीं की। हम इंडोनेशिया के खिलाफ मलेशिया की मदद करें। इजराइल को मान्यता दें। चीन के मुकाबले हम फारमोसा को मान्यता दें। विभाजन बहुत दुखदाई होता है। यह हमने जर्मनी में देखा, कोरिया में देखा और वियतनाम में देखा। इसलिए हमें सारी राष्ट्र की नीति, पर राष्ट्र नीति को नए सिरे से तैयार करना चाहिए। विदेशी मामलों में जो राष्ट्र हमारे मित्र हैं, उनकी हम पूरी पूरी मदद करें। उसका मतलब यह नहीं कि हम उनके मामलों में दखल दें। लेकिन जैसे मैंने अब्दुल गफ्फार का नाम लिया। इंडोनेशिया में डॉक्टर सुल्तान शहरयार ने जो आंदोलन छेड़ा, भारत सरकार ने कोई उसकी मदद की? बल्कि उनकी किताबों पर भी सरकार ने पाबंदी लगा दी। तो मेरा कहना है कि थोथे सिद्धांतों से अलग होकर वास्तविकता की जमीन पर खड़े होकर मोहरे तैयार करें। जहां जिनके विवाद हैं वहां उलझनों के लिए भूमिका तैयार करें। हम तिब्बत सरकार को मान्यता दें। बहुत से लोग चीन से घबराते हैं। मैं समझता हूं कि चीन के पास ताकत है। लेकिन मैं सदन की जानकारी के लिए बताता हूं कि चीन से घबराने की ज्यादा जरूरत नही है। आज जो युद्ध का

(श्री रामकिशन)

मापदंड होता है, कारखानों का मापदंड होता है वह इस्पात के उत्पादन पर निर्भर करता है। दुनिया में ३६ करोड़ टन इस्पात का उत्पादन होता है जिसमें से १० करोड़ टन से ज्यादा उत्पादन चीन के पास नहीं है। लेकिन अकेले रूस और अमरीका १७-१८ करोड़ टन इस्पात उत्पादन कर रहे हैं, लेकिन हमारा टैक्निक किस तरह से चीन से मुकाबला करे उस टैक्निक में परिवर्तन करने की आवश्यकता है। आज लोग कहते हैं कि चीन शक्तिशाली है। मैं मानता हूं कि एशिया में चीन शक्तिशाली है, लेकिन अगर वह इतना शक्तिशाली होता तो हांगकांग पर क्यों नहीं आता? आकर तो देखे। मेकाओ और फारमोसा पर नहीं आ सकता। इसलिए हमें अंतर्राष्ट्रीय नीति में नया संशोधन लाकर खड़ा होना चाहिए, यह भावनात्मक भाषणों से नहीं होगा। हमने थोड़े से सेवर जेट्स गिरा दिए, लेकिन जो खतरनाक पहलू, जो उलझाने वाले हैं, उन पहलुओं से लड़ने के लिए राजनैतिक परिवर्तन करने का मैं सुझाव दूंगा जिससे हम एशिया में चीन के बढ़ते हुए प्रभाव को रोक सकें; अफ्रीका में उसके प्रभाव को रोक सकें।

युद्ध दुखदाई होता है। जिनके बच्चे मर गये हैं उनकी वेदना क्या है, आज जिनके पतियों ने वीरगति पाई है उनके मन की क्या हालत है? इसलिए कोई भी युद्ध का समर्थक नहीं हो सकता। चीन अपनी विचारधारा के द्वारा यह तय कर चुका है कि केवल कम्युनिज्म ही युद्ध की गिरी हुई स्थिति को सुधारेगा, माओत्से तुंग और चाऊएनलाई ने किताब लिखी है जिसमें एशिया की ग्रामीण दशा का उन्होंने वर्णन किया, उसमें जो प्रचार किया गया है वह एशिया के करोड़ों लोगों को जीत सकता है। इधर हमारी भारत सरकार दिन में समाजवाद, रात में पूंजीवाद, शाम को सामन्तवाद और जैसा मुल्ला वैसी बात करती है, ऐसी बात नहीं हो सकती। आपको राजनैतिक मोर्चे पर लड़ना है, आपको उत्पादन बढ़ाना है तो देश को सभी तरह से तैयार करना पड़ेगा। जनता सरकार के साथ मिल कर सहयोग देती है, लेकिन मैं सरकार से पूछना चाहता हूं कि क्या सरकार भी सहयोग लेने की स्थिति में है?

अभी विरोधी दल के माननीय नेता ने अपील की कि सरकार बनायें विरोधी पार्टी के साथ मिलकर। माननीय नेता बुजुर्ग भी हैं। मैं इतना ही निवेदन कर सकता हूं कि उनकी पार्टी की संयुक्त सरकार बनाने की नीति हो सकती है, हम तो संयुक्त सरकार बनाना ही नहीं चाहते, आप तो, हम यह चाहेंगे कि समाजवादी नीति अपना लें और अपनी अन्तर्राष्ट्रीय नीति में परिवर्तन करलें संयुक्त सरकार कांग्रेस के साथ चल सके। मेरा अपना विचार है, सम्भव नहीं है क्योंकि खुद कांग्रेस की जो हालत है, उस पर इस समय कहने का मौका नहीं है कि हम विचार करें, वह किसी से छिपी नहीं है। नेता महोदय से निवेदन करूंगा कि उनकी तो आपस में ही नहीं निपट रही हैं, अगर वहां जावेंगे तो झगड़ा फैल जावेगा। हम सरकार को तन से, मन से और धन से मदद करने के लिये तैयार हैं। नीतियां यदि स्पष्ट हों तो कहीं भी झिझक नहीं है। सरकार सहयोग के लिये कहती है; हम सहयोग देने के लिये तैयार हैं। हम आप से जानना चाहेंगे कि डी. आई. आर. के अन्तर्गत आत्मारामजी को आपने डाल दिया, केदारनाथजी के वे आदमी हैं, क्या वे चीन के एजेन्ट हैं? यही

(श्री रामकिशन)

आचरण सरकार की ओर से होता है तो जनता का सरकार को सहयोग प्राप्त नहीं होता है। अतः आपको इस प्रकार के आचरण को बदलना पड़ेगा। डी. आई. आर. के अन्तर्गत जो लोग गिरफ्तार हैं उनके लिये मुझे सरकार से उम्मीद है कोई विचार करेगी। आप दंभी, बकवासी और कुछ कह सकते हैं, लेकिन इस प्रकार जब आप लोगों को डी. आई. आर. के अन्तर्गत जेल में डाल देते हैं तो किस प्रकार सहयोग करें? हम देश के लिये अपना हर तरह से सहयोग देंगे, लेकिन आपके इस प्रकार के आचरणों को देख कर लोगों का मन नहीं होता है कि आपको इस प्रकार सहयोग दें। मुकदमा चला कर आप अगर वे दोषी हैं तो उनको जनता के सामने लाएं। आपने हजारों लोगों को डी. आई. आर. के अन्तर्गत डाल रखा है। जो चीन समर्थक नहीं थे रूस समर्थक हो गये। एशिया में जो आज एक नये जीवन का उदय हो रहा है उसके प्रति आपकी गलत नीति है। खाद्यान्नों के मामलों में आपके गलत मुकदमें चल रहे हैं, डी. आई. आर. में गिरफ्तार कर लिया। उन मुकदमों को आप वापिस लीजिये। जब संकट आवे तब आप कहें कि देश पर संकट आगया है, सहयोग करो, और जब आनन्द का मौका आये तब माथुर साहब और मिर्धा साहब एक हैं। कर्त्तव्य के कारण हम आपके साथ रहेंगे। लेकिन जब तक आचरण के द्वारा सरकार साबित नहीं करेगी तब तक करोड़ों का मन सरकार नहीं जीत सकेगी। सरकार को हर तरह से लोग सहयोग दे सकते हैं, आपको उनका हृदय जीतना है अपने आचरण के द्वारा।

आपने योजनाओं के लिये कहा। लेकिन हमारी योजना बनाने वाले लोग हैं, जो प्लानर्स हैं, उनको, मैं यह नहीं कहता कि योजना के प्रति वास्तविकता का ज्ञान नहीं है, लेकिन पूर्वाग्रह जरूर है। आंकड़े देकर बता देते हैं कि ऐसा हो गया। आज स्थिति ऐसी है कि चीन और पाकिस्तान से लड़ना है। एशिया का कोई देश केवल मिलिट्री बजट नहीं बना सकता। दो, तीन चीजें जरूरी हैं उत्पादन, दूसरा इस्पात, नदी घाटी योजना और बिजली और खेती का काम, इनको आप प्राथमिकता दें। बाकी जितना पैसा है वह आप नयी सेना तैयार करने के लिये, नये नये अस्त्र-शस्त्र तैयार करने के लिये दे दें। ऐसे तरीके अपनायें तो राष्ट्र बच सकता है। हजार साल भी अगर युद्ध चले तो चल सकता है और हिन्दुस्तान बच सकता है। लेकिन यदि केवल सेना पर ही ध्यान दिया, सैनिक बजट ही बनाया गया और देश में उत्पादन, नदी घाटी योजनाओं और बिजली, इस्पात आदि पर ध्यान नहीं दिया, सिंचाई के साधनों और खाद्यान्नों में आत्म-निर्भरता के लिये ध्यान नहीं दिया तो हम आन्तरिक दृष्टि से इसको हल नहीं करेंगे। सरकार योजना के सम्बन्ध में विरोधी लोगों को बुलाये और एक एक एरिया में, अलग अलग एक एक भाग में क्या हो सकता है और क्या किया जा सकता है उस पर विचार करे। केवल हम सतर्क हैं, यह कह देने मात्र से काम नहीं चलने वाला है।

राजस्थान में होमगार्ड्स बना रहे हैं, सिविल डिफेन्स की ट्रेनिंग दे रहे हैं लेकिन बगैर वेतन वाले जितने भी लोग हैं, स्कूलों में हैं और दूसरी जगह हैं, जो भी ३५ चालीस वर्ष तक के लोग हैं उनको, चाहे सशस्त्र करें

(श्री रामकिशन)

या नहीं, सशस्त्र करने का महत्व नहीं है, फ़ौजी ट्रेनिंग अवश्य दी जाय, जिससे हमारे सीमा के मोर्चों पर हमारे नियमित सैनिक देश की रक्षा करें और ये आन्तरिक रक्षा करें। यदि आपको केवल सैनिक बजट बढ़ाना है और टैक्स लगाना है तो इससे चीन जो चाहता है उसका मक़सद पूरा हो जावेगा। चीन यही तो चाहता है कि आन्तरिक, आर्थिक और दूसरी सारी व्यवस्था आपकी छिन्न-भिन्न होजाय और उसको पैठने का मौका मिल जाय। मैं समझता हूं कि यदि आपने इस प्रकार की ट्रेनिंग दी तो नौजवान लोगों की एक मिलिशिया तैयार हो जायगी और आपको टैक्स भी नहीं लगाना पड़ेगा।

मैं इतिहासकार नहीं हूं और न ही मुझे इसका बड़ा ज्ञान है। लेकिन मैं एक बात निवेदन करना चाहूंगा। आखिर यह हिन्दुस्तान बार बार गुलाम क्यों हुआ है? अब की बार ही हम जीते हैं। हमें इसकी खुशी है। लेकिन जो पराजित और असम्मानित राष्ट्र होता है उसका आगे जाकर क्या परिणाम होता है? जर्मनी पराजित हुआ तो दूसरी बार भयंकर होकर आया। आज का पाकिस्तान पराजित रह जाता है तो आगे जाकर भयंकर रूप से खड़ा हो सकता है। हमारी यह इच्छा नहीं है कि हम किसी दूसरे राष्ट्र की एक इन्च भूमि भी दबायें, हमारी इच्छा नहीं है कि हम पाकिस्तान की एक इंच जमीन भी लें। अगर वह गड़बड़ी करता है तो उसको सैनिक दृष्टि से खत्म करें या कॉन्फेडरशन बनायें, इसके सिवाय और कोई बात नहीं रहती है। वर्ना हिन्दुस्तान एशिया को जो ज्ञान देना चाहता है वह नहीं दे पायेगा। अब वह समय आ गया है जब कि हिन्दुस्तान की सरकार की अपनी अन्तर्राष्ट्रीय नीति में भी बहुत बड़े परिवर्तन की आवश्यकता है। जब कोई राष्ट्र पीड़ित था, अल्जीरिया में जब स्वतन्त्रता संग्राम चल रहा था, उस समय हमारे केवल-उनको संदेश जाते थे। वहां पर चीन अस्त्र-शस्त्र लेकर नहीं गया लेकिन उसने साम्राज्यवादियों को लताड़ा और अल्जीरिया का मन उसने जीत लिया। ब्रिटेन ने जो इस सन्दर्भ में कार्यवाहियां की उनका जायज़ा लीजिये और राष्ट्रमन्डल में रहने के मामले में पुनर्विचार करिये। राष्ट्र-मण्डल में रहने का उपयोग क्या है, यह पहले समझ लें। नुक़सान यह रहा है कि राष्ट्र-मंडल में रहने के कारण जो देश ब्रिटेन के खिलाफ़ हैं उनका हम मन नहीं जीत सकते। हमारे बारे में एशिया और अफ्रीका के लोग कहते हैं कि राष्ट्र-मंडल में रहने के कारण हमारी उनके साथ भाई-बन्धी है और चीन का प्रसार इसलिये काम कर जाता है। जो सरकार की घोषणायें हुईं और बी. बी. सी. का जो प्रचार हुआ उससे यह प्रकट होता है कि ब्रिटेन हमारे खिलाफ रहा। तो फिर हमारा राष्ट्र मंडल में बने रहने का क्या कारण है? मैं चाहूंगा, कांग्रेस वर्किंग कमेटी के लोग भी यहां मौजूद हैं, नेहरूजी के समय का नेतृत्व नहीं है, नया नया नेतृत्व उभर रहा है, इस पर विचार करें और अपनी नीति में परिवर्तन करें जिससे एशिया और अफ्रीका के उदयमान देशों को अपने साथ रख सकें और चीन के प्रसार को रोक सकें। यदि हम आज जो हमारी हालत है, जो पेचीदगियां हैं उनसे नहीं निकलें तो जो बहुत बड़ा संकट आने वाला है, हम अपनी जीत के गर्व में ही न रह

(श्री रामकिशन)

जांय, उस संकट का मुकाबला हम कूट-नीतिक तरीके से, राजनैतिक तरीके से और उत्पादन और सैनिक तरीके से हल नहीं करेंगे तो हम उस संकट से उभर नहीं सकेंगे।

सरकार ने जो कुछ कहा है और अन्य दलों के लोगों ने भी जो कुछ कहा है मैंने उसको ध्यान से सुना है। आज की सरकार के लिये, मेरा यह मानना है, जो सरकारी बैन्चेज पर बैठे हैं वे सभी देशभक्त नहीं हैं यह मैं नहीं मानता; उनमें हमसे ज्यादा देश के प्रति प्यार है। उनमें से बहुतों ने हिन्दुस्तान की आज़ादी की लड़ाई में बड़ी बड़ी कुर्बानी की है, उसके लिये कष्ट सहे हैं, उनकी ईमानदारी में मुझे शक नहीं है। लेकिन आज एक बात का जरूर विचार बरता जा रहा है कि जिस प्रकार पश्चिमी राष्ट्र काश्मीर की समस्या को बनाये रखना चाहते हैं उसी प्रकार हिन्दुस्तान और पाकिस्तान की सरकार का भी इस समस्या को बनाये रखने में स्वार्थ है। पश्चिमी राष्ट्र यह सोचते हैं कि यदि इस समस्या का हल हो जायगा तो हिन्दुस्तान का प्रभाव एशियाई देशों पर बढ़ जायगा। आपको योजनाओं के लिये पैसा चाहिये, आप पश्चिमी राष्ट्रों की तरफ़ देखते हैं; आज पश्चिमी राष्ट्र हम पर आर्थिक दबाव डाल रहे हैं उसी प्रकार इंग्लैन्ड और पाकिस्तान की सरकारें भी यही चाहती हैं कि काश्मीर की समस्या को बना कर रखा जाय।

अध्यक्ष महोदय, राष्ट्र संघ का साफ साफ प्रस्ताव था उसके अनुसार युद्ध विराम और पांच अगस्त की स्थिति को अलग अलग नहीं किया जा सकता। अब उस बारे में हिन्दुस्तान की सरकार क्या करेगी, क्या न करेगी, दूसरी बात है। जहां तक पांच अगस्त की स्थिति पर लौटने का सवाल है, मैं यह निवेदन करना चाहता हूं हमारा लाहौर पर कब्जा करने का इरादा नहीं, रावलपिंडी पर हम नजर नहीं दौड़ा सकते, लेकिन जिन जिन कारणों से युद्ध हुआ है जब तक संयुक्त राष्ट्र संघ उन कारणों को दूर करने का आश्वासन नहीं देता, घुसपैठियों को रोक नहीं सकते तब तक हिन्दुस्तान को ५ अगस्त की पोज़ीशन पर आने के लिये तैयार नहीं होना चाहिये, ५ अगस्त की सीमा रेखा को सीमा रेखा नहीं माना जाय।

राष्ट्र संघ के सेक्रेट्री जनरल, ऊ थांट का आदेश मिल गया है भारत सरकार को कि ५ अगस्त की पोज़ीशन पर आने की तैयारी करो, हम प्रेक्षक भेज रहे हैं; जिस प्रकार एक मालिक नौकर को आदेश देता है, मालिक का आदेश मिल चुका। अब हम देखते हैं कि उसका क्या जवाब दिया जाता है? हम यह मानते हैं कि युद्ध अनिवार्य नहीं होता और न युद्ध से कोई स्थाई लाभ ही मिलता है, युद्ध हमेशा बरबादी के कारण रहे हैं लेकिन राष्ट्र के जीवन में ऐसे भी मौके आते हैं जब उनके जीवन-मरण का सवाल होता है। मरने के बाद में भी राष्ट्र रक्षा का सवाल खड़ा हो जाता है। उस समय में युद्ध अनिवार्य हो जाता है। कोई भी राष्ट्र युद्ध नहीं चाहता लेकिन जब राष्ट्र के सम्मान का सवाल आता है, अपनी सीमा के खतरे का सवाल आता है तो उस समय कोई भी जीवित राष्ट्र इस खतरे को बरदाश्त नहीं कर सकता। ऐसे समय में हिन्दुस्तान की सरकार को पूरी तरह से सभी पार्टियों का सहयोग मिला है

Page No 75

(श्री रामकिशन)

और मिलता रहेगा। चाहे सरकार का आचरण आन्तरिक मामलों में किसी भी प्रकार का हो।

अन्तर्राष्ट्रीय मामलों में, अध्यक्ष महोदय, चूंकि यह आज का विषय नहीं है लेकिन चूंकि मुख्य मन्त्रीजी कांग्रेस वर्किंग कमेटी के मेम्बर हैं, मैं चाहता हूं वे इन सम्भावनाओं पर विचार करें; तिब्बत के मामले में, फार्मोसा के बारे में, इजराइल के बारे में, अब्दुल गफ्फारखां के बारे में और सुलतान शहरयार के बारे में हम किस प्रकार का रुख अख्तियार करें, इस बारे में हमें विचार करना होगा।

आज हमने देख लिया है कि सब राष्ट्रों के यह जानते हुए कि हमारे पर आक्रमण, हमला हुआ है, हमारे पर पहले आक्रमण किया गया है लेकिन कोई भी राष्ट्र हमारी मदद के लिये नहीं आया। चाहे उनके कुछ भी स्वार्थ हों आज हम अकेले पड़ गये हैं। प्रधान मन्त्री ने कहा है, हिन्दुस्तान के इस सत्रह साल के शासन-काल में आज पहली दफा हमारे प्रधान मन्त्री ने यह बात कही है कि हमें अपनी ताकत अपने आप पैदा करनी होगी। लालबहादुरजी के बारे में मेरा ऐसा ख्याल बन गया था कि हमारे दा साहब और लालबहादुरजी एक ही सरीखे होंगे। लेकिन उनके मुंह से यह बात सुनकर कि हमें अपने पैरों पर ही खड़ा होना है, अपनी शक्ति अपने काम में आ सकती है इस चीज को हिन्दुस्तान मानकर चले। यह केवल सैनिक शक्ति के मामले में यह बात लागू नहीं होती बल्कि अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में, कूटनीतिक क्षेत्र में यही चीज़ शक्ति बनाने की श्रोत है। मैं चाहता हूं कि इन सारे मामलों पर गम्भीरता पूर्वक विचार करें।

जहां तक सैनिकों के सम्मान का सवाल है उनके प्रति सहानुभूति प्रगट करने का सवाल है, राष्ट्र का कोई भी नागरिक उनकी कृतज्ञता के प्रति आभारी नहीं होगा, यह मैं नहीं मान सकता। मैं एक बात के लिये इस अवसर पर खास तौर से निवेदन करना चाहूंगा कि इस संकटकालीन स्थिति में जिस प्रकार से हिन्दू-मुस्लिम एकता का प्रदर्शन हुआ वह हमारे लिये बहुत ही श्रेष्ठ बात है। ऐसे समय में यहां के लोगों को यह खतरा था, यहां तक कि हम जो साम्प्रदायिकता में विश्वास नहीं करते उनको भी खतरा था, हमारे मन में भी यह शंकायें थीं कि ये लोग विघ्न डालेंगे। इस देश के अन्दर कुछ तत्व ऐसे भी हैं जो यह मानते हैं कि एक सम्प्रदाय ऐसी है जो राष्ट्रभक्त नहीं हो सकती उनकी यह शंका भी दूर हो गई।

अध्यक्ष महोदय, मैं और मुकुटबिहारीजी एक जगह कल भोजन करने गये थे वहां हमने सुना कि यह जो मुसलमान इस युद्ध में मरे हैं वैसे ही मायने में देश के लिये मरे हैं या दबाव में आकर मारे गये। इस तरह के विचार करोड़ों व्यक्तियों के मन में रहते हैं, लेकिन ऐसे भी दल हैं जिनका साम्प्रदायिकता में विश्वास नहीं, वे यह मानते हैं उन्होंने जो देशभक्ति बतायी है उसकी प्रशंसा होनी चाहिये। और जो देश के प्रति गद्दार हों चाहे वे मुसलमान हों, चाहे हिन्दू हों, चाहे कांग्रेस के लोग हों, चाहे सोशियलिस्ट पार्टी के हों, चाहे कम्यूनिस्ट पार्टी के हों उनकी निन्दा होनी चाहिये। आज देश जिस संकट-काल से गुज़र रहा है उसमें देश का हर व

(श्री रामकिशन)
देश के कल्याण के लिये, इसकी समृद्धि के लिये, इसकी ताकत को बढाने के लिये पूरी तौर से योग देगा। इन शब्दों के साथ मुख्य मन्त्री जी ने जो सदन के सामने प्रस्ताव रखा है उसका मैं पुनः समर्थन करता हूं।

श्री रामानन्द अग्रवाल (अलवर) : अध्यक्ष महोदय, मैं मुख्य मन्त्री जी द्वारा जो हमारे बहादुर सैनिकों ने, जवानों ने इस पाकिस्तान के विरुद्ध युद्ध में मोर्चे पर जाकर अपनी बहादुरी शौर्य और कुर्बानी से देश भक्ति का परिचय दिया है और जो बहुत से वहां पर शहीद होगये हैं उनके प्रति श्रद्धान्जलि एवं तमाम सेना को बधाई देने के लिये जो प्रस्ताव रखा है, उसका समर्थन करने के लिये खड़ा हुआ हूं।

अध्यक्ष महोदय, आज यह हमारे देश के लिये गौरव का विषय है कि हमारे देश की वीरता, हमारे देश का शौर्य हमारे देश की परम्पराओं के बारे में जो कुछ देशों में शंकाएं होने लगी थीं, जो कुछ हमारे लोगों में आत्म विश्वास की भावना का ह्रास होने लगा था, इन बहादुर शूरमाओं ने लाहौर के मोर्चे पर, स्यालकोट के मोर्चे पर, पुंछ, हाजी पीर दर्रे के मोर्चे पर, और बाड़मेर के इलाके से सिन्ध हैदराबाद की तरफ बढ़ कर अपनी वीरता का परिचय देकर पाकिस्तान के क्षेत्र में अपनी भारत माता की रक्षा के लिये आगे बढ़ते हुए कहीं पर १५ मील, कहीं पर तीन मील और कहीं पर ३० मील आगे बढ़ कर वीरता का परिचय दिया है। इस स्थिति में जो इन सैनिकों ने, हमारे बहादुर फौज ने जिस प्रकार हमारे देश की सीमा की रक्षा की है वह हमारे लिये गौरव की बात है। इससे हमारी देश की प्रतिष्ठा को हमारे देश की जनता में, हम लोगों में आत्म गौरव की भावना ही नहीं बढ़ायी बल्कि जो लोग हमारी शक्ति के बारे में सन्देह करने लगे थे, जब चीन का अचानक आक्रमण हुआ उस समय हमारे द्वारा ठीक प्रकार से मुक़ाबले का सामना न करने के कारण हमारी डिफ़ेन्स भी शक्ति में उनको जो सन्देह पैदा होगया था, आज के इस युद्ध ने, हमारे जो मित्र बने हुए थे, देश, उनको भी यह पता चल गया है कि किस तरह के फौलादी इरादे और देशभक्ति की भावना से हमारे जवान पाकिस्तान से लड़े हैं। इस समय में हमारी चाहे कुछ भी थ्योरी रही हो, लेकिन इस संकट-काल में हमारे देश की सभी पार्टियों ने जो एकता का परिचय दिया और हमारी सरकार ने पाकिस्तान के साथ टक्कर ली, उससे दुनिया को मालूम होगया, हिन्दुस्तान का जो अतीत का इतिहास रहा है उस अतीत को इस नये हिन्दुस्तान ने रखने की कोशिश की है।

अध्यक्ष महोदय, आज हमारी सेनाओं ने, सैनिक तरीकों पर जो विजय प्राप्त की है विभिन्न मोर्चों पर वहां हमारी केवल सनिक विजय ही नहीं हुई हमारे सिद्धान्तों की भी विजय हुई है, हमारे विश्वासों की विजय हुई है। जिन सिद्धान्तों के बारे में, विश्वासों के बारे में, हमारे देश में भी कुछ लोग ऐसे थे जिनको उनके बारे में विश्वास नहीं होता था, उन्हीं सिद्धान्तों के आधार पर विजय प्राप्त की है। पाकिस्तान ने जब हमारे देश पर हमला किया था, पाकिस्तान ने जब हमारे जम्मू और काश्मीर के भाग को अपने देश में मिलाने की कोशिश की उसके लिये सन् ४७ में हमला किया गया और अब हमला किया उसके पीछे क्या राज है?

(श्री रामानन्द अग्रवाल)

(२ म. प.)

वह लोजिक, वह टू-नेशन थ्योरी जो मुस्लिम लीग ने हिन्दुस्तान की आजादी के वक्त अंग्रेजी ब्रिटिश इम्पीरियलिस्टों के इशारों पर हिन्दुस्तान के बढ़ते हुए राष्ट्रीय आन्दोलन में फूट पैदा करने के लिये पेश की थी, उसकी बुनियाद पर हमारे देश का बंटवारा हुआ। हिन्दुस्तान और पास्कितान दो देश, हमारे न चाहते हुए भी, बन गये। लेकिन इसके बावजूद पाकिस्तान के नेता इस थ्योरी को आगे बढ़ाते हुए केवल इस कारण कि काश्मीर के अन्दर मुस्लिम ज्यादा हैं इसलिये उनको पाकिस्तान में शामिल होना चाहिये, यह केवल एक दलील थी जो पाकिस्तान आज रख रहा है और आज भी उसको आगे बढ़ाने की कोशिश कर रहा है।

हिन्दुस्तान के राष्ट्रीय आन्दोलन ने हमेशा इस सिद्धान्त को गलत बताया है और उसका मुकाबला किया है। हिन्दुस्तान को एक धर्म निरपेक्ष राष्ट्र बनाने की हमने कोशिश की है। यही कहते रहे हैं कि हिन्दुस्तान एक ऐसा राष्ट्र है जो धर्म निरपेक्ष है, जिसमें कोई भी किसी भी धर्म का मानने वाला हो वह यहां रह सकता है और वे सभी भारतीय हैं जो इस भारत माता की कोख में जन्मे हैं; वे सब उस के लिये काम करेंगे।

आज भी अध्यक्ष महोदय, जो हमने यह लड़ाई लड़ी है और उसके जो परिणाम निकले हैं उनसे साबित है कि यह देश धर्म निरपेक्ष है और जिस धर्म निरपेक्षता को हमने कसौटी बनाई थी उसमें हम खरे उतरे हैं। इस सिद्धान्त में न केवल पाकिस्तान को विश्वास नहीं था, बल्कि दुर्भाग्यवश हमारे देश में भी इस सिद्धान्त के कसौटी पर खरे उतरने में बहुत से लोगों को सन्देह था। मैं समझता हूं कि आज जहां हमने एक ओर सैनिक जीत हासिल की है, वहां दूसरी ओर सैद्धान्तिक जीत भी हासिल की है। हमने पाकिस्तान को न केवल युद्ध के मोर्चे पर ही हराया है, बल्कि राजनैतिक और सैद्धान्तिक मोर्चे पर भी अन्तिम रूप से हरा दिया है। काश्मीर के मुसलमानों ने, हिन्दुस्तान के मुसलमानों ने इस सिद्धान्त के मोर्चे पर पाकिस्तान को हराया है और बतला दिया है कि वे इस देश के धर्म निरपेक्षता के सिद्धान्त में अटूट विश्वास रखते हैं। इस धर्म निरपेक्षता के सिद्धान्त को थ्योरी रूप में ही साबित नहीं कर दिखाया है, पर अमली रूप में भी अपनी कुर्बानियों और खून से सींचकर दिखला दिया है।

अध्यक्ष महोदय, सन् १६४७ में जब पाकिस्तान ने काश्मीर पर हमला किया तो उस वक्त भी पाकिस्तान को यह उम्मीद थी कि काश्मीर के मुसलमान पाकिस्तान का साथ देंगे। पर उनकी वह उम्मीद धूल में मिल गई। वहां के बहादुर नेशनल कॉन्फ्रेन्स के लीडरों ने उनका साथ देने से इन्कार कर दिया। मैं उनमें से केवल एक का नाम लेना चाहूंगा। मीर मक्बूल शेरवानी का नाम आज मैं इस अवसर पर लेना जरूरी समझता हूं। उस महान् वीर ने, उस महान् आत्मा ने काश्मीर में सेकुलरिज्म का झंडा ऊंचा किया श्री जिन्ना की टू-नेशन थ्योरी के खिलाफ धर्म निरपेक्षता के लिये कुर्बानी तक करने का साहस दिखाया। जब पाकिस्तान की फौजें बढ़ती हुई बारामूला पहुंच गई तो शेरवानी, वीर शेरवानी ने अपनी भारत की सेना और काश्मीर की मिलिशिया के साथ मिल कर

(श्री रामानन्द अग्रवाल)

पाकिस्तान की फौजों का मुकाबला करने के लिये जनता का आह्वान किया। पाकिस्तान के कायर रेडरों ने उसकी अकेले में, रात के वक्त, जब उसकी मोटर में पेट्रोल नहीं रह गया था, उसकी कार रुक गई थी तो कायरता से उसको पकड़ लिया, उसको गिरफ्तार कर लिया और क्रूरता के साथ, जनता को इकट्ठा करके, दरख्त से बांध दिया, दोनों हाथ कीलों से उसमें गाड दिये और पीटते हुए उसे कहा कि बोलो "पाकिस्तान जिन्दाबाद, हिन्दुस्तान मुर्दाबाद"; उससे कहा गया कि कहो, "मुस्लिम लीग जिन्दाबाद"। वह बहादुर वीर शेरवानी बहुत देर तक तो बोला नहीं। फिर आखिर में जब उसकी एक ही सांस बाकी रह गयी तो आवाज लगाई उसने कि "हिन्दुस्तान जिन्दाबाद, पाकिस्तान मुर्दाबाद" और यह कह कर वह वहीं पर शहीद हो गया।

यह एक मिसाल थी हिन्दुस्तान के धर्म निरपेक्ष सिद्धान्त पर प्राण देकर भी अडिग रहने की। ऐसी ही मिसाल लड़ाई में भी ब्रिगेडियर उस्मान ने अपना उत्सर्ग करके रक्खी और आज इस युद्ध में भी इन शेरवानी और उस्मान की मिसालों की कमी नहीं रही है। जब पांच अगस्त को पाकिस्तानी रेडर काश्मीर में घुस आये तो मुझे इस सदन को यह बताते हुए प्रसन्नता होती है कि जो पाकिस्तान यह उम्मीद लेकर चला था कि वह जो षडयन्त्र हिन्दुस्तान के विरुद्ध रच रहा है कि ६ अगस्त को वह अपना पाकिस्तानी झण्डा काश्मीर में श्रीनगर में गाड देगा, वहां के बहादुर मुसलमानों ने, देशभक्त मुसलमानों ने, इस देश के धर्म निरपेक्षता के सिद्धान्त में अटूट विश्वास रखने वाले मुसलमानों ने, उसकी उस उम्मीद को धूल में मिला दिया। मैं यहां नाम लूंगा मुहम्मददीन का, शाहबुद्दीन का, मैं नाम लूंगा गुलाम कादिर गनी का; जिन बहादुरों ने पाकिस्तानी फौजों द्वारा हर तरह की यातनाएं दिये जाने के बाद भी और पकड लिये जाने के बाद भी अपने विश्वास को नहीं डिगने दिया। कहा उन्होंने, चलो, हम श्रीनगर ले चलें आपको और उस बहादुर अब्दुल गनी कादिर ने चुपके से वहां से निकल कर भारत की सेना को इसकी सूचना दी। उनको वहां तक ले जाकर उन रेडरों को बताया और कहा कि ये इस इरादे से श्रीनगर की तरफ जा रहे हैं और उस बहादुर ने सेना के जवानों को साथ लेकर काश्मीर पर आये हुए उन पाक रेडरों पर हमला किया; उनको वापिस खदेड़ा और इस तरह से श्रीनगर को बचा लिया। बेशक उस कादिर को उन पाकिस्तानी रेडरों की गोली का शिकार बन कर शहीद होना पड़ा। लेकिन उसने अपने प्राणों की आहूति देकर भी धर्म निरपेक्षता के उस सिद्धान्त को बचा लिया। तो ऐसे लोग आज भी इस देश में हैं।

अध्यक्ष महोदय, हमने सबने समाचार-पत्रों में पढ़ी है हवलदार अब्दुल हमीद के त्याग, बलिदान और शौर्य की कहानी जो यू. पी. का रहने वाला था। उसने किस बहादुरी और दिलेरी के साथ पाकिस्तान के पैटन टैंकों का मुकाबला करके उनमें से तीन को ध्वस्त कर दिया और चौथे को ध्वस्त करते समय शहीद बन गया। पाकिस्तान जिन पैटन टैंकों को अभेद्य शस्त्र मानता था, जिनके लिये अमेरिकन लोग भी यह मानते थे कि जिनका मुकाबला नहीं

Page No 79

(श्री रामानन्द अग्रवाल)

हो सकता उसने उनमें से तीन को धराशायी कर दिया अकेले ने और चौथे को धराशायी करते समय वीरगति को प्राप्त हुआ। हमारे ही राजस्थान का एक और वीर अयूबखां है जो शायद राजस्थान के झुंझुनूं जिले का है, उसने अपने और चार साथी मुसलमान सैनिकों के साथ जिस तरह से पैटन टैंकों का मुकाबला किया वह हमारे देश के धर्म निरपेक्ष सिद्धान्त के लिये और हमारे राजस्थान के लिये एक गर्व की बात है। इस तरह से न केवल मुसलमानों ने बल्कि पारसियों, क्रिश्चियनों ने, सबने इस युद्ध में भिन्न भिन्न स्थानों पर रह कर जिस तरह से अपने आत्म-बलिदान और त्याग और साहस से अपनी देश भक्ति का और धर्म निरपेक्षता में अपने अटूट विश्वास का परिचय दिया है यह एक ऐसी बात है जिसने आखिरी तौर पर हिन्दुस्तान के धर्म निरपेक्षता के सिद्धान्त को पूरा खरा ही साबित नहीं किया है, बल्कि उसमें चार चांद लगा दिये हैं।

मैं समझता हूं कि हमने अपने तौर तरीकों से, विश्वास से और व्यवहार से जो हमने संसार को इस धर्म निरपेक्षता के सिद्धान्त की महानता का आभास कराया है उससे सारा संसार चकित है। इससे हमारे देश में एक अभूतपूर्व जागृति और साहस और शौर्य का उदय हुआ है, इससे हम और अधिक बलशाली बनेंगे।

अध्यक्ष महोदय, इसी तरह जहां धर्म निर्पेक्षता के सिद्धान्तों की हमारी जीत हुई उसी तरीके से हमारे आत्मनिर्भर रहने की बात पर, उस सिद्धान्त की बात पर, नॉन-अलाइन्स की बात पर कि हम किसी के सैनिक गुट में शामिल नहीं हों, इस बात की आज हमारी जीत हुई है, इस सिद्धान्त की आज हमारी जीत हुई है। आज कुछ लोग हैं, आज भी मेरे कुछ दोस्तों ने अपनी शंका प्रकट की है, मैं उनसे भी निवेदन करना चाहता हूं कि आज हम सभी के लिए जरूरत है नय तौर से सोचने की। जरूरत है इस अनुभव से जिससे हम निकले हैं इसके वास्तविक तथ्यों को लेकर गंभीरता से विचार करने की। आज जो यह कहत थे और जो हमारे मनोबल को गिराने की कोशिश की। चीन के हमले के बाद या कच्छ के हमले के बाद, हमारे राष्ट्र ने या विदेशी राष्ट्रों ने हमारे मनोबल को गिराने की कोशिश की कि सैनिक गुट में शामिल नहीं रहने से न केवल चीन का मुकाबिला नहीं कर सकते हैं बल्कि पाकिस्तान का भी मुकाबिला नहीं कर सकते हैं; यह आवाज उठी कि अमेरिका या ब्रिटेन के गुट में शामिल हो जायें, नहीं तो हम अपने पैरों पर खड़े नहीं हो सकेंगे। जिन्होंने यह कहा कि हवाई छतरी ही हमारी रक्षा कर सकती है, बड़े बड़े टैंक हमारी रक्षा कर सकते हैं; मैं कहता हूं कि "वन्स फोर आल" इस लाई को, इस लैण्डर को हिन्दुस्तान के नौजवानों ने, हिन्दुस्तान के कौम परस्तों ने, हिन्दुस्तान के देशभक्तों ने इसका जवाब दे दिया है उन पैटन टैंक्स को तोड़कर, उन सेवर जैट्स को गिराकर इसका जवाब दे दिया है। हमारे नौजवानों की देश की सुरक्षा करने की जो दिल की तमन्ना है, दृढ़ कल्पना है, इरादा है वह किसी भी शक्ति का मुकाबिला कर सकते हैं। कहां गई वह पाकिस्तान की हवाई छतरी? अगर किसी देश की छतरियों से रक्षा हो सकती है तो पाकिस्तान ने तो कितनी ही छतरियां अपने शहरों पर रख छोड़ी थीं,

(श्री रामानन्द अग्रवाल)

एफ १०४, जो बड़ी से बड़ी छतरी उनके पास ११० थीं, कितने ही सेवर जैट थे, एफ ५७ और एफ ८७, कितनी ही छतरियां सारे पाकिस्तान, रावलपिंडी और पेशावर से लेकर चिटगांव तक एक एक शहर के ऊपर छतरियां और छत्र खोल रखे थे, मैं पूछना चाहता हूं कि व छतरियां कहां गई ? वे हमारे राजू का नाम लेते थे तो उनके दिल धड़कने लगते थे, वे छतरियों वाले सुपरसोनिक और सेवर-जैट लेकर अमृतसर के ऊपर जाने की कोशिश करते थे, वह राजू अपनी गोलियों को इस तरह से निकालता था कि जिस तरह से हरीसिंह नलवा का नाम मशहूर हो गया था, उसी तरह से अमृतसर के अन्दर राजू के नाम से पाकिस्तान बमबारी से डरते थे। इसलिए मैं यह निवेदन करना चाहता हूं कि आखिर हमारा साथ किसने दिया ? हमें हमारी शक्तियों ने हमारे देश के अन्दर जो हमने पैदा की उसने हमारा साथ दिया है। हमने हमारे विमान चाहे बैंगलोर में पैदा किये हों, चाहे विशाखापट्टनम में पैदा की शक्ति, हमारे हन्टर और नैट चाहे हमारे पास तादाद में कम हों, गति में कम हों लेकिन वे हमारे पैदा किये हुए हैं, इनने साथ दिया, हम उनकी मजबूतियों को जानते थे, उनकी कमजोरियों को जानते थे और आखिर उन्हीं हन्टरों ने और नैट्स ने सुपरसोनिक और सेवरजैटों का मुकाबिला किया और उनको गिराया।

इसी तरीके से हमारे पास पैटन टैंक्स नहीं हैं लेकिन हमारे बहादुरों ने उनको तोड़ने की इस तरह की एन्टी टैंक गन्स बनाई कि उनके टैंकों को तोड़ दिया और वह सबसे बड़ी एन्टी टैंक गन को हम नहीं भूल सकेंगे, वह मैं आपको याद दिलाऊं २२ वर्ष का नौजवान श्री होशियारसिंह, जो रेंग कर पीछे से जान की परवाह न करके पैटन टैंक पर चढ़ गया और उसके अन्दर हथगोले डालकर उसको भस्म कर दिया और बिलकुल नाकारा बना दिया। यह सबसे बड़ी चीज है जिसने हिन्दुस्तान को आज कामयाब बनाया है, हिन्दुस्तान की रक्षा की है, हिन्दुस्तान के सम्मान को बढ़ाया है।

इसलिए अध्यक्ष महोदय, मैं यह निवेदन करना चाहता हूं कि जहां हमने सैनिक सफलता प्राप्त की है वहां उन सिद्धान्तों की, उन मान्यताओं की, जो बड़े २ उसूल जिनके ऊपर हम अपने राष्ट्र को न केवल राष्ट्र को आजाद होने के बाद बल्कि १०० वर्ष पहले जिस राष्ट्रीय आन्दोलन को खड़ा किया उसमें महात्मा गोखले, श्री तिलक और महात्मा गांधी, सुभाष चन्द्र बोस जितने भी महान नेता हुए हैं, राष्ट्रीय आन्दोलन की जिन्होंने नींव डाली उनके जो बुनियादी सिद्धान्त हैं उनको लेकर आज भी हमारा राष्ट्र खड़ा है। हम उन सिद्धान्तों की रक्षा ही नहीं कर पाये बल्कि उनकी नींव भी मजबूत कर पाये हैं और मैं अपने उन मित्रों से भी यह निवेदन करना चाहूंगा कि इस अनुभव के बाद उनके दिमागों में इन दोनों सिद्धान्तों के बारे में कोई सन्देह नहीं रहना चाहिए कोई कमजोरी नहीं रहनी चाहिए और मैं समझता हूं कि इस मसले पर अगर हम एक होंगे तो राष्ट्रीय मसलों पर और कुछ मसले रह जाते हैं जिनमें हमारे मतभेद हो सकते हैं लेकिन अपने पैरों पर खड़े रहने का, राष्ट्र की रक्षा करने का और अपने इन्डीपेन्डेन्ट डेवलपमेन्ट करने का, इन सिद्धान्तों के प्रति हम सब एक हो जाते हैं तो मैं समझता हूं कि इस युद्ध से एक बहुत बड़ी शिक्षा हम पाते हैं। इसके अनुभव ने हमें

(श्री रामानन्द अग्रवाल)

बहुत सही रास्ता दिखाया है और हमारे राष्ट्र को सही रास्ते पर डाला है।

(२.२७ म०प०)

(राव श्री नारायणसिंह, उपाध्यक्ष, पदासीन)

उपाध्यक्ष महोदय, इस युद्ध में जिस तरीके से कुछ राष्ट्रों ने हरकतें कीं आज इस बात की जरूरत है कि हम अच्छे तरीके से उनको समझें। मुझे यह शिकायत है कि दरअसल में हम साफ साफ कहने में थोड़ी आना-कानी करते हैं। हम वास्तविकता, दो और दो चार कहने में कुछ पर्दानशीनी बरतते हैं। अगर राष्ट्र की रक्षा करनी है, सही तौर पर, सही सिद्धान्तों से राष्ट्र को तैयार करना है तो हमें खरी-खरी बात कहकर अपनी जनता को विश्वास में लाना होगा। वे नीतियों के मसले कुछ नेताओं तक ही सीमित नहीं रह कर जनता तक पहुंचाने होंगे और जनता का विश्वास लेना होगा। आज जो पाकिस्तान से हमारी लड़ाई हुई, इसके बारे में दूसरे माननीय सदस्यों ने भी कहा है, मैं कहना चाहता हूं कि आज हर एक हिन्दुस्तानी को इसे समझने की जरूरत है और किसी मुल्क को इस बारे में सन्देह हो सकता है, अमेरिका कुछ कह सकता है, रूस कुछ कह सकता है, इन्डोनेशिया या यू० ए० आर० कुछ कह सकता है, लेकिन जैसा कुछ ब्रिटेन ने अपने इन्डिपेन्डेन्स ऑफ इन्डिया एक्ट के तहत अपनी पार्लियामेन्ट के अन्दर पास करके, १९४७ के अन्दर यह कानून बनाकर हिन्दुस्तान और पाकिस्तान को आजाद घोषित किया और उसमें यह घोषित किया कि जो देशी रियासतें हैं उनके रूलर्स जिस तरफ भी एक्सीड होना चाहें वे एक्सीड कर सकते हैं। उसी तरह उनका एक्सेशन माना जायेगा और इस कानून के तहत जो एक्ट ब्रिटिश पार्लियामेन्ट ने पास किया उस कानून के तहत काश्मीर के राजा श्री हरीसिंहजी ने और फिर इसके ऊपर मुहर लगा दी वहां की नेशनल कान्फ्रेंस के लीडर शेख अब्दुल्ला ने और इस तरीके से एक्सेशन किया काश्मीर का हिन्दुस्तान में। तो उसके बाद बर्तानिया की गवर्नमेन्ट चाहे वह लेबर गवर्नमेन्ट हो या टोरी गवर्नमेन्ट हो, उन्होंने इस तरह के रुख अपनाये कि हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के बीच हमेशा के लिये युद्ध का बीज रोप दें, हमेशा के लिए उनको आपस में लड़ा दें, यह नीति बर्तानिया जब हमारे मुल्क पर राज्य करता था तब भी हिन्दू और मुसलमानों को लड़ाने की नीति उसने रखी और आज भी उसकी वही नीति लगातार चल रही है। उपाध्यक्ष महोदय, १९४७ के अन्दर लॉर्ड माउन्टबेटन हमारे यहां गवर्नर जनरल थे और पाकिस्तान से जिन्होंने हमला किया वहां भी ब्रिटिश गवर्नमेन्ट थी। नोर्थ वेस्ट फ्रन्टियर में एक ब्रिटिश हाकिम हमारे मुल्क पर हमला करने के लिए रेडर्स भेजता है और एक ब्रिटिश हाकिम उसके अन्दर मदद करता है। इस तरीके से आज भी, उपाध्यक्ष महोदय, वही नीति ब्रिटिश गवर्नमेन्ट ने अपनाई और जो हथियार, जिनसे पाकिस्तानी लड़े, पैटन टैंक्स या सेवरजेट और जैसा दूसरे माननीय सदस्यों ने कहा और मुख्य मंत्री जी ने भी कहा कि वे सारे के सारे अमेरिका से पाकिस्तान को प्राप्त हुए और जो उनके नेताओं की उम्मीद थी कि पाकिस्तान के इतने बड़े हथियार के मुकाबले में हिन्दुस्तान के सिपाही खड़े नहीं हो सकेंगे। जब उस बहादुर फौज ने मुकाबिला करके दिखाया तो वे दांतों के नीचे उंगली दबाकर रह गये और कल ही मैं पढ़ रहा था कि

(श्री रामानन्द अग्रवाल)

१० सितम्बर का अमेरिका का टाइम्स मेगजीन कि जब लाहौर के ऊपर हमला हो चुका था तो उस मेगजीन में लिखा था कि ईस्ट पाकिस्तान में हिन्दुस्तान भले ही आगे बढ़ जाये लेकिन वेस्ट पाकिस्तान में जब पैटन टैंक और सेबरजेट का मुकाबिला करना पड़ेगा तो हिन्दुस्तान पाकिस्तान की फोर्सेज का हर्गिज मुकाबिला नहीं कर सकेगा और पाकिस्तान की फौज को नई दिल्ली तक आने में कोई नहीं रोक सकेगा। आज उनके वे इरादे, उनकी कल्पनाएं, आज उनके ख्वाब जो उस समय थे वे सब युद्ध समाप्त होने के बाद, उपाध्यक्ष महोदय हमारे सामने आए हैं। जो ब्रिटेन का रोल रहा है पाकिस्तान को पूरी तरह से सपोर्ट करने का और डीन रस्क ने अपना स्टेटमेन्ट प्लेबीसाइट के बारे में दिया है और अयूब खां से जॉनसन साहब ने, प्रेसीडेन्ट अमेरिका ने जो टेलीफोन पर बातें की हैं, पूरी तरह से तन,मन,धन से, हर तरह से मदद करने को कहा है, आज हमको उन्हें सही रूप में समझने की हमें कोशिश करनी चाहिये। हथियार वे दें, राजनीति वे दें, षडयंत्र वे करें और पीछे से थप्पी वे दें कि पूरी तौर पर मदद करेंगे। तो हम आज उनको दोस्त समझें या दुश्मन समझें, इस बात को लीपा पोती से काम नहीं चलेगा, वर्ना हम देश की जनता को सही तौर पर तैयार नहीं कर पायेंगे। इसलिए उपाध्यक्ष महोदय, मैं निवेदन करना चाहूंगा कि आज जरूरत है इस बात की, जैसा मेरे दोस्त रामकिशन जी ने कहा कि आज जरूरत है इस बात की कि हम कामनवेल्थ में रहें या नहीं इस बात पर दुबारा सोचें और मेरा तो इस बारे में निश्चित मत है कि इस युद्ध के बाद, हमारी जो देश की जनता की भावना एण्टी-इम्पीरियलिज्म की, साम्राज्यवाद विरोधी और भी खुले रूप में सामने आई है, उसी रूप में जनता की भावना की कद्र करते हुए हमें जो पहला स्टेप लेना चाहिए वह यह कि ब्रिटेन की कामनवेल्थ से बाहर निकल आएं। अमेरिका से अपने रिलेशन्स के बारे में भी पुनः सोचें क्योंकि उसकी सही इमेज, उसकी सही शक्ल सामने आ गई है उसको ध्यान में रख कर हम इस बारे में दुबारा निर्णय करें।

उपाध्यक्ष महोदय, चीन ने जिस तरीके से, जब पाकिस्तान की फौजें घिर गईं पाकिस्तान के जनरलों ने आत्म समर्पण करना शुरू कर दिया और एक जगह तो सफेद झंडा दिखा कर उनके कई लोग गिरफ्तार हो गए तो उनका मोरल बूस्ट करने के लिए चीन खुले तौर से पाकिस्तान की मदद पर आया। हमारे देश की जनता के सामने, हमारे तमाम लोगों के सामने यह एक विचित्र स्थिति थी, दुनिया के सामने मोरेलिटि की, दुनिया के सामने नैतिकता की, दुनिया के सामने शांति कायम रखने की। ऐसे मौके पर चीन का इस तरह का अल्टीमेटम आया और मुझे यह खुशी है कि हमारी सरकार ने बड़ी दानिशमन्दी से, बड़े हौसले से उसका जवाब दिया और जिस तरीके से पाकिस्तान को नीचा देखना पड़ा उसी तरह से चीन को भी हाथ मलते हुए किसी न किसी बहाने से अपना अल्टीमेटम वापस लेना पड़ा है।

(करतल-ध्वनि)

लेकिन आज इन बातों में सतर्कता बरतने की जरूरत है। आज उनके दिलों में छिपे हुए जो गुब्बार हैं, चाहे वह पाकिस्तान हो, चाहे वह चीन हो, चाहे वह अमेरिका हो, चाहे वह ब्रिटेन हो और चाहे वह इंडोनेशिया हो। इन तमाम देशों की बहुत कुछ असलियत सामने आज आई

(श्री रामानन्द अग्रवाल)

है और हमको इन असलियतों को देख कर और सामने रख कर चलना पड़ेगा। उपाध्यक्ष महोदय, मैं निवेदन करना चाहूंगा कि हमारे देश की नीति इस युद्ध के बारे में कोई युद्ध करने की नीति नहीं है। हमारे देश की नीति अपने देश की रक्षा करने की नीति है, मुकाबला करके अपने देश की रक्षा करने की नीति है और साथ ही साथ शांति के तरीकों को अपनाने की नीति है। शांति कायम करने की नीति है। मैं मुबारकबाद देना चाहूंगा इस सरकार को, खास तौर पर इसके जो नेता हैं, इस सरकार को इस बात के लिए बधाई देना चाहूंगा कि इस पाकिस्तान के युद्ध में जो दोहरी नीति है इन दोनों स्तम्भों पर वह डटी हुई है जो राष्ट्र के हित की नीति है। मुकाबले से देश की रक्षा करना और शांति के लिए हमेशा तैयार रहना। इस नीति का हमारी सरकार ने बड़ी खूबी से प्रतिपादन किया है।

(करतल-ध्वनि)

मैं इस बात की मुबारकबाद दूंगा इस सरकार को कि जिस दिन उसने फैसला किया कि इन रेडर्स से केवल सीजफायर की सीमा तक रह कर ही मुकाबिला नहीं किया जा सकता, अगर सीजफायर सीमा टूटती है तो टूटे, हम अपने देश की रक्षा करने के लिए सीज फायर लाइन को भी क्रोस करेंगे और जब छम्ब की इंटरनेशनल बॉउण्ड्री को तोड़ कर पाकिस्तान ने हमला किया तो जो फैसला किया कि अब देश की रक्षा के लिए इंटरनेशनल लाईन को भी क्रोस करेंगे और लाहौर पर चढाई करने के लिए फैसला किया तो मैं समझता हूं कि अपने देश की रक्षा की तरफ, दुश्मन से मुकाबला करने का यह पहला कदम था जो इस सरकार ने उठाया। उसके लिए मैं मुबारकबाद देना चाहता हूं इस सरकार को, मिलिट्री को और उसके लीडरों को इसी के साथ साथ मैं आपसे यह भी निवेदन करना चाहूंगा कि अब जीत की खुशी के अन्दर अपने दिमाग को नहीं खो देना चाहिए। मुझे याद है अप्रैल के महीने के बाद जब कच्छ के अन्दर पाकिस्तान ने हमला किया और बियारबेट में गैर-तैयारी के तौर पर हमारे सौ सवा सौ सिपाहियों पर पाकिस्तान ने हमला कर एक जीत हासिल करली तो पाकिस्तान का दिमाग खराब हो गया। पाकिस्तान के सिपाहियों का दिमाग खराब हो गया, उनके लीडरों का दिमाग खराब हो गया। कहने लगे कि यह अयूब मोहम्मद गजनवी का सानी है। उसको गाजी का खिताब देना चाहिए। इसी तरीके का युद्ध उन्माद पाकिस्तान में फैला। इसके मुकाबले में हमने सुना १२ सितम्बर को अपने प्रेसीडेन्ट डा० राधाकृष्णन् की स्पीच को, उस दिन के दो दिन के बाद जब कि पाकिस्तान के जनरलों ने आत्म-समर्पण किया था, हमारी फौजें बहादुरी से आगे बढ़ती चली जा रही थीं, हमारे राष्ट्रपति ने जो हमारे देश के प्रतीक हैं, उन्होंने एलान किया कि हमारी पाकिस्तान की जनता से कोई लड़ाई नहीं है। उन्होंने यह एलान किया कि हम पाकिस्तान की एक इंच भूमि को नहीं लेना चाहते, उन्होंने एलान किया कि हम युद्ध को युद्ध के लिए नहीं, बल्कि युद्ध को शांति स्थापना के लिए कर रहे हैं।

(करतल-ध्वनि)

यह ऐसा उसूल है उपाध्यक्ष महोदय, जिसमें न केवल सैनिक शक्ति बल्कि कुछ मान्यताएं, कुछ सिद्धान्त इसमें जुड़े हुए हैं जिनके बारे में हमारे देश में अधिकतर

Page No 84

(श्री रामानन्द अग्रवाल)

एकमतता है। मैं समझता हूं कि जहां तक देश की रक्षा का सवाल है, शांति स्थापना करने का उसूल है, देश को इन्डिपेंडेंट इकोनोमिक डवलपमेन्ट करने का सवाल है, इन तमाम सवालों में हमारे तमाम राष्ट्र की विचारधारा एक होनी चाहिए, राष्ट्रीय एकता मजबूत होनी चाहिए। यह नीति किसी पार्टी की नीति नहीं बल्कि हमारी राष्ट्रीय नीति बन जानी चाहिए और मैं समझता हूं कि इस युद्ध से हम यही सबक लेंगे।

उपाध्यक्ष महोदय, जहां तक यह प्रश्न हमारे सामने आए, कुछ नीतियों के प्रश्न सामने आए, युद्ध में जो कुछ हमने सीखा उसके आए, वहां पर मैं यह भी कहना चाहूंगा कि इस युद्ध में जो आज जिस हालत में खत्म हुआ है, युद्ध विराम हो गया है यह बहुत संतोष की बात है और दुनिया में तमाम लोग जो शांति चाहते हैं उन सब ने ही इसको वेलकम किया है; सिवाय चीन के या उसी की तरह उनके पक्ष में इंडोनेशिया हो सकता है, उन लोगों को छोड़ कर सभी ने इसका समर्थन किया है। लेकिन जिस तरीके से मिस्टर भुट्टो ने या अयूब साहब ने अपने भाषण दिए हैं, मैं समझता हूं कि वे भाषण युद्ध बन्दी के नहीं, वे शांति स्थापना के भाषण नहीं बल्कि कुछ समय लेकर तैयारी करने के भाषण हैं। इन बातों से हमारी सरकार को, हमारे तमाम राष्ट्र को, हम सभी लोगों को सतर्क रहना चाहिए और इसीलिए उपाध्यक्ष महोदय, मैं निवेदन करना चाहूंगा कि अगर वास्तव में हमें तैयार रहना है तो बुनियादी तौर से हमको अपने देश की नीतियों के बारे में सोचना होगा। हमको अपने देश की बुनियादी नीतियों के बारे में किस प्रकार से हम इस लायक बन सकते हैं कि अपने देश की, अपनी ताकत की बुनियाद की रक्षा कर सकें, अपने देश की शान्ति कायम रख सकें, दूसरे देशों की शान्ति कायम रख सकें, दूसरे देशों से दोस्ती हो सके और अपने देश की तमाम जनता को अपने साथ एक जुट करके हम खड़ा कर सकें, इन नीतियों के बारे में पुनर्विचार करने की आवश्यकता है। मैं समझता हूं कि कल जो शास्त्रीजी का भाषण था उसमें कुछ संकेत भी है इस बारे में, और मैं समझता हूं कि आज सभी पार्टियों को अपने अपने तौर से इन तमाम बातों पर गम्भीरता से विचार करने की आवश्यकता है।

अभी तक हमारे देश में तीन पंचवर्षीय योजनाएं चली हैं। चौथी पंचवर्षीय योजना हम बनाने जा रहे हैं। इन तीन पंचवर्षीय योजनाओं का जो नतीजा हमारे सामने आया है वह नतीजा देश की एक पर्सेन्ट जनता को बहुत ज्यादा फायदा और अधिकतर जनता में बहुत ज्यादा गरीबी के रूप में आया है। अगर हमको साधारण जनता को साथ लेना है, युद्ध का मतलब, लड़ाई का मतलब, रक्षा का मतलब बहुत कुछ धन उस पर खर्च करना है, उस पर बहुत फाइनेन्स खर्च करना है। मैं समझता हूं कि हमारा राष्ट्र इस बुनियाद पर इस तरह से शक्ति संचय नहीं कर सकता है कि कुछ मुट्ठी भर लोग इन नीतियों का फायदा उठायें और इस बड़े भारी खर्चे का बोझ आम जनता पर पड़े। हमको निश्चित तौर से अपनी आर्थिक नीतियों के बारे में पुनर्विचार करना होगा, उनको नये तौर से ढालना होगा ताकि हम ज्यादे से ज्यादा अपने देश की जनता को आर्थिक रूप से समृद्ध बना कर, आर्थिक कठिनाइयों से निकालकर वास्तव में एक स्वतन्त्र देश का नागरिक है यह उसको अनुभव कराकर और स्वेच्छा से देश

(श्री रामानन्द अग्रवाल)

की रक्षा और देश के निर्माण में उसको लगा सकें; यह निहायत आवश्यक है ।

इसलिए, उपाध्यक्ष महोदय, में ज्यादा डिटेल्स में न जाकर मोटे तौर पर यह निवेदन करना चाहूंगा और खास तौर पर इस सरकार के नेताओं से भी और विरोधी पार्टी के नेताओं से भी यह मैं निवेदन करना चाहूंगा कि हमारे देश की राष्ट्रीयता का, हमारे देश की जनता की राष्ट्रीयता का जो नवोदय हुआ है, नव-जागरण हुआ है आज हमारी इस लीडरशिप की चुनौती होनी चाहिए, इस लीडरशिप को चैलेन्ज होना चाहिए कि इस उदय हुई भावना को किसी तरह से चेनेलाइज करके हम राष्ट्र-निर्माण के कार्य में, राष्ट्र को ऊंचा उठाने में, राष्ट्र को मजबूत बनाने में, राष्ट्र को सशक्त बनाने में उसका हम इस्तेमाल किस तरीके से कर सकते हैं । निश्चित तौर से इसके इस्तेमाल में यह अर्ज जो उसकी है वह पुरानी अर्ज है उसकी बुनियाद को पकड़ना होगा, वे बुनियादें आज गली हुई हैं । आज से १०० वर्ष पहले जबकि हमने राष्ट्रीय आन्दोलन शुरू किया, देश में आजादी का सिंहनाद बजाया उस वक्त जो नारे दिये, उस वक्त जिन बातों को लेकर देश की जनता को इकट्ठा किया आज जरूरत है उन नारों के पकड़ने की ।

आज हमारी जनता का वह नारा धूमिल होता हुआ नजर आ रहा है, अन्धकार में जाता हुआ नजर आता है तो मैं कहना चाहूंगा आप सब लोगों को कि जिस तरह से हम सब ने मिलकर देश की रक्षा की है, हमारे नौजवानों ने देश को जगाया है उसी तरह से हम सब मिल कर अपने राष्ट्र के संघर्ष में, राष्ट्र की स्वतन्त्रता के संघर्ष में जिन बुनियादी सवालों को लेकर हमारा देश खड़ा हुआ था उन्हीं बुनियादी सवालों को पकड़ कर हम आगे बढ़े हैं, तो वह सवाल है कि धर्म निरपेक्षता की बुनियाद पर अपने राष्ट्र का निर्माण करें, हम अपने देश को स्वयं अपने पैरों पर खड़ा करें । हमारी मिलिट्री हो, हमारे हवाई जहाज हों, हमारे टैंक हों, हमारी रेल हों, हमारी बन्दूक हों, हमारी गोली हों, ये चीजें हम अपने देश के अन्दर पैदा करें । जो देश मदद करने को तैयार हों, जो हमको अपने कारखाने लगाकर खुद चीज को पैदा करने के लिए मदद देने को तैयार हों उनकी हम मदद लें । आज मैं इस बात को कहना चाहूंगा, सभी लोगों से कहना चाहूंगा कि सोवियत रूस ने जिस तरीके से इस काम में हमको मदद दी है कि अपने कारखाने लगाओ । जब सोवियत रूस अगर कोई पोलिटिकल कन्डीशन रखे या कोई टर्म्स रखे तो हम नहीं समझते कि वह हमारे देश के हित में रखता होगा । कोई देश हमको अपने पैरों पर खड़ा होने के लिए मदद देता है, निस्वार्थ सहायता देता है तो केवल इस कारण से कि हमारी और उनकी अर्थ व्यवस्था में मतभेद है या और कोई लोग या देश नाराज़ हो जायेंगे इस बुनियाद में जो संकोच है उस संकोच को निकालने की आवश्यकता है । मैं मानता हूं कि हमारी सरकार सोवियत रूस से काफी मदद लेती है और सोवियत रूस से उसने काफी सम्बन्ध बढ़ाये हैं तो इन सम्बन्धों को और ज्यादा मजबूत करने की जरूरत है इस रूप में कि हम सैनिक तौर से अपने पैरों पर खड़े हो सकें । हम मिग का कारखाना लगायें, टैंक्स का कारखाना लगायें और मेटीरियल अपने देश में पैदा करके कारखाने लगायें और उसके अन्दर हर तरीके से मदद लें, उसके अन्दर कोई झिझक हमको किसी से न रहे ।

(श्री रामानन्द अग्रवाल)

इन्हीं शब्दों के साथ, उपाध्यक्ष महोदय, मैं यह उम्मीद करता हूं कि हम उन तमाम सिद्धान्तों को साथ लेकर अपनी राष्ट्रीय एकता की जो भावना जागृत हुई है उसको आगे बढ़ाते हुए अपने देश को मजबूत बनायेंगे, दृढ़ बनायेंगे समाजवाद की तरफ ले जायेंगे, और देश की तरफ जो कड़ी निगाह से देखता है उसका मुकाबला करने के लिए हर वक्त देश को तैयार रखेंगे।

श्री मथुरादास माथुर (योजना मंत्री): माननीय उपाध्यक्षजी, पाकिस्तान ने ५ अगस्त को जब हमारे वतन पर हमला किया था उस वक्त उसने सोचा था कि जब पाकिस्तान हिन्दुस्तान पर हमला करेगा उस वक्त हिन्दुस्तान की आम-अवाम के अन्दर फूट पैदा हो जायेगी, हिन्दुस्तान की मुख्तलिफ कौमें, खास तौर से हिन्दू और मुसलमान, आपस में लड़कर मर जायेंगे। पाकिस्तान ने इस बात को सोचा था कि जब वह हिन्दुस्तान पर हमला करेगा उस वक्त ये अमन पसन्द लोग जो हमेशा पाकिस्तान के साथ समझौता करते रहे हैं फिर झुक कर समझौता कर लेंगे। पाकिस्तान ने सोचा था कि जब हिन्दुस्तान पर हमला करेगा उस वक्त हिन्दुस्तान की मुख्तलिफ पार्टियां अपने नारे बुलन्द करके आपस में लड़कर मरेंगी। पाकिस्तान के सब इरादे जो उसने बनाये थे, वे सब इरादे नापाक हुए हैं। हिन्दुस्तान के अन्दर इस वक्त जो एकता और इत्तिफाक का दौर दौरा है वह हिन्दुस्तान की तवारीख में हमेशा के लिए अमर रहेगा। मैं खास तौर से अपने आम-अवाम हिन्दुस्तान की रहने वाली सभी कौमों को, हिन्दू, मुसलमान, सिख, ईसाई को मुबारकबाद दिये बिना नहीं रह सकता कि जिन्होंने इस वक्त, जब कि हिन्दुस्तान के ऊपर जब यह संकटकालीन स्थिति हुई और पाकिस्तान ने हमला कर दिया तो एक दिल और दिमाग से उसका मुकाबला किया। हिन्दुस्तान के अन्दर आज के दिन हमारे जंग के जो बड़े बड़े उसूल हैं उस जंग में हमारी कामयाबी हुई है। हिन्दुस्तान के लोग कभी भी इस बात को मन्जूर नहीं कर सकते कि हिन्दुस्तान के अन्दर रहने वाले हिन्दू और मुसलमान दो राष्ट्र हैं। टू-नेशन्स थ्योरी को आज के दिन हिन्दुस्तान की तवारीख में हमेशा के लिये छोड़ दिया है, जिसके लिए कि हिन्दुस्तान हमेशा जिन्दा रहा है। इसके लिए आज के दिन पाकिस्तान काश्मीर के वास्ते मजबूर करना चाहता है कि हिन्दुस्तान समझौता करे इसलिए कि काश्मीर में मुसलमान ज्यादा रहते हैं और इसीलिए काश्मीर के अन्दर प्लेबिसाइट करवाकर अपने इरादों को हांसिल किया चाहता है। मैं निवेदन करना चाहता हूं कि काश्मीर हिन्दुस्तान का हिस्सा बन चुका है, हो चुका है, और अब दुनिया की कोई ताकत काश्मीर को हिन्दुस्तान से अलग नहीं कर सकती है। इसलिए आज के दिन जब हम इस सदन के अन्दर गम्भीरता से इस प्रश्न पर विचार करने के लिए बैठे हुए हैं, आज के दिन जब आप और हम इस विषय पर सोच-विचार कर रहे हैं, जंगबन्दी का एलान हो चुका है, मैं निवेदन करना चाहता हूं कि यद्यपि जंगबन्दी का एलान हो चुका है लेकिन पाकिस्तान के जंगखोरों के दिमाग में अभी तक जंग कायम है और वे हिन्दुस्तान के साथ जंग करना चाहते हैं। जो कुछ भुट्टो साहब ने बयान दिया है, जो कुछ अयूब साहब ने बयान दिया है उनसे ज्यादा से ज्यादा यह बात जाहिर है कि वे काश्मीर के सवाल को लेकर यह कहना चाहते हैं कि हम हजार वर्ष तक लड़ेंगे और लड़ते रहेंगे। इसलिए आज के दिन जो

(श्री मथुरादास माथुर)
जंगबन्दी हुई है, जो जंग बन्द हुआ है वह सिर्फ एक थोड़े समय के लिए ही समझा जा सकता है जब तक कि पाकिस्तान के जो खास इरादे हैं जंग लड़ने के लिए और काश्मीर को पाकिस्तान का हिस्सा बनाने के, पूरे नहीं हो जाते हैं। इसलिए आज के दिन जब इस पर हम इस सदन में विचार कर रहे हैं तो गम्भीरता के साथ विचार करें और जंग के अन्दर जो काम याबी हुई है उस कामयाबी की खुशी मनाते हुए साथ ही साथ इस बात को भी सामने रखें कि आने वाले दिन हिन्दुस्तान के लिए बहुत मुश्किल के दिन हो सकते हैं।

खास तौर से मैं इस वक्त यह निवेदन करना चाहता हूं कि पाकिस्तान हिन्दुस्तान के साथ युद्ध ही नहीं करना चाहता बल्कि साथ ही साथ वह चीन के साथ गठबंधन करके, चीन और पाकिस्तान दोनों मिलकर, हिन्दुस्तान को तबाह करना चाहते हैं, जैसा कि माननीय सदस्यों ने कहा कि हमने युद्ध का एलान किया है या हिन्दुस्तान युद्ध लड़ रहा है, वह किस लिये लड़ रहा है, क्यों लड़ रहा है? यह बहुत ही गंभीर बात है। हमारे ऊपर मुसीबत आई है उससे घबराकर हम अपने उसूल को नहीं भूलें। आज जब हिन्दुस्तान की नीति के बारे में चर्चा करते हैं तब गंभीरता से विचार करने का प्रश्न पैदा हो सकता है। लेकिन हम इस हमले की वजह से अपनी बुनियादी नीति को छोड़ नहीं सकते। हिन्दुस्तान की जो अमन की नीति है उस पर वह कायम रहेगा। एक पाकिस्तान नहीं, चाहे सौ बार हमला करे तब भी हिन्दुस्तान अपनी मूल नीति को नहीं छोड़ सकता। यही बात हमारे प्रधान मंत्रीजी ने दोहराई है। कल रात उन्होंने जो देश को संदेश दिया है उसमें कहा है कि हिन्दुस्तान हमेशा अमन की नीति पर चलेगा, युद्ध की नीति पर नहीं चल सकता। लेकिन यदि कोई दूसरे लोग हिन्दुस्तान की जमीन, हिन्दुस्तान की आजादी और हिन्दुस्तान की इज्जत पर नजर उठायेंगे तो हिन्दुस्तान का एक-एक बच्चा, उसकी हकूमत, उसका मुकाबला करेंगे।

युद्ध पसन्द करने वाले लोग कभी अमन पसन्द नहीं करते। हिन्दुस्तान की इस वक्त नीति अमन की है। हमारी नीति है कि हिन्दुस्तान की आजादी को कायम रखें, हिन्दुस्तान की सीमा में किसी को नहीं घुसने दें। साथ ही साथ हमारी यह भी नीति है कि दूसरे राष्ट्र अपनी हुकूमत किसी भी तरह से चलावें उससे हमें मतलब नहीं। कल प्रधान मंत्रीजी ने अपने संदेश में कहा था कि पाकिस्तान और चीन भले ही अपने यहां डिक्टेटरशिप चलावें, यह उनके सोचने की बात है; हम डेमोक्रेटिक सोशियेलिज्म में विश्वास करते हैं, उसको कभी छोडने वाले नहीं हैं, चाहे पाकिस्तान अमेरिका या दुनिया का कोई भी राष्ट्र कुछ भी करे, हमें किसी की मदद मिले न मिले, हम लड़ते हैं। तो अपनी नीति के लिये लड़ते हैं। आज हमें इस चीज को अपने दिमाग में रख कर सोचना है। यह नहीं कि हमारे पर युद्ध आगया, चीन ने हम पर हमला किया था, फिर कर सकता है, पाकिस्तान कर सकता है इसलिये हम नोन-अलाइन्स की नीति पर न चल कर किसी के गुट में चले जायें, यह हम नहीं कर सकते। (करतल ध्वनी)

हमारा मतलब यह है कि हम सब लोगों से दोस्ती करना चाहते हैं, उनसे हम सहायता भी ले सकते हैं लेकिन किसी पावर ब्लोक में बैठ कर अपने आप में सोचने की शक्ति को और चिन्तन को गिरवी नहीं रखना चाहते। अमेरिका हमको मदद देता है। चीन यदि हम पर

(श्री मथुरादास माथुर)

हमला करे और वह हमें मदद दे तो मुबारक है और यदि वह हमें मदद नहीं दे तो भी चीन से लडना पड़ेगा। मुझे खेद है कि पाकिस्तान को अमेरिका और इंग्लैंड ने हथियार दिये थे इसका हमारे द्वारा विरोध करने पर उन्होंने कहा था कि ये हथियार हिन्दुस्तान के विरुद्ध प्रयोग में नहीं लाये जायेंगे, फिर भी वे हथियार हिन्दुस्तान के खिलाफ काम में लाये गये लेकिन अमेरिका इतना बड़ा ताकत वाला देश होते हुए भी बैठा बैठा देखता रहा और उसने बोलने की हिम्मत नहीं की। हमें उम्मीद थी कि कम से कम वह प्रस्ताव पास करके तो कहेगा कि उनके हथियार पाकिस्तान द्वारा हिन्दुस्तान के खिलाफ काम में नहीं लाये जावें लेकिन उसने कोई ऐसा प्रस्ताव नहीं किया यह उसके सोचने की बात है। आगे से अमेरिका हिन्दुस्तान का साथी है, मदद देगा तो विदाउट पोलिटिकल स्ट्रिन्जेन्सी देता रहे।

इस युद्ध के दौरान हमने देखा कि ब्रिटेन के साथ जो हमारा एग्रीमेन्ट था वह बंद कर दिया। अमेरिका ने हमको सहायता देना बन्द कर दिया। पाकिस्तान को सामान फालतू में मिला था, फोकट में मिला था, उसने उसके लिये पैसा नहीं दिया। हम पैसा देते थे, इस पर भी वह देने के लिये नहीं कहता है। वह देगा, आज नहीं तो कल देगा। अंतर्राष्ट्रीय परिस्थितियों में अदल-बदल होता है तो नीतियां भी बदलती हैं। रूस ने जो हमसे एग्रीमेन्ट किया उसके अनुसार वह हमें बराबर सामान देता रहा यह सदन इसीलिये रूस को मुबारकबाद दे।

(करतल-ध्वनि)

अमेरिकन लोगों की हमदर्दी हिन्दुस्तान के लोगों के साथ है। खासतौर से चीन हिन्दुस्तान की तरफ अपनी नजर ऐसी रखता है जो जंगखोर की नजर है और वह बराबर वैसा ही सोचता है। हमारी विदेश नीति फार्मूसा को रिकोग्नाइज करें न करें, दूसरे मुल्कों को करें न करें, इस बारे में हमारी जो मूलभूत नीति है वह नहीं बदल सकती। हमारी मूल नीति नोन अलाइन्स की है उसको हम नहीं छोड़ सकते। उसको हम छोडते हैं तो हिन्दुस्तान खतरे में पड सकता है। इसलिये मैं पुरजोर लफ्जों में माननीय सदस्यों से निवेदन करना चाहता हूं कि हमारी नीति, हिन्दुस्तान में आजादी कायम रखने की नीति नोन अलाइन्स की, किसी पावर ब्लाक्स के साथ गठबंधन नहीं करने की नीति जो हम सबने एक होकर तय की है उसके पीछे बुनियादी भावना होनी चाहिये और अपनी नीति पर चलने का पूरा चिन्तन करना चाहिये जो हम करेंगे, करते रहेंगे और अपनी नीति को नहीं छोडेंगे।

मैं यह भी निवेदन करना चाहता हूं कि हमारी घरेलू नीति समाजवादी प्रजातंत्र की नीति है उसको नहीं छोड़ते चाहे कोई हमें मदद दे न दे कोई देश अपने उसूल, नीति और भावना पर जिन्दा रहता है जो उसके देश में बनी है। इसी कारण आज के दिन हमारे फौजी सिपाही पायलेट्स और हमारी फौज का एक एक अफसर चाहे वह किसी भी कौम का है उसने अपना फर्ज अच्छी तरह से अदा किया है। हमारी नीति सेक्युलेरिज्म की है। इसी कारण से सबने बहादुरी से काम किया है श्री कीलर ने बहुत बहादुरी का काम किया। मुसलमान, सिख, ईसाई, सबने अपना अपना काम किया है। हमारी फौज ने हुब्बे वतन के कारण बहुत बहादुरी का काम किया है। हम सबने उनको मुबारकबाद पेश की है और करते हैं,

(श्री मथुरादास माथुर)

साथ ही साथ उन मजदूरों को जिन्होंने नैट हवाई जहाज बनाये हैं, जिन्होंने टैंक बनाये हैं और जिन्होंने लड़ाई में काम में आने वाला दूसरा सामान बनाया है, ८० परसेण्ट इन्हीं मजदूरों के द्वारा बनाया गया है, उन मजदूरों को भी हम मुबारिकबाद देते हैं

(करतल-ध्वनि)

जब आज जंग बन्द हुआ है उस वक्त हम यह सोचते हैं कि हमारे हिन्दुस्तान के लोग और खास तौर से मजदूर और फौजी बधाई के पात्र हैं। मैं अपने विचार से यह निवेदन करना चाहता हूं कि यह युद्ध-बन्दी थोड़े समय के लिये है क्योंकि पाकिस्तान के जंग खोर नेताओं के भाषण हुए हैं उनसे साफ जाहिर है कि उनके इरादे में परिवर्तन नहीं है। सीज़ फायर सिर्फ तैयारी करने को है और डिप्लोमेटिक युद्ध की तैयारी की पृष्ठभूमि शुरू हुई है, डिप्लोमेटिक फ्रण्ट अब चालू हुआ है। मैं उम्मीद करता हूं कि हिन्दुस्तान के नेता और हमारे प्रधान मंत्री लालबहादुरजी काफी अच्छे कूटनीतिज्ञ हैं और वे हिन्दुस्तान को कामयाब करेंगे। काश्मीर के सवाल को लेकर हमारे प्रधान मंत्री ने अपने संदेश में साफ कहा है कि काश्मीर हिन्दुस्तान का हिस्सा है और अंग ही रहेगा। यह उन्होंने मूल-भूत बात कही है इसलिये यदि काश्मीर हिन्दुस्तान का हिस्सा है और रहेगा तो युद्ध बन्दी के बाद पाकिस्तान के साथ किस तरह का फैसला होगा, यह आने वाला समय बताएगा। फैसला न होने की सूरत में हिन्दुस्तान के लोगों को आने वाले समय का मुकाबला करने के लिये तैयार होना चाहिये।

डेढ़ महीने में हमने देखा कि मिलिटरी डिक्टेटरशिप इन्सानियत को भूल जाती है तब किस तरह से मुसीबत कर सकती है। हिन्दुस्तान के बहादुर सिपाहियों और पायलेटों ने जो दुश्मन पर हमले किये हैं वे उनके रेडियो स्टेशन और सैनिक स्टेशनों पर हमले किये हैं, मिलिटरी इन्स्टालेशन पर किये हैं और वह हमला हमने इसलिये किया कि उनकी फौजी ताकत खत्म की जाय, हम पाकिस्तान की मिलिटरी पॉवर खत्म करना चाहते थे। हम उसकी जमीन को खत्म नहीं करना चाहते थे जनता को तकलीफ नहीं पहुंचाना चाहते थे। हम उनके पेटन टैंक, सेबरजेट विमानों को खत्म करना चाहते थे जो उनको बिना पैसे के मिला है, जिसके जरिये वह हमारे लिये खतरा बना हुआ था, उस खतरे को निकालना चाहते थे। तो यह हमारी नीति है और उस नीति पर हम चलना चाहते हैं।

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, हमारी नीति के बाद में.....

श्री योगेन्द्रनाथ हांडा (रायसिंहनगर): चोर की मौसी को नहीं, मां को मारो।

श्री नाथूराम मिर्धा (कृषि मंत्री): उनके बारे में भी तो बताओ।

श्री मथुरादास माथुर: इसके विपरीत जो पाकिस्तान ने बर्बरता बरती है उसको हिन्दुस्तान ही नहीं दुनिया को तवारीख नहीं भुला सकती। पाकिस्तान की बर्बरता से हमें दूसरी जंग के हिटलर की बर्बरता के दिन याद आते हैं। राजस्थान में जहां सिविल पोपुलेशन एरिया है—जोधपुर, बाड़मेर और गडरा रोड और पंजाब में अमृतसर, लुधियाना और अम्बाला, जहां

Page No 90

(श्री मथुरादास माथुर)

नागरिक बसते हैं, उनके ऊपर पाकिस्तान ने बम्ब डाले। जोधपुर सेण्ट्रल जेल का जो अस्पताल था उस पर बम्ब डाले, उसके कारण ३३ आदमी मर गये। उस सेण्ट्रल जेल को अस्पताल में ३१ बीमार आदमी पड़े हुए थे, जो बिस्तर से उठ नहीं सकते थे, जो साइरन बजने पर बिस्तर से उठ कर भाग नहीं सकते थे—ऐसी स्थिति में जेल के अस्पताल के ऊपर बम्ब डाला और ३१ बीमार आदमी पाकिस्तान के द्वारा डाले गये बम्ब के कारण मर गये। यह हिन्दुस्तान ही नहीं दुनिया की तवारीख भी भुला नहीं सकती और यह हिटलर की बर्बरता से भी ज्यादा कलंक की बात है।

('शेम-शेम' की आवाज)

इस महीने की सात तारीख से लेकर २२ तारीख की सुबह तक, पन्द्रह दिनों में जोधपुर और जोधपुर के आस पास के क्षेत्र में पाकिस्तान ने १६२ बम्ब डाले, इन बम्बों का वजन सवा लाख पौंड हो सकता है। इसके साथ ही साथ रात के अन्दर सिविल पोपुलेशन पर बम्ब डाले। मैं समझता हूं कि जहां हवाई जहाज का मैदान है और उसके पास में बस्ती हो, वहां पर बम्ब डाला जाय तो बम्ब डालने में थोड़ी गलती हो सकती है। लेकिन जोधपुर का सेन्ट्रल जेल अस्पताल वहां के हवाई अड्डे से काफी दूर है और जोधपुर शहर के बीच में आया हुआ है, वहां पर बम्ब डालना इस बात का सबूत है कि भविष्य में कभी आने वाली जंग के अन्दर वह क्या क्या करने वाले हैं। इसलिए जंग में मुसीबतें आती हैं और मुसीबतों के अन्दर हिन्दुस्तान के लोग पले हैं, भूत में और वर्तमान में भी मुसीबतों का मुकाबला करके हिन्दुस्तान के लोग आगे बढ़ेंगे और देश की अच्छी तरह हिफाजत करेंगे।

इस मौके पर मैं खास तौर से यह भी अर्ज करना चाहता हूं कि पाकिस्तान ने हमला किया हिन्दुस्तान पर और हिन्दुस्तान पर हमले के पहले और साथ साथ हिन्दुस्तान के अन्दर पैराट्रूपर्स भेजे और उन पैराट्रूपर्स को भेजते वक्त अयूब खां ने संदेश दिया, 'इस्लाम खतरे में है! अल्ला ताला तुम्हारा साथ देगा'! जब पैराट्रूपर्स हिन्दुस्तान के अन्दर उतारे उस वक्त पाकिस्तान यह उम्मीद करता था कि हिन्दुस्तान के अन्दर इस खतरे के समय में हिन्दू और मुसलमान आपस में लड़ पड़ेंगे और जो पैराट्रूपर्स गेरे जायेंगे वे जाकर मुसलमानों को मदद देंगे और खून-खराबा करेंगे और हिन्दुस्तान के अन्दर एक इन्कलाब आ जायगा, एक सिविल स्ट्राइक हो जायगी और फिर हम फौजों के जरिये अन्दर जाकर काश्मीर पर और हिन्दुस्तान की कुछ जमीन पर कब्जा कर लेंगे। लेकिन, माननीय उपाध्यक्ष महोदय, हिन्दुस्तान की नीति साफ है, वह पाकिस्तान की एक इंच जमीन भी नहीं लेना चाहता। यदि हम लाहौर पर कब्जा कर लेंगे तो भी उसें पाकिस्तान को वापिस दे देंगे। हम पाकिस्तान की एक इंच जमीन भी नहीं लेना चाहते। साथ ही काश्मीर हिन्दुस्तान का अंग हो चुका है और अंग है। इसलिए हम काश्मीर को नहीं देंगे, नहीं देंगे। हम पाकिस्तान की एक इंच जमीन नहीं चाहते हैं। लेकिन आज के दिन पाकिस्तान यह सोचता है; मैं निवेदन करना चाहता हूं कि पाकिस्तान जिस हालत में पैदा हुआ था, जिस जहरीली

(श्री मथुरादास माथुर)

हालत में पैदा हुआ था, पाकिस्तान ब्रिटेन की जिस इण्ट्रीग के कारण से पैदा हुआ था—इसलिए वह नफरत से और घृणा से ही पैदा हुआ था और वह कभी भी अमन और शांति नहीं चाहता। उसके हुक्कामों में नफरत और घृणा की भावना भरी हुई है और वह सोचता है कि काश्मीर के सवाल पर फैसला हो जायगा तो कल को दूसरा सवाल खड़ा कर देंगे। कच्छ के सवाल पर जंग छेड़ देंगे, कांश्मीर के सवाल पर जंग छेड़ सकते हैं, कल कहीं और कोई सवाल खड़ा करके जंग छेड़ सकते हैं।

पाकिस्तान का जन्म ही घृणा और नफरत से हुआ है। पाकिस्तान के नेताओं ने जब भी कुछ कहा है तो घृणा और नफरत फैलाई है। वहां के हुक्कामखोर जिहाद के नारे लगा कर कहते हैं, इस्लाम खतरे में है। इस्लाम खतरे में है—जैसे इस्लाम उनकी ही बपौती हो और कहीं और इस्लाम बसते ही नहीं हों। मैं निवेदन करना चाहता हूं कि इस्लाम के मानने वाले लोग हिन्दुस्तान में शांति और अमन से रहते हैं। मलेशिया ने हिन्दुस्तान के साथ में अमन और शांति के संबंध बनाये हुए हैं; और भी जिन देशों ने हिन्दुस्तान की अमनी तौर पर मदद दी है और इस प्रस्ताव के द्वारा मदद दी है—मैं उन सबको मुबारकबाद देता हूं जिन्होंने हिन्दुस्तान का साथ दिया है। हिन्दुस्तान के सामने सबसे बड़ी बात है कि हिन्दुस्तान की जीत होकर रहेगी। इसका कारण यह है कि हिन्दुस्तान की नेक नीयत है और इम्पीरियलिज्म के विरुद्ध है और सिक्यूलरिज्म, डेमोक्रेसी और डेमोक्रेटिक डिसेन्ट्रलाइजेशन, में विश्वास रखते हैं और अमन व शांति से रहना चाहते हैं और अपने देश का विकास चाहते हैं। इसके साथ ही हम चाहते हैं कि पाकिस्तान भी अमन और शांति के साथ रहे, उसका विकास भी हम चाहते हैं। लेकिन पाकिस्तान अमन और शांति के साथ नहीं रहना चाहता। अपने यहां के नागरिकों को वह रोटी और कपड़ा भी अच्छी तरह से नहीं दे सकता, वह अपने देश का विकास नहीं कर सकता। वहां के हुक्काम जंगखोर हैं और वहां की जनता को वह गोली दिलवाते हैं, हिन्दुस्तान के साथ लड़ाई का नाम देकर मैदान में मरने के लिए भेजते हैं और जंग में भेज कर उनका खून लेते हैं; इसके विपरीत हिन्दुस्तान के लोग अमन पसन्द लोग हैं। मैं निवेदन करूंगा कि पाकिस्तान की हरकतों के कारण हम अपनी नीति नहीं छोड़ सकते। पाकिस्तान हमें अपनी हरकतों से, अपनी नीति से गुमराह नहीं कर सकेगा। हम हमारी नीतियों पर कायम रहेंगे और अपनी नीति पर दृढ़ रह कर हमें बराबर कामयाबी मिलेगी। अपनी नीति के कारण हमें आज भी कामयाबी मिली है और आगे भी मिलेगी। माननीय उपाध्यक्ष महोदय, इस सदन के माननीय सदस्यों ने और मुख्तलिफ पार्टियों के नेताओं ने हिन्दुस्तान में और सदन में अपने विचार रख कर देश में इस वक्त पर एकता स्थापित की है उसके लिए मैं सब पार्टी के नेताओं को बहुत बहुत मुबारकबाद देता हूं।

अन्त में मैं एक बात कहना पसन्द करूंगा और वह यह है कि बहुत से लोग सोचते होंगे, खास तौर पर सीज फायर होने की घोषणा के बाद कुछ लोगों के दिमाग में शिथिलता आना स्वाभाविक है क्योंकि हमारा देश काफी अर्से से और खास तौर

(श्री मथुरादास माथुर)

पर आजादी के बाद जंग में नहीं फंसा है और जंग के माहौल में से नहीं गुजरा है । मैं समझता हूँ कि अभी तक जंग खत्म होने की परिस्थिति पैदा नहीं हुई । अभी तक चीन का जो इरादा है वह आप और हम सब साफ तौर पर जानते हैं । हमारे उत्तर में चीन जैसा पड़ौसी है जो हमेशा से हिन्दुस्तान के लिए अच्छी नजर नहीं रखता है । दूसरी तरफ पाकिस्तान है । ऐसी स्थिति में जो माननीय सदस्यों ने ज्यादा एफर्ट्स करने, ज्यादा प्रोडक्शन करने और ज्यादा उत्पादन करने की बातें कही हैं और यह भी कहा है जैसे जैसे समय मिले हमारे यहां पर लड़ाई के औजार भी ज्यादा बनें, कारखाने ज्यादा बनें, स्वयं सेवक और वालिन्टियर्स ज्यादा हों । इस तरह के माननीय सदस्यों ने सुझाव दिये हैं । जहां तक ऑक्जीलियरी फोर्स और वॉलिन्टियर्स फोर्स का ताल्लुक है, मुझे मालूम है, दूसरी जंग में इंग्लैंड में रेगुलर फोर्स, आर्मी बहुत कम थी और दूसरी फोर्स, जिसने लड़ाई लड़ी थी वह ऑक्जीलियरी फोर्स और वॉलिन्टियर्स फोर्स थी । हिन्दुस्तान के सामने और दूसरे भी खर्चे हैं इसलिए हम अपने यहां पर ऑक्जीलियरी फोर्स और वॉलिन्टियर्स फोर्स खड़ी करना चाहते हैं । और जो सुझाव आपने रखे हैं, मिलिट्री ट्रेनिंग के और राइफल ट्रेनिंग के, उनको अपने यहां पर चालू करना बहुत जरूरी है । मैं आपको निवेदन करना चाहता हूं कि ये सब बातें सरकार के विचाराधीन हैं और अब इस हालत के अन्दर, मैं समझता हूं, आप और हम बैठ कर ज्यादा चिन्तन करके असली कदम उठायेंगे जिससे कि आगे कभी पाकिस्तान और चीन हिन्दुस्तान की ओर नजर नहीं उठा सकें और हम हिन्दुस्तान की आजादी, हिन्दुस्तान के उसूलों और हिन्दुस्तान के आइडियल्स को सुरक्षित रख सकें ।

श्री फूलचन्द जैन (सुजानगढ़) : माननीय उपाध्यक्ष महोदय····

श्री घासीराम यादव (बहरोड़): मुझे इजाजत दी है आपने ।

श्री रामकिशन : इनको इजाजत देनी चाहिए । घासीरामजी तीन साल में पहली दफा बोल रहे हैं । मैं पड़ौसी का धर्म निभा रहा हूं ।

श्री फूलचन्द जैन : पाकिस्तान ने घुसपैठिये भेज कर काश्मीर के अन्दर हिन्दुस्तान के साथ युद्ध करने की स्थिति पैदा की थी और उसके बाद में जो उसने उसके विस्तार के लिये अपनी ओर से कार्यवाही की थी उस समय से लेकर युद्ध विराम होने तक के समय में हमारी भारतीय फौज के शूरवीरों ने जिस शानदार तरीके से हमारे हिन्दुस्तान की शान को कायम रखा और पाकिस्तान की तमन्नाओं को पूरी तरह से खत्म करने की अपनी पूरी कोशिश की और इसके साथ साथ दुनिया के अन्दर जो हमारी भारतीय फौजों ने मिसाल कायम की, उस पर आज सारे देश को गर्व है और इस सारे युद्ध के अन्दर उन शूरवीरों के कारनामों से जो हमें सफलता प्राप्त हुई उस पर आज सारे देश को नाज है । युद्ध विराम के बाद आज हम इस बात पर सोच-विचार कर रहे हैं कि इस युद्ध के दौरान हमने क्या पाया और क्या खोया ? मैं समझता हूं कि इस युद्ध के अन्दर हमको जहां विजय श्री प्राप्त हुई वहां उसके साथ साथ अनेक प्रकार के तजुर्बे भी हुए । तीन

(श्री फूलचन्द जैन)

क्षेत्रों पर हमने युद्ध लड़ा--मोर्चे पर, घरेलू मोर्चे पर और कूटनीति क्षेत्र में। कम-ज्यादा सही, पर आज यह बात स्पष्ट हो गई है कि तीनों मोर्चों पर जिस किसी ने भी, जिस किसी भी मोर्चे पर हमको हराने की कोशिश की, उसको हमने पछाड़ दिया।

पर इस सारे वातावरण के दौरान में आज हम जिस स्थिति में आ गये हैं उस पर हमें गंभीरता पूर्वक विचार करने की आवश्यकता है।

(३ म. प.)

आज तक हमारी फौजें दुश्मनों के साथ लड़ रही थीं और उन्होंने अपने कारनामों से, अपने पराक्रम से हमारे इस देश के मस्तिष्क को ऊंचा किया और पूरे देशवासियों का हौसला बढ़ाया, परन्तु आज युद्ध कूटनीतिक क्षेत्र में आकर उलझ गया है, हालत साफ है, जैसा कि पाकिस्तान के विदेश मंत्री भुट्टो और अयूबखां ने बयान दिया है। कोई भी इस बात को मानने के लिये तैयार नहीं हो सकता कि आज भी पाकिस्तान के इरादे साफ हों, ऐसी स्थिति हम कभी नहीं मान सकते कि आज युद्ध की जो ज्वाला भड़की थी वह शांत हो गई है। आज भी हमारे सामने वही परिस्थिति है कि किसी भी समय युद्ध की ज्वाला भड़क सकती है। हमारा लक्ष्य, हमारा उद्देश्य, हमारा ध्येय हमारी नीति द्वारा साफ किया जा चुका है। काश्मीर को लेकर यह विवाद खड़ा हुआ। हमारे देश के नेताओं ने और हमारे प्राइम-मिनिस्टर ने स्पष्ट तौर से कहा है कि काश्मीर हिन्दुस्तान का अंग है और दुनिया की कोई शक्ति न इसमें दखल दे सकती है, न इस पर आंख उठा कर देखने की हिम्मत कर सकती है और आज युद्ध विराम के बाद भी वही स्थिति मौजूद है कि हम जहां यह कहते हैं कि काश्मीर हमारा अभिन्न अंग है, आज पाकिस्तान यह कहता है कि काश्मीर जब तक हमको नहीं मिलेगा हिन्दुस्तान और पाकिस्तान में शांति नहीं हो सकती और विशाल पैमाने पर युद्ध हो सकता है।

जैसा मैंने अभी निवेदन किया, आज हम एक अजीब स्थिति में आकर फंस गये हैं। जैसा मैंने अभी निवेदन किया कि कूटनीतिक मोर्चे पर हमको खड़ा कर दिया गया है या अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थितियों वश खड़े हो गये हैं। आज जब हम इस स्थिति में से गुजर रहे हैं तो हमें अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थितियों पर ध्यान रखना होगा और आज जहां हमारे देशवासी रेडियो पर इस बात को सुनने के लिये लालायित रहते थे कि हमारी फौज कितनी आगे बढ़ी है इस चीज को सुनने का अवसर नहीं मिलेगा, क्योंकि आज कूट-नैतिक हलचलें किस प्रकार चल रही हैं। हमने इस स्थिति के दौरान जो तजुर्बे किये इन तजुर्बों से यह स्पष्ट जाहिर होता है कि हिन्दुस्तान जो कुछ भी अपने लक्ष्य, अपने उद्देश्य, ध्येय, लेकर चलता है, उसकी पूर्ति वह सिर्फ अपनी ताकत पर, अपने पैरों पर खड़े होकर कर सकता है। दुनिया के मुल्कों ने, मैं यह नहीं कहता कि हमारा उन्होंने विरोध किया, लेकिन मैं यह भी नहीं कहता कि उन्होंने हमारे प्रति न्याय किया। पाकिस्तान ने हमारे ऊपर आक्रमण किया, इसको कोई मुल्क कहने को तैयार नहीं, छोटे मोटे मुल्क हो सकते हैं लेकिन बड़ी हस्तियें इसको कहने के लिये तैयार नहीं। पाकिस्तान ने अमेरीकी अस्त्रों-शस्त्रों का

(श्री फूलचन्द जैन)

खुल कर प्रयोग किया जबकि अमेरिका, जो अपने को बड़ा शक्तिशाली समझता है, के प्रेसिडेन्ट आइजनहावर ने हमारे देश को आश्वासन दिया था कि अगर पाकिस्तान अमेरिका के हथियारों को भारत के खिलाफ काम में लेगा तो उसे रोका जावेगा, लेकिन आज कहां गये वे आश्वासन जो उस देश के राष्ट्रपति ने दिये थे, जो इतना बड़ा मुल्क होने का दावा करता है।

उपाध्यक्ष महोदय, मैं ब्रिटेन के बारे में भी चर्चा करना चाहूंगा, जिसकी चर्चा हुई है। मैं यह कहूंगा कि ब्रिटेन हिन्दुस्तान से बदला लेना चाहता है और उसने अपनी हरकतों से बता दिया है कि हिन्दुस्तान के प्रति उसकी इतनी श्रद्धा नहीं है जितनी उसकी अपने दूसरे उद्देश्यों को पूरा करने का है।

दूसरी बात मैं सारांश के रूप में निवेदन करना चाहूंगा कि हालत स्पष्ट है कि दुनिया के सभी मुल्क अपने अपने मुल्क की भलाई के बारे में सबसे पहले सोचते हैं और अपनी नीति-रीति और असूल बनाते हैं वह उसी के अनुसार बनाते हैं कि उनकी नीति और भलाई किसमें है।

आज हमारी जो विदेश नीति, जो शांति और पंचशील की नीति और तटस्थता की नीति है उस पर हमें गर्व है, पर हमें निश्चित तौर से इस पर विचार करना होगा कि हमारी नीति में स्पष्टता आनी चाहिये कि जो मुल्क हमारा साथ देते हैं, उसका हम साथ देंगे और उसके साथ दोस्ती निभावेंगे। आज जहां हमने एक साहस का उदाहरण दुनिया के सामने पेश किया है, मुझे इस बात में शक है कि अगर इस साहस का परिचय अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र में नहीं दिया तो हमें आज कूटनीतिक क्षेत्र में युद्ध करना पड़ता है उसमें उलझाये जाने की स्थिति पैदा हो सकती है।

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, जहां तक संयुक्त राष्ट्र संघ के उस प्रस्ताव का प्रश्न है जो हमारी भारतीय सरकार ने स्वीकार किया है उसके संबंध में जो स्थिति है उसके विवेचन में मैं नहीं जाना चाहूंगा पर एक बात बिल्कुल स्पष्ट है कि आज हम ऐसे मोर्चे पर लाकर खड़े कर दिये गये हैं कि हमको अब उस पर बहुत ही सावधानी के साथ और जो इरादे हमने बराबर हिन्दुस्तान के लोगों के सामने रखे हैं उन पर कायम रह कर जो भी परिणाम निकलें, हमें चलना होगा। अन्यथा आज दुनिया की ताकत है, मुझे भय है कि वे हिन्दुस्तान को युद्ध के क्षेत्र में जीतने के बाद में कूटनीतिक क्षेत्र में पराजय दिखाने की स्थिति में हो सकते हैं।

उपाध्यक्ष महोदय, इस हालत में मैं यह निवेदन करना चाहता हूं कि आज हमारी जिम्मेदारी बहुत बढ़ गई है। आज लोगों को यह सुनने को नहीं मिलेगा कि हमारी फौजें कितनी दूर आगे बढ़ गई हैं इसलिये समाचार-पत्र और रेडियो से जो जोश और उबाल आया उसको हम किस प्रकार बनाये रख सकते हैं, इसके लिये सार्वजनिक क्षेत्र में काम करने वाले लोग हैं उन पर बड़ी जिम्मेदारी आगई है कि वे देशवासियों को रोजाना की स्थिति से अवगत कराते रहें। उपाध्यक्ष महोदय, इसके साथ साथ जैसा कि आम तौर पर जैसी कि भावनायें व्यक्त की गई हैं कि आज हिन्दुस्तान के सामने वह स्थिति है, चाहे चीन हो, चाहे पाकिस्तान हो, युद्ध की ज्वाला में हमें धकेला जा सकता है। ऐसी स्थिति में हमारे माननीय प्रधान मंत्री

(श्री फूलचन्द जैन)

और केन्द्रीय गृह मंत्री ने सारी स्थिति को स्पष्ट किया है। माननीय गृह मंत्रीजी ने हमें यह बताया कि नागरिक सुरक्षा के कार्यों को हमें अपने जीवन का सामान्य अंग बना कर चलना होगा। मैं इस प्रसंग में यह निवेदन करना चाहता हूं कि जिस भयंकर दौर में से हम गुजरे हैं, उससे भी और कम बेशी कैसी भी परिस्थितियां हमारे सामने आने की संभावना हैं, उनका मुकाबला हम कैसे जोश-होश और ताकत के साथ कर सकते हैं, इसके लिये आज हमें देश में घरेलू मोर्चे पर काम करने का मौका मिला हैं। इस वातावरण में हमारी राजस्थान सरकार के सामने बहुत बड़ा उत्तरदायित्व आ जाता हैं। आज जहां हम देखते हैं, हमारे देशवासियों ने, चाहे चीन का हमला हुआ, चाहे कच्छ में पाकिस्तान का आक्रमण हुआ, चाहे उसके बाद में यह पाकिस्तान द्वारा हम पर युद्ध थोपा गया, इन सारी हालात में देश ने राष्ट्रीयता के एक सूत्र में बंध कर राष्ट्रीयता का प्रदर्शन किया है। उस उत्तरदायित्व को निभाने में अब जिम्मेदारी मैं राज्य सरकार की मानता हूं। जिस मुल्क के लोग इस प्रकार की एकता का आधार, इस प्रकार के त्याग और बलिदान करने के लिये अद्भुत मिसाल दुनिया में कायम कर सकते हैं, क्या बात है कि साधारण स्थिति में अनेक प्रकार की ऐसी परिस्थतियां हो जाती हैं; उनके मोरल, सोचने-समझने की परिस्थितियों के अन्दर गिरावट आती हैं, आज हमारी सरकार को गम्भीरतापूर्वक विचार करना होगा कि जो समस्याएं हमारे मौलिक मोरल को, चरित्र को गिराती हैं, उनका हल किस प्रकार निकाला जाय। उनका हल निकालना होगा और उसके अनुकूल प्रशासनतन्त्र को ढालने के कदम उठाने होंगे तभी हम मुल्क को उस फिजा का मुकाबला करने के लिये, जिस फिजा से कि अभी हम गुजरे हैं, आयन्दा समय के लिये तैयार कर सकते हैं

श्री उपाध्यक्ष: श्री केदारनाथ !

श्री केदारनाथ (गंगानगर) :मान्यवर मैंने इस सदन में बड़े अच्छे भाषण सुने और आज हम यह बड़े गर्व से कह सकते हैं कि जहां काश्मीर में मुसलमानों को घुसपैठियों से मुकाबला करते देखा वहां, मुसलमानों ने चाहे यू.पी. में हों, चाहे जोधपुर में हों, चाहे गंगानगर में हों, चाहे जयपुर में हों, इस तरह देश के साथ मिल कर सरकार के हाथों को मजबूत किया, तोहम कहसकते हैं कि यह देश गौतम बुद्ध का ही नहीं, अशोक का ही नहीं, अकबर और कबीर का भी देश है। इसलिये इसके साथ साथ इस देश में जो ऐसी शक्तियां पैदा हुई थीं, जो शंका करती थीं कि मुसलमान टू-नेशन थ्योरी को मानते थे, उनके दिमाग में से यह शंका दूर हो जानी चाहिये। हमारे देश की सरकार ने, फौजों ने दो फ्रन्ट्स की लड़ाई लड़ी है। अमेरिका के हथियारों से और दूसरी तरफ चायना की डिप्लोमेसी के साथ । पाकिस्तान ने आज ही नहीं ६३ से, जब से पाकिस्तान और चायना का मिलिटरी और पोलिटिकल पैक्ट हुआ तो हमारे दिमाग में आया कि पाकिस्तान अब वेस्टर्न कन्ट्रीज का सेटेलाईट नहीं रहा ; इसपर भी पाकिस्तान कई सैनिक संधियां करता रहा, कभी सीटो का तो कभी सेंटो का मेम्बर बना। पर ६३ में पैक्ट हुआ तो आजाद काश्मीर का, जो हमारा वैधानिक हिस्सा है, १८००० वर्ग मील हिस्सा उसको दे दिया था तो उसी समय हमारे दिमाग में यह था कि पाकिस्तान मजबूत हो कर हमारे देश पर हमला करेगा।

(श्री केदारनाथ)

दूसरी वर्ल्ड वार हुई तो ब्रिटेन और अमेरिका ने नारा दिया था कि अगर दुनिया के अन्दर शान्ति रखना चाहते हैं तो दुनिया के सब देश एक हो जाओ और इस तरह राष्ट्रसंघ बनाया गया। आज ब्रिटेन और अमेरिका क्यों चुप हो गये, रशिया भी जिस ताकत से हमें मदद दे सकता था नहीं दे सका, यह सोचने की बात होगी। सिवाय नासर के कोई हमारा हमदर्द नहीं। चीन और पाकिस्तान की साजिश टोजो और हिटलर की जिस प्रकार की साजिश थी, उस प्रकार की साजिश थी, एशिया के अन्दर यह हमने देखा। यू.एन.ओ. में देखा कि हिन्दुस्तान के साथ जो इन्साफ होना चाहिये था वह नहीं हुआ, आज तक उसके संविधान में, चार्टर में जो बातें कही गई उनके खिलाफ उसकी बातें साबित हुई, यह देखा गया कि राष्ट्रसंघ इन्साफ के स्थान पर बैलेंस ऑफ पॉवर बनाये रखना चाहता है। चीन हमसे दो साल बाद आजाद हुआ। ५१ में हमनें तिब्बत को चायना के भरोसे छोड़ दिया हालांकि १४ में ही मैकमोहन लाइन तय होगई थी। तिब्बत को नोर्थ वेस्ट फ्रन्टियर एजेन्सी में नहीं माना और चीन का पार्ट मान लिया। ५४ में हमने "चीनी हिन्दी भाई भाई" के नारे सुने और ५६ में उसने हमारी सरहद में सडकें बनानी शुरू कर दीं और चाइना ने ६२ में हमारे ऊपर हमला कर दिया। तो यह सब हमारे मिस-केलकुलेशन से हुआ। पाकिस्तान के मामले में भी ऐसा ही किया। हिन्दुस्तान के पार्टीशन के वक्त में खूनखराबी हुई। पाकिस्तान के ब्रिटिशर्स के बाई प्रोडक्ट के नाम से पैदा हुआ। पाकिस्तान बनने के ठीक १५ दिन के अन्दर काश्मीर पर पाकिस्तान ने हमला बोल दिया, हमने बर्दाश्त किया। हम सिक्योरिटी कौंसिल में गये और ४९ में हमें सीज फायर लाइन को मानना पड़ा; नहीं मानना चाहिये था, पर हमें शान्ति के नाम पर मानना पड़ा। पाकिस्तान की तरफ से कई प्रकार की बात-चीतें हुईं। ५५, ५९ और फिर ६० में प्राइम मिनिस्टर्स लेवल पर फैसले हुए, मगर पाकिस्तान ने किसी भी चार्टर के किसी भी क्लेम को नहीं माना, पर हमेशा हिन्दुस्तान को दबाया गया। पाकिस्तान ने हमेशा शोर किया। ६३ में चायना पाकिस्तान का पैक्ट हो गया, गुरिल्ला वार फेअर की तैयारी हुई, चायना ने स्ट्रेटेजी, लड़ाई की पाकिस्तान को ट्रेनिंग दी, अमेरिका ने हथियार दिये और पाकिस्तान ने हम पर कच्छ में हमला बोल दिया। शान्ति के नाम पर हमने उसका १८ मील का पैट्रोलिंग माना, बियारबेट और सरदार चौकी उनको दे दी और ३५०० स्क्वायर माइल को डिसप्यूटेड मान लिया। इस सबने पाकिस्तान में हिमाकत पैदा कर दी और उसने हम पर हमला किया। ५ अगस्त को हमलावर भेज कर और १ सितम्बर को हमारी सीमा पर हमला बोल कर, हम पर आक्रमण कर दिया।

मेरे दोस्त कहते हैं, भुट्टो, अयब यह धमकी देते हैं। मगर मैं भी यह मानता हूं कि पाकिस्तान में सोश्यलिस्ट फोर्सेज पैदा हो रही हैं, वहां ऐसी ताकत पैदा हुई कि जो चीन का सेटेलाइट बनकर रहेगी या सीटो या सेन्टो का मेम्बर नहीं रहेगा या बिल्कुल ही एक नई ताकत पैदा होगी। इसलिए इन सारी चीजों को नये पर्सपेक्टिव से देखना होगा। आजादी के इन १७ सालों में हमने बड़ी बड़ी ताकतों को खुश करने का ख्याल रखा। बर्मा, लंका, सिक्किम, भूटान

(श्री केदारनाथ)

इत्यादि से हमने मिलिटरी कोलेबोरेशन नहीं करना चाहा, इनसे संबंध सुधारने की बात को नजरंदाज करते रहे। जब वेस्टर्न पॉवर्स और दूसरे देशों ने हमारा संकट के समय साथ नहीं दिया तब हमारी सरकार सुधरी है। अपनी पुरानी बातों को देख कर नए तरीके से सोचने की बात करती है, जिसके लिए हम उसको मुबारिकबाद देते हैं।

हिन्दुस्तान शांति चाहता है, हम नॉन-एलाइनमेंट की पॉलिसी चाहते हैं, हम देश के अंदर समाजवाद चाहते हैं और धर्म निरपेक्षता चाहते हैं बड़ी मजबूती के साथ। आज सरकार के सामने परीक्षा का समय है। वह देखे कि प्लान में कैसे रीओरिएन्टेशन करें, कारखानों के कानून और जमीन के कानूनों में क्या तब्दीली करें, इस बात का ध्यान रखें कि नागरिक मोर्चों पर कौन थे, नागरिक सुरक्षा में किन लोगों ने काम किया, होम गार्ड्स में कौन लोग थे, मोहल्ला कमेटियां बनाकर कौन से लोगों ने पहली पंक्ति में खड़े होकर लोगों का मनोबल ऊंचा किया।

मुझे वह समय याद है १७ सितम्बर को हिंदूमलकोट पर एन्काउंटर हुआ, मैं वहीं बैठा था। पाकिस्तान के मिलिटरी वाले आते हैं, उनके साथ रेन्जर्स आते हैं, उनके साथ मुजाहिद आते हैं। तीनों इकट्ठे होकर साढे नो बजे रात को गोलियां चलाते हैं, एन्काउंटर होता है। हमारी आर. ए. सी. के साथ होम गार्ड्स थे, विलेज वॉलंटियर्स थे। दो घंटे गोली चली, उसके बाद पाकिस्तान की फौज वापिस चली जाती है, मुजाहिद छोड़ जाते हैं क्योंकि जमीन पर फसलें खड़ी हैं कपास की, गन्ने की, बाजरा की उसमें आदमी छिप जाते हैं, तो दो मुजाहिदों को छोड़ गये। बड़े बड़े मालिक तो भाग गये भय के कारण, नौकर खेतों को पानी लगाते थे उन्होंने दोनों मुजाहिदों को गोली मार दी, इस तरह से १८ तारीख को जब दूसरे मुजाहिद आये, वहां पर रुके गुरुदयाल सिंह ने उनको पकड़ कर पुलिस के सुपुर्द कर दिया।

(समय-समाप्ति सूचक-घंटी)

लोगों के दिल और दिमाग में पैनिक की बात नहीं, वह गरीब तब्का इंडस्ट्रियल लेबर का है, जो मजदूर है, जो कर्मचारी हैं, उनके दिमाग में भय नहीं आया। अगर पैनिक और भय आया तो उन लोगों के पास आया जो चाहते हैं कि सीलिंग लागू न हो, जो चाहते हैं कि राजस्थान कैनाल की जमीन जोईंट स्टॉक कंपनीज़ को दे दें और भूमिहीन किसानों को मत दें। आज वे लोग हैं बड़े बड़े मालिक जो शिफ्टों को बंद कर ट्रेड यूनियन्स पर डाके मारकर उनके बुनियादी हकों को मारते हैं, मजदूरों को मजदूरी नहीं। सादूल टैक्सटाइल मिल के लोग काम करते रहे होम गार्ड्स में भर्ती हुए। यह साफ दिखाता है कि देश की पहली पंक्ति में खड़े होकर रक्षा का काम किसने किया? बोर्डर का इलाका वह इलाका है जहां शरणार्थी पाकिस्तान से आए हैं। उन लोगों ने कहा कि हम खाइयां अपनी हद में क्यों खोदें? हम खाइयां तो पाकिस्तान की हद में खोदेंगे। हम तो पाकिस्तान छोड़कर इस देश के लिए यहां आए। लेकिन सरकार का रवैया उनके प्रति ठीक नहीं रहा, हमसे भय ब्याज किश्तें लेते हैं लेकिन यह समय देश के संकट का है इसलिए सारी बातों को छोडकर बंदूकों का सामाना किया।

(श्री केदारनाथ)

जब कच्छ पर हमला किया, २६ और २७ अप्रेल के बीच आर. ए. सी. पोजीशन्स से वापिस हट गई है, मिलिटरी टैंक ओवर नहीं करती है, दो दिन का समय ऐसा था, लोगों में पैनिक थी। लोग लकड़ी की बंदूकें बनाकर चौकियों पर चढ़ गए, यह दिखाने के लिए आर. ए. सी. अभी मौजूद है। जिस देश का इतना मनोबल हो, इतनी दृढ़ता हो, उस राष्ट्र को कोई पैटन टैंक, या सेवरजेट नहीं हरा सकता, अमेरीका के हथियार या चीनी जमाव दबा नहीं सकता लेकिन हम गलत नीति, गलत व्यवस्था, गलत कानून को ठीक करें तो इस देश को कोई हरा नहीं सकता, यह देश ऊंचा रहे। अगर नॉन–एलाइनमेंट की पॉलिसी में या सेक्यूलरिज्म की पॉलिसी में हमने १७ साल में कोई नुकसान उठाया तो १ सितम्बर के बाद जब पाकिस्तान ने मोर्चे खोले तो सारी की सारी कमियां भूल गए और गेन्स हासिल किए, लेकिन इन गेन्स को कन्सोलीडेट करने की जरूरत है। मैं यह मानता हूं कि हमने किसी की चिंता नहीं की, भय नहीं किया। यह सही है कि हमारी सरकार ने टाइमली सारी चीजें की हैं, सारा इंतजाम किया है, मोबीलाइज करने का काम किया है लेकिन एक बात है कि सरकार ने आम तौर से नौकरशाही को पावर दे दिए। यह सही है कि कर्मचारियों ने साथ दिया, एन. सी. सी. ने साथ दिया, किसी कर्मचारी ने अपना इलाका नहीं छोड़ा, गांव नहीं छोड़ा, मगर डी. आई. आर. के तहत जिस प्रकार पेश आते हैं या बोर्डर पर एम. एल. एज. को जीप नहीं देना, डिफेंस कमेटीज में उनको शामिल नहीं करना, यह ठीक नहीं। हमारी सरकार नेशनल फ्रन्ट पर नेशनल तरीके से सोचे और सारी नीतियों में इस दृष्टि से परिवर्तन लाये प्लान और इकोनोमी में, सोशियल स्ट्रक्चर में तो यह देश दुनियां में अमन और शांति कायम करने में मदद कर सकता है।

श्री उपाध्यक्ष : श्री मोतीलाल चौधरी।

श्री ज्वालाप्रसाद शर्मा (नसीराबाद) : उपाध्यक्ष महोदय, क्लेरीफिकेशन में मैं एक बात चाहता हूं। ४ बजे सरकार का जवाब होने वाला है, भावनाओं का सवाल है। आप समय बढाएंगे या नहीं, या तो टाइम लिमिट शुरू से फिक्स कर देते।

श्री उपाध्यक्ष : यदि सदन की इच्छा होगी तो आधा घंटा समय बढा देंगे।

श्री मानसिंह महार (आमेर) : एक घंटा।

श्री उपाध्यक्ष: इसको बाद में देख लेंगे। इसके साथ साथ मैं यह निवेदन करूं कि दस मिनट से अधिक न बोलें।

(सर्व श्री मोतीलाल चौधरी और निरंजननाथ आचार्य, उप-मंत्री, गृह के साथ खड़े होने पर)

I hope, the Hon'ble Deputy Minister would be generous enough to allow Shri Motilal Choudhary to speak.

श्री मोतीलाल चौधरी (डीडवाना) : उपाध्यक्ष महोदय, उप-मंत्री जी को मेरे बाद बोलने का मौका मिलेगा।

उपाध्यक्ष महोदय, आज हम हाउस में, इस संकट काल में, युद्ध विराम के बाद जो मुख्य मंत्री जी ने प्रस्ताव रखा है उसका

(श्री मोतीलाल चौधरी)

समर्थन कर रहे हैं। जहां तक प्रस्ताव का सम्बन्ध है इस हाउस का प्रत्येक सदस्य और जन-भावना सब एक है। मैं भी उस प्रस्ताव का समर्थन करते हुए हाउस से कुछ निवेदन करना चाहूंगा। देश की जो विदेश नीति है, समाजवादी नीति है और समाजवादी दृष्टिकोण से अपनायी गयी आर्थिक नीति, जनतान्त्रिक दृष्टिकोण से उसका निचोड़ लेना चाहिए। मैं सबसे पहले आपकी मार्फत अपनी तरफ से और जिस जनता का मैं प्रतिनिधित्व करता हूं उसकी तरफ से भी हिन्दुस्तान के स्वभिमानी सैनिकों को, जिन्होंने देश की रक्षा के खातिर अपना बलिदान दे दिया, उनको श्रद्धान्जलि अर्पित करता हूं। न जाति और न ही धर्म की बात है। एक राष्ट्रीय भावना है। हिन्दुस्तान के इतिहास में यह पहला मौका है जब कि हिन्दुस्तान एक राष्ट्र के रूप में एक होकर लड़ा है। चीन का हमला हुआ। उस समय लड़ने का मौका नहीं पड़ा। उसने धोका दिया और धोका खाना पड़ा। लेकिन अब राष्ट्रीय लड़ाई का मोर्चा यहां लगा और एक राष्ट्र के रूप में लड़ाई लड़ी। आगे बढ़े वह हमारी राष्ट्रीय नीति के कारण।

वहां से जो खबरें आयी हैं उनसे मालूम होता है कि हमारी राष्ट्रीय नीति का पाकिस्तान के जनमानस पर बड़ा असर पड़ा है। शासन करने वाले लोगों पर भी पड़ा है। भुट्टो और अयूब पर नहीं पड़ा। पाकिस्तान बना जब भुट्टो १८ वर्ष का लड़का था। उसको मालूम नहीं कि किस प्रकार हिन्दुस्तान को आजादी मिली है, किस प्रकार से देश को ब्रिटिश हुकूमत से फ्री किया है, किस प्रकार से राजाओं से राज्य लिये और किस प्रकार जागीरदारों से जागीरें लीं। भुट्टो के खून में भी यह नहीं आ सकती थी, उस समय वह मासूम बच्चा था। आज यह बात पाकिस्तान के अन्दर भी मालूम पड़ती है इसलिये सरकार को उस दृष्टिकोण से विचार करना चाहिए। ऐसी भी वहां की आवाज मालूम पड़ती है कि राजनैतिक दृष्टिकोण से इस लड़ाई को सहयोग नहीं दिया। आज वहां मिलिटरी सरकार है, एक निरंकुश सरकार है, वहां की जनता उनसे मुक्ति पाना चाहती है। सरकार मेरी भावना को सिक्योरिटी कौंसिल में पहुंचाने के लिए इस बात के रूप में रखे कि वहां की जनता लोकतन्त्रीय व्यवस्था चाहती है और वह आज मुक्त नहीं है तानाशाही से पाकिस्तान की सहस्त्र कोटि-कोटि जनता को इन तानाशाहों से मुक्ति दिलाये।

साथ ही साथ माननीय उपाध्यक्ष महोदय, एक सुझाव देना चाहूंगा। हमारे मित्र यू. एस. ए. ब्रिटेन ने जिस प्रकार का रोल खेला है, हमारा जिस प्रकार उन्होंने साथ नहीं दिया जब कि हमला हुआ, जिसका अब इतिहास बन चुका है, भारत सरकार से निवेदन करूंगा कि वह सिक्योरिटी कौंसिल में इस बात को रखे कि आयन्दा के लिये पाकिस्तान को कोई देश इस प्रकार शस्त्र न दे। हिन्दुस्तान के जनतन्त्र को समाप्त करने के लिये इस प्रकार के शस्त्र काम में न आवें। किसी भी देश को किसी के जनतन्त्र को खत्म करने का अधिकार नहीं है। इसलिये यू. एन. ओ. के अन्दर इसके लिये जोर दिया जाय। यह दूसरे राष्ट्रों की फीडम को बचा पायगी नीति। दुनिया के जितने शान्ति-प्रिय देश हैं उनको ख्याल करना चाहते हैं कोई भी देश पाकिस्तान को अस्त्र भेजा

(श्री मोतीलाल चौधरी)
है, युद्ध की सामग्री भेजता है, कोई उसको इस माने में सपोर्ट करता है तो उसका सब को विरोध करना चाहिए।

इसके साथ साथ उपाध्यक्ष महोदय, हमारी नॉन-एलाइनमेन्ट की जो पॉलिसी रही है वह खरी उतरी है। यदि किसी पार्टी के दिमाग में इस पॉलिसी के प्रति कोई चीज हो तो वह निकल जानी चाहिये। हमारी राजनैतिक पॉलिसी, आर्थिक पॉलिसी बिल्कुल खरी उतरी है।

एक बात पर मैं विशेष जोर देना चाहूंगा कि युद्ध के बाद हमें पोस्ट वार रिकन्स्ट्रक्शन करना चाहिये। क्या करना चाहिये? इसके लिए बहुत से कार्यक्रम बनायें। मुझे एक बात जंचती है वह यह है कि हमारे जो फौजी वीरगति को प्राप्त हो जाते हैं उनके परिवार को कुछ नकद दे दिया, उनको जमीन दे दी, यह मैं समझता हूं देश के लिए अन्याय होगा। जिस परिवार में बच्चे रह गये हैं फौजी के वीरगति पाने के बाद तो शक्तिशाली परिवार को उनको गोद लेना चाहिये और उनको जो भी आर्थिक भरण-पोषण करना है वह उनके मार्फत हो। वर्ना होता यह है कि फौजी लड़ने के लिए चला जाता है और वीरगति प्राप्त हो जाता है तो पीछे उनके बच्चों को सम्हालने वाला कोई नहीं रहता है। विदेशों में जब पोस्ट वार रिकन्स्ट्रक्शन हुआ तो यही किया है। कोई फौजी अपंग हो गया और पेन्शन मिल गयी, जब पेन्शन लेने जाता है तो उसके दिमाग में बड़ा असर होता है। इसलिये शक्तिशाली परिवार वाले वीरगति पाने वाले फौजियों के बच्चों को गोद ले लेते हैं और अपंग जो कि काम करने योग्य हों उनको भी इन्डस्ट्री वगैरा में काम में लगा देते हैं।

एक बात मंत्रीजी से कहना चाहता हूं। युद्ध के पहले प्रोडक्शन प्लॉन था। युद्ध विराम के बाद हमें शिथिल नहीं होना चाहिये। कहीं फेल्योर होने वाले हैं तो खेती में होने वाले हैं, वार पोटेन्शियल में नहीं होने वाले हैं। लड़ाई के लिये प्रोडक्शन किस प्रकार हो रहा है यह दुनिया ने देख लिया है। कितना सामान है। लड़ाई की दृष्टि से हम हारने वाले नहीं हैं यह दुनिया ने भी देख लिया है। लेकिन इकोनोमिकली हार होने वाली है। यदि अमेरीका से गेहूं लेना बन्द नहीं किया और प्रोडक्शन नहीं बढ़ाया तो मैं इसको हारना समझता हूं। आप एग्रीकल्चर मिनिस्टर हैं, राजस्थान का अधिक से अधिक प्रोडक्शन बढ़ा दें। कड़ा से कड़ा कानून बना दें कि कोई खेत पड़ा नहीं रहेगा, कोई कुआ पड़ा नहीं रहेगा। लैंड एक्वीज़िशन एक्ट पास किया हुआ पड़ा है, ५० परसेन्ट के ऊपर खेती नहीं होती है तो खेती नहीं करते हैं। पचास प्रतिशत कुए पड़े रहते हैं। आज जयपुर के आसपास के दस मील के एरिया में जो जमीन है वह बिल्कुल प्रोडक्शन नहीं करती। इस तरह की भूमि हर एक शहर के पास मिलेगी। बड़े बड़े आदमियों ने जमीनें लेकर डाल रखी हैं। पोस्ट-वार की स्थिति में हमें न रह कर आज जो युद्ध विराम की स्थिति बनी है उसमें हमें शान्त होकर नहीं बैठना है न मालूम कभी भी लड़ाई छिड़ सकती है। भुट्टो साहब व अयूब के भाषणों से यह स्पष्ट प्रतीत होता है न मालूम कभी भी लड़ाई छिड़ सकती है। वार के पहले जो हमारी खाद्य नीति रही है उसके बारे में आगे फिर चर्चा करेंगे लेकिन मैं एक

(श्री मोतीलाल चौधरी)

बात अवश्य कहना चाहूंगा कि हमें खाद्य के मोर्चे पर सुदृढ़ नीति अपनानी चाहिये, प्रोडक्शन प्लान को आगे बढ़ाना चाहिये।

आखिर में उपाध्यक्ष महोदय, जिस भावना और जोश के साथ हिन्दुस्तान ने लड़ाई लड़ी है और इसमें जिस प्रकार का सहयोग भिन्न-भिन्न पार्टियों का रहा है मैं फिर उनसे निवेदन करना चाहता हूं हम आयन्दा के लिये भी यह प्रतिज्ञा करें कि ऐसी जब कभी भी स्थिति उत्पन्न होगी हम अपने सिद्धान्तों से पीछे नहीं हटेंगे, हमारी जो विदेश नीति बन चुकी है, हम जिस समाजवाद की ओर आगे बढ़ रहे हैं उनमें हमारे व्यक्तिगत स्वार्थ के खातिर हम पीछे नहीं हटेंगे।

श्री उपाध्यक्ष : श्री ज्वालाप्रसाद।

श्री ज्वालाप्रसाद शर्मा (नसीराबाद) : माननीय उपाध्यक्ष महोदय, जो संकल्प माननीय मुख्य मन्त्रीजी ने सदन के सामने प्रस्तुत किया है उसका अक्षरशः सदन के सभी माननीय सदस्यों ने समर्थन किया है। मैं भी इस संकल्प के हर शब्द का समर्थन करता हूं।

उपाध्यक्ष महोदय, सदन में आज जितनी तकरीरें हुई हैं उनके बाद में केवल एक बात पर जोर देना चाहता हूं, वह बात यह है कि अयूब साहब ने जो घोषणा कर रखी है उसको देखते हुए यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि आज भी उनके इरादे लड़ने के हैं। आज जो सीज फायर हुआ है। इसका इतना ही मतलब है सदन को साफ तौर से यह समझ लेना चाहिये कि जो मसला है जिस कारण युद्ध हुआ है वह मसला वहीं का वहीं है। फौजें भी वहीं की वहीं है और जो समस्याएं हैं वे भी वहीं की वहीं हैं। हमारे मुल्क की जो स्थिति है, जो युद्ध की स्थिति में इस मुल्क ने जिस तैयारी का प्रदर्शन किया है उसी तैयारी के साथ हमें आज भी अपने आपको रखना है, सीज फायर के वक्त भी सारे मुल्क को तैयार रहना चाहिये।

आज जैसा समय है उस समय में हम कुछ पॉलीसिज के बारे में नुक्ता-चीनी कर सकते हैं, इसमें हमें कोई ऐतराज नहीं है। मैं यह कहना चाहता हूं कि यह पॉलीसी सरकार की है उसमें हमें नुक्ता-चीनी करने का जहां अधिकार है वहां हमें आज की देश की स्थिति को देखते हुए हमें यह अनुभव करना चाहिये जहां हमारे में सिद्धान्तों के दृष्टिकोण से भले ही भिन्नता हो लेकिन जब देश के सामने युद्ध की स्थिति होती है उस समय में सारे मतभेदों को भुलाकर हम सब एक हैं। आज के वक्त में जो हमारे देश में जो सैक्यूलरिज्म था उसके कारण सब कौमों ने साथ दिया। जो कुछ बगल-बच्चे थे जो लोग यह मान कर के चलते थे कि यहां के रहने वाले मुसलमान हैं वे इस्लाम खतरे में है के नाम से आक्रमण-कारियों का साथ देंगे, उनको भड़का कर उससे फायदा उठा सकेंगे लेकिन उनकी यह आशा बिल्कुल निराशा में परिणत हो गई है। जब आजादी की लड़ाई लड़ी गई उस समय सब कौमों ने साथ दिया है। जहां हमने विदेशियों को यहां से निकाला उसके बाद में जो सपोर्टर्स थे विदेशियों के उन्होंने २००, वर्ष तक हिन्दु मुस्लिमों को लड़ा कर के पाकिस्तान नाम की चीज को छोड़ गये। उसके बाद जब पाकिस्तान का जन्म हुआ जिसको थ्योक्रेटिक स्टेट है ऐसा मैं नहीं मानता, इस्लाम स्टेट भी नहीं मानता। यहां के मुसलमान जो छः करोड़ की संख्या में हैं जो पाकिस्तान की संख्या के करीब करीब है। इसलिये पाकिस्तान का यह दावा कि वह

Page No 102

(श्री ज्वालाप्रसाद शर्मा)

इस्लामिक राज्य है लेकिन उसके जो कारनामे हैं उससे यह नहीं माना जा सकता कि वह इस्लाम के उसूलों पर चलने वाला देश है। वहां जो खास झगड़ा है वह सुन्नियों का झगड़ा है । वह अपने आपको मोहम्मद साहब की औलाद मानते हैं, लेकिन न तो वह मोहम्मद साहब की औलाद हैं न वहां जमूहूरियत है और न इस्लामिक राज्य है। इस्लाम के नाम से वे गलत फायदा उठाते हैं।

मैं यह मानता हूं कि आज इस चीज़ का फ़ैसला होने वाला नहीं है। हमारे यहां एक नयी बात हुई है । आजादी के बाद हमने चीन से जो युद्ध हुआ उससे पाकिस्तान भी यह सोचने लगा कि मैं भी हाथ बता सकता हूं, उसको यह स्वप्न आने लगे कि वह भी हिन्दुस्तान को गुलाम बना सकते हैं। चीन ने यह देखा कि हिन्दुस्तान ताकतवर न हो जाय उसने ६२ में हमारे पर हमला किया उसके बाद जब मुकाबले की जगह हम उनको ले आये तो अपना दबदबा कायम करने के लिये वे भाग गये, उसका मकसद यह था कि उसका दबदबा हिन्दुस्तान पर बैठ गया तो सारी दुनिया पर और खास कर एशिया पर उसका दबदबा बैठ जायगा। एशिया के अन्दर डेमोक्रेटिक रूप से चलने वाले इस देश का दबदबा घट जायगा और मेरा दबदबा बढ़ जायगा, अफ्रो-एशियन कन्ट्रीज पर दबदबा बैठ जायगा। लेकिन हिन्दुस्तान की जो ताकत है उसको देख कर उसका दबदबा अब खतरे में पड़ गया है। कम से कम एशिया के अन्दर चीन को अब शक्तिशाली मानने वाले देश नहीं हैं। डेमोक्रेटिक कन्ट्रीज में आज हमारा दबदबा है, इसको मैं गौरव के साथ कह सकता हूं।

जिन गलत थ्योरीज़ के आधार पर पाकिस्तान बना है, आज उसके जो सलाहकार हैं वे उसे और गलत रास्ते पर ले जा रहे हैं। आज हमारा हिन्दुस्तान एक गुलदस्ते की तरह बना हुआ है । भिन्न-भिन्न जातियों के लोग जो इस देश में हैं वे सब एक गुलदस्ते की तरह हैं । इस गलतफहमी में कि पापड़ की जगह पत्तल खाने के लिये घुसपैठिये घुस आये। फौजी आदमियों को साधारण वेश में घुसेड़ दिया है क्योंकि उनको विश्वास था कि वहां के लोग हैं वे हमारी मदद करेंगे और फिर हमारी फौजें जाकर वहां पर कब्जा कर लेंगी, लेकिन उनके इस इरादे पर पानी फिर गया। क्या हुआ कि जब लाहौर पर हमला किया गया तो आप देखिये उनका प्रचार किस प्रकार का था, वे लोग प्रचार करने लगे पंजाब के लोग सन्त फ़तहसिंह के साथ हैं, सिक्खों को हम पूरा सहयोग देते हैं। कम्युनलिज्म को भड़काने के लिये उन्होंने प्रचार शुरू कर दिया लेकिन सन्त फतहसिंह ने देश की पुकार को ज्यादा महत्व दिया और उन्होंने अपना अनशन करना स्थगित कर दिया। देश पर संकट देखा तो उन्होंने अपना अनशन करना स्थगित कर दिया। जो रेडियो पाकिस्तान इसके पहले घोर प्रचार करता रहा था उसका पर्दाफ़ाश हो चुका। देश के अन्दर जिस प्रकार की हालात थी उसको देख कर वे उसका फायदा उठाना चाहते थे। लेकिन पंजाब को जिस प्रकार की कुर्बानी देनी पड़ी वह इस तरह की है कि पाकिस्तान आज उधर आंख भी उठाकर नहीं देख सकता।

अमृतसर के अन्दर, सीमाओं की रक्षा के लिये जिस प्रकार का साहस हमारे जवानों ने बताया उससे जिस प्रकार की हालत

(श्री ज्वालाप्रसाद शर्मा)

हैदराबाद में कासिम रिज़वी की हुई वही हालत आज अयूब की हो रही है। आज वह "अल्ला अल्ला" पुकार रहा है और इस समय में इस्लाम का नाम लेकर मुसलमानों को भड़का रहा है। अब बेटे को "अल्ला" याद आया है। अल्ला ने कब ऐसा कहा कि अपनी सीमा बढ़ाने के लिये बन्दूक लेकर लोगों को मारो, अपने पड़ौसी को खतरा पहुंचाने की कोशिश करो? आज जो वह कदम उठा रहा है उससे वह चाहता है कि अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर उसका कुछ असर हो सके, वह असर डालने की कोशिश हो सकती है।

इन बीस दिनों के अन्दर देश के सभी वर्गों ने, पार्टियों ने, जिस एकता व प्रेम का प्रदर्शन किया है उसी तरह आगे भी हमें इसी तरह से तैयार रहना है जब तक कि हमारे देश की सीमायें पूर्ण रूप से सुरक्षित न हो जावें, जिसमें काश्मीर भी हमारा एक अंग है और जिस के लिये हमने ऐलान किया है कि यह भी वैसा ही अंग है जैसा देश का अन्य प्रान्त या हिस्सा।

जो प्रस्ताव रक्खा गया शहीदों की याद में और दो मिनिट मौन के लिये अध्यक्ष महोदय ने हमें खड़ा किया, उन शहीदों के लिये हमारे मन में बड़ा स्थान है। उन्होंने हमारी डेमोक्रेसी के लिये, हम सब को अपने घरों में आराम से आने–जाने और रहने के लिये अपनी जान की शहादतें दी हैं। उनकी यह शहादत, उनका यह बलिदान अमर रहेगा। यह मुल्क उनको नहीं भूलेगा, इतिहास उनको नहीं भूलेगा।

उनके लिये मैं तो सरकार से यहां तक चाहूंगा कि वह उन सबकी एक लिस्ट बनाए और उनके परिवार वालों को सब तरह की सुविधाएं मिलें इसका प्रबन्ध यह सदन करे, यह जिम्मेदारी सदन वहन करे, जनता वहन करे। यह सबकी जिम्मेदारी है। उनकी आत्माएं भी देखना चाहती हैं कि जिस ध्येय के लिये, जिस देश की सीमाओं की रक्षा करने के लिये, उन्होंने अपना बलिदान दिया है उनके बाद भी उनकी रक्षा के लिये हम क्या करते हैं।

मैं इसके साथ ही यहां की पुलिस की भी प्रशंसा करना चाहता हूं। जिन मुजाहिदों ने हमारी सीमाओं की चौकियों पर हमला किया और उसमें हमारी आर्म्ड पुलिस के श्री पूनमसिंह ने सात पाकिस्तानियों को जिस तरह से अकेले ने मार कर एक मिसाल कायम की है आज उसका एक मूल्य होना चाहिये।

हमारी पुलिस को, इस इमर्जेन्सी के वक्त में अपील करूंगा कि उसमें आर्म्ड पुलिस में और मिलिटरी तीनों में सामन्जस्य होना चाहिये और साथ साथ सारी जनता में ओपरेटिव पार्ट के लिये तैयारी करनी चाहिये। हमारी सीमाओं की रक्षा के लिये इनके सामन्जस्य की अधिक आवश्यकता है।

हम आज भी लड़ाई पर हैं। सीज़ फ़ायर हुआ है केवल। हमें अपने सिद्धान्तों की रक्षा के लिये, चाहे दुनिया की सारी ताकतें आ जायें, तब भी जैसा कि हमारे प्राइम मिनिस्टर की घोषणा है अपनी सीमाओं की रक्षा के लिये हमें दृढ़-प्रतिज्ञ होना चाहिये। एक सुई की नोक के बराबर भी हम अपनी सीमा की ज़मीन देने को तैयार नहीं हैं।

(समय–समाप्ति सूचक-घंटी)

Page No 104

(श्री ज्वालाप्रसाद शर्मा)

अन्त में मैं फिर आपसे अपील करूंगा कि आज हमारे मन और हमारी आत्मा उन वीर जवानों के साथ है जो आज भी सीमा की रक्षा करने के लिये तैयार खड़े हैं और जो शहीद हो गये हैं उनके परिवारों के साथ हैं। हम में से भी उनके कई रिश्तेदार हैं। मैं उनकी नहीं कहता । उनकी तो रिश्तेदारी हम सबसे है। हमारे बेटे, भाई, चाचा, काका से ज्यादा प्रेम और हमारा मोह उनके प्रति है जिन्होंने कि आज हमारी सीमा रक्षा के लिये प्राण दिये हैं। उन शहीदों का अभिनन्दन करते हुए मैं अपना भाषण समाप्त करता हूं।

श्री उपाध्यक्ष : सदन की बैठक का समय जब तक कि यह संकल्प पारित न हो जावे, तब तक के लिये बढ़ाया जाता है ।

श्री मोहनलाल सुखाड़िया (मुख्य मंत्री) : माननीय उपाध्यक्षजी, इस सदन में इस संकल्प पर सब तरफ से जो माननीय सदस्यों ने अपने अपने भाव व्यक्त किये हैं वे उसी भावना के प्रतिबिम्ब हैं जो सारे देश में आज हम नजर आती हैं ।

स्पष्ट तौर से सारे देश में आज यह इच्छा है कि जिस वीरता और दृढ़ता के साथ हमने इस संबंध में कार्यवाही की, आगे भी इस समस्या के हल के बारे में वैसे ही कदम उठाये जावेंगे ।

मैं संक्षेप में कुछ बातों की तरफ आपका ध्यान आकर्षित करना चाहूंगा ।

(४ म. प.)

(श्री अध्यक्ष, पुनः पदासीन)

ज्यादा विस्तार में नहीं जाऊंगा । एक बात तो यह कि यह एक ऐसा नाजुक वक्त है कि जिस वक्त कि मैं यह समझता हूं कि दूसरे राष्ट्रों का और हमारे राष्ट्र का आपस में क्या संबंध हो, कौन से हम आगे के लिये किसके साथ क्या संबंध बनावें, मैं समझता हूं कि वे काफी गम्भीर मसले हैं और जिस सरकार ने सारी स्थिति को इतनी दृढ़ता के साथ और सफलता पूर्वक वहन किया है हमें उन पर ही पूरे विश्वास के साथ इस बात को भी सोच कर चलना चाहिए कि इस संबंध में जो भी वाजिब बात होगी उसकी तरफ व कदम उठा कर चलेंगे ।

इसमें कोई शक नहीं कि आज भारतवर्ष के प्रत्येक निवासी के दिल में यह एक अजीब बात मालूम होती है कि ब्रिटिश कॉमनवेल्थ के अन्दर भारतवर्ष और पाकिस्तान दोनों ही मेम्बर हैं और दोनों के बीच में इस प्रकार का संघर्ष चले, उसमें कौन दोषी है और कौन सही है, इसके बारे में अगर निर्णय करने की जिम्मेदारी आकर पड़ती है और दोनों इस प्रकार की स्थिति के अन्दर कितने रोज निभ पायेंगे, कितने नहीं; यह भी एक जटिल समस्या खड़ी होती है । आज किसी देश ने किसी को आक्रामक डिक्लेयर किया या नहीं किया, इससे ही केवल हमें यह समझ कर नहीं चलना चाहिए कि जिन देशों ने खुले तौर से पाकिस्तान को आक्रामक घोषित नहीं किया है वे सब के सब हमारे विरोधी हैं । हमें इस मामले को उन लोगों पर छोड़ कर चलना होगा कि डिप्लोमेटिक लेवल पर इस संबंध में क्या स्थितियां थीं और क्या क्या इस बीच के अन्दर चर्चायें हुई और किस प्रकार किन राष्ट्रों ने क्या काम किया है और इसके

Page No 105

(श्री मोहनलाल सुखाड़िया)

बारे में क्या नीति रहे। लेकिन एक बात अध्यक्ष महोदय, मैं समझता हूं कि निश्चित है कि जो हम सबको हो समझ कर चलना होगा कि आज दुनिया में जिनको हम नॉन-अलाइनमेंट जैसी बात कहते हैं या ब्लॉक्स जैसी बात कहते हैं वह धीरे धीरे खत्म होती हुई चली जा रही है। आज से कुछ वर्षों पहले ऐसी स्थिति थी और ऐसे हालात थे कि दुनिया दो ब्लॉक्स में बंटी हुई हो, ऐसा नजर आता था। लेकिन सही बात यह है कि जिसको कॉम्युनिस्ट ब्लॉक कहते हैं वह कॉम्युनिस्ट ब्लॉक जैसा नहीं रहा, वैस्टर्न पॉवर वाला ब्लॉक जिसे कहते हैं वह वैस्टर्न पॉवर वाला जैसा ब्लॉक नहीं रहा या यों कहें कि नाटो और सियेटो जैसा ब्लॉक नहीं रहा। तो मूल में हर एक देश की विदेश नीति उसके राष्ट्रीय हितों को ध्यान में रखते हुए बना कर चलना पड़ता है और अलग अलग गुट में या ब्लॉक में रहने की नीति अब नहीं रही है।

भारतवर्ष शुरू से जो नॉन-अलाइनमेंट की बात लेकर चला है, उसका मतलब यह नहीं है कि दुनिया में हम दूसरे मित्र नहीं चाहते या कोई नॉन-अलाइनमेंट अलग से ब्लॉक है या कोई अलग गुट बनाने का सवाल आता है। यह समझ कर चलना भी भूल होगी। इसलिए ऐसे मौके पर किसी भी उत्तेजना में आकर जो काफी सोच-समझ कर राष्ट्रीय नीतियां तय की जाती हैं उनके बारे में भावावेश के अन्दर हम परिवर्तन करने की चर्चा करने लग जायें तो उससे देश को बहुत बड़ा नुकसान हो सकता है और खास तौर से ऐसे अवसर पर जब कि मैं निश्चित तौर से इसको मानने वालों में हूं कि चाहे सीज फायर की बात हो गई है, लेकिन सीज फायर का ऐलान होने के बाद में भी आज भी स्थिति काफी नाजुक हालत में है और काफी नाजुक दौर से हम लोग गुजर रहे हैं और हर एक बात को इस लक्ष्य में रख कर चलना होगा कि किसी भी वक्त स्थिति बिगड़ सकती है, किसी भी वक्त हालात के अन्दर परिवर्तन हो सकता है, क्योंकि जैसा आप जानते हैं कि पाकिस्तान की तरफ से जो कुछ कहा जा रहा है, जो उनकी एक निश्चित नीति है, वह एक युद्ध को भड़काने वाली नीति है। यह एक अलग बात है कि बहुत कुछ संभव हो सकता है, पाकिस्तान की जनता स्वयं इस बात को अनुभव करे कि वर्तमान शासकों की नीति की वजह से पाकिस्तान को हानि उठानी पड़ रही है और पाकिस्तान की जनता को उसकी वजह से तकलीफ होती है, वह वहीं पर इन कारणों की वजह से खुद की सरकार में परिवर्तन कर दे और पाकिस्तान की नीति में कुछ परिवर्तन हो, वर्ना आज जो हुकूमत मौजूदा है जहां तक उसका सवाल है वह तो एक प्रकार से एग्रेशन के लिए इनडाइरेक्टली कमिटेड है और चीन के साथ मिल-जुल कर कदम उठाने की बात सोच रहे हैं। इस तरह के हालात सामने आते हैं; इसलिए जैसा कि बहुत से माननीय सदस्यों ने कहा कि दोनों बातों को लक्ष्य में रख कर चलना है कि हमारी नीति में दृढ़ता हो। जहां तक शांति का सवाल है ऐसी शांति कि जो हमारे देश के स्वाभिमान के अनुकूल हो उस प्रकार की शांति के लिए हमेशा देश तैयार रहे। स्वाभिमान खोकर अगर शांति मिलती है तो उसके बजाय तो लाखों की कुर्बानी मन्जूर होगी, लेकिन उस प्रकार की शांति को कोई पसन्द नहीं

Page No 106

(श्री मोहनलाल सुखाड़िया)

करेगा। यह बात हमारे देश में सब के मन में है। मैं समझता हूं कि हर व्यक्ति को उस भावना को सामने रख कर चलना है।

हमारे राजस्थान के जो बहुत से भाई अलग अलग मोर्चों पर आज लड़ रहे हैं और काफी बड़ी तादाद में हैं, अभी उनकी पूरी जानकारी प्राप्त नहीं हुई है कि उनमें से कौन वीरगति को प्राप्त हुए और कौन उनके अन्दर, जिसे डिसएबल्ड कहना चाहिए, वह इस युद्ध के अन्दर, देश के स्वतन्त्रता के संग्राम के अन्दर हुए। मैं अध्यक्ष महोदय, आपके द्वारा सदन से और जो भी जहां पर हमारे फौज के भाई इस समय में काम कर रहे हैं उन्हें निश्चित रूप से मैं विश्वास दिलाना चाहता हूं कि सरकार ने जो भी सुविधाओं का एलान किया है उनका पूरी तरह से पालन किया जायेगा और उनमें कहीं भी हम इस प्रकार की स्थिति पैदा नहीं होने देंगे कि उनके परिवार के लिए कोई दिक्कत हो। मैं माननीय सदस्यों से भी निवेदन करूंगा कि आपके इलाके में कहीं भी इस प्रकार के समाचार आयें और उनको रिलीफ पहुंचाने में देरी हो तो मेहरबानी करके मुझे सूचित कर सकते हैं और हम एक-दो कमेटियां भी बना देंगे कि जो महीने में एक-दो बार मिल कर जहां इस संबंध में कार्यवाही नहीं हुई हो उसके लिए कार्यवाही की जाये। क्योंकि जो अपनी तरफ से हम सहूलियत देते हैं वह जल्दी से जल्दी सहूलियत उनको प्राप्त हो, यह हमारी हार्दिक इच्छा है और इसके अन्दर देरी करने का सरकार की तरफ से कोई भी इरादा नहीं है कि कहीं भी ऐसी स्थिति पैदा हो।

अध्यक्ष महोदय, यहां भाषणों के दौरान में जयपुर से आने वाले माननीय सदस्य ने कहा कि हो सकता है कि पाकिस्तान की तरफ से सीज फायर के बाद कुछ जगह डिस्टर्बेन्सेज़ हों, मैं माननीय सदस्यों से इतना ही इस समय कह देना पर्याप्त समझता हूं कि इस सवाल को तरफ भारत सरकार और राजस्थान सरकार दोनों पूरी तरह से सतर्क हैं। बस इतना ही निवेदन करना चाहता हूं।

श्री अध्यक्ष : माननीय मुख्य मंत्रीजी ने जो प्रस्ताव पेश किया था उस पर माननीय सदस्यों ने अपने विचार रखे। माननीय सदस्यों ने हमारे देश की विभिन्न रीतिनीति के बारे में भी कई सुझाव दिये और अपने सुझावों के साथ साथ दूसरे सुझावों का स्वागत किया और उसके बारे में अपने दृष्टिकोण और अपनी पार्टी के दृष्टिकोण सदन के सामने रखे। जो युद्ध समाप्त हुआ है, जैसा कि माननीय मुख्य मंत्रीजी ने कहा कि उससे हमें यह मान कर नहीं चलना चाहिए कि जो भी हमारी तैयारियां हैं, जो भी हमारा दिमाग बना है युद्ध की तैयारियों के लिए वह एकदम उसके साथ खत्म हो जाये। अभी भी कठिन समय हमारे सामने आ सकता है। केवल युद्ध समाप्त हुआ है और उसके लिए काफी समय भी लग सकता है जब तक कि सामान्य स्थिति हमारे सामने आये और जिस तरह से पाकिस्तान और हिन्दुस्तान के बीच में स्थाई शांति चाहते हैं उस तक पहुंचने में काफी समय लगेगा।

इस युद्ध के दौरान में कई बातें सामने आईं, उसमें जिस तरह से सारे राष्ट्र ने मिल कर इस युद्ध की स्थिति को झेलना स्वीकार

(श्री अध्यक्ष)

किया वह हमारे सबके लिए एक बहुत ही उत्साहवर्धक बात है। मैं समझता हूं कि जिस दृढ़ विश्वास और एकता का परिचय हमने उस समय बताया उसी प्रकार से अब जब कि युद्ध समाप्त हो गया है और उससे संबंधित या हमारे देश के विकास से संबंधित अन्य बातें हैं उनमें भी हम उसी दृढ़ता और एकता का परिचय दें और यही मेरा विश्वास है और भावना है। हमारे प्रदेश के जवानों ने बहुत ही वीरता और पराक्रम दिखाया। पुलिस और हमारी फौज के जो जवान हैं और अधिकारी हैं और जनता ने जो कार्य किया उसके लिए हम विश्वास करते हैं कि उनको जो भी सुविधायें मिल सकें उनको पूर्ण रूप से मिलनी चाहिए और जैसा कि कई माननीय सदस्यों ने कहा कि जो हमारा सारा सरकारी प्रशासन है वह भी इस तरह से अपने आपको बदले की फौजी सिपाही, फौजी भाई और सुरक्षा के संबंध में जो कार्यक्रम हैं उनके प्रति हम ज्यादा जागरूक रहें।

आपका, हमारा और जनता का भी कर्तव्य है कि हम भी इस प्रकार से अपना दिमाग बनाने की कोशिश करें और सिपाहियों के प्रति, फौजियों के प्रति, चाहे भूतपूर्व हों और चाहे अभी कार्य कर रहे हों, जितनी भी उनको सुविधा मिल सके, जितना भी हौसला उनका बढ़ा सकें, जितना ही उनके परिवार वालों को राहत पहुंचा सकें, वह पहुंचाने का प्रयत्न करना चाहिए। इसके लिए कई सुझाव आए हैं, हमारे प्रान्त का सोल्जर्स बोर्ड है, कई जिलों में वह ठीक तरह से कार्य नहीं कर रहा है, वर्षों तक मीटिंग ही नहीं हो पाती है तथा और भी कई छोटी २ बातें हैं। इसका कारण यह भी हो सकता है हमारा सबका दिमाग इसके प्रति जैसा होना चाहिए, हमारा दृष्टिकोण इसके प्रति जैसा होना चाहिए वह नहीं हुआ, सम्भवतः परिस्थितियों के कारण, यह जो युद्ध की स्थिति हम पर थोपी गई है उससे राष्ट्र को बड़ा सबक मिला है और उस सबक को नहीं भूलना है। वह सबक यह है कि अगर हम एकता से रहेंगे और हम ताकत से दुश्मन का मुकाबला करेंगे तो हमारी जीत निश्चित है।

इसलिए मैं आशा करता हूं कि जो भी एकता सारे राष्ट्र ने दिखाई है वह भविष्य में भी कायम रहेगी। हम, हमारे दूसरे छोटे बड़े विचारों में अगर मतभेद हैं तो उनको भुला कर राष्ट्र को मजबूत बनाने के लिए, राष्ट्र की एकता को कायम रखने में योग दें। इन्हीं शब्दों के साथ यह जो प्रस्ताव है, इस पर मतदान तो करना चाहिए, लेकिन मैं आशा करता हूं कि सभी माननीय सदस्य एक मत से इसे स्वीकार करेंगे।

(विराम)

सर्व सम्मति से प्रस्ताव स्वीकार किया गया।

(करतल-ध्वनि)

सदन की कार्यवाही आगामी सोमवार को प्रातः काल ११.०० बजे तक के लिए स्थगित की जाती है।

(तदनन्तर सदन की कार्यवाही म० प० ४.१२ बजे सोमवार, दिनांक २७ सितम्बर, १९६५ के म० पू० ११ बजे तक के लिए स्थगित हुई)

परिशिष्ट १

(कृपया तारांकित प्रश्न संख्या ९८ का उत्तर देखिये)

चराई शुल्क की सूची

खारची तहसील:—

ऊंट:—पूरे साल की चराई शुल्क पांच रुपये फी ऊंट।

बकरी:—खुले सीजन यानी अक्टूबर से ३० जून तक ३७ पैसे फी बकरी और बन्द सीजन याने १ जुलाई से ३० सितम्बर तक ७५ पैसे।

सोजत तहसील:—

ऊंट:—५) रु० प्रति ऊंट खुले सीजन के लिए याने १ अक्टूबर से ३० जून तक। अगर वर्षा ऋतु में चराई की जावे तो चराई की दर दुगनी ली जाती है।

बकरी:—१) रु० प्रति बकरी खुले सीजन में तथा कलोज्ड सीजन १ जुलाई से ३० सितम्बर तक इससे दुगनी।

परिशिष्ट २

(समयाभाव के कारण प्रश्न समय में न लिये जा सकने वाले तारांकित प्रश्नोत्तर)

माही बांध का सर्वे और किसानों को मुआवजा

१०२. **श्री विट्ठल भाई** (बांसवाडा सु०) : क्या सिंचाई मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे :

(१) क्या यह सही है कि जिला बांसवाड़ा, तहसील बांसवाड़ा में माही बांध के सर्वे में जिन जिन गांवों में काश्त की जमीन में खड्डे व सरकारी मकान बनवाये गये हैं उन गांवों के संबंधित काश्तकारों को मुआवजा व जमीन के बदले दूसरी जमीन अब तक नहीं दी गई है ?

(२) यदि हां, तो ऐसे कुल कितने गांव व कितने काश्तकार हैं ?

उत्तर

(१) माही बांध के सर्वे में जहां पर किसी काश्तकार की जमीन पर सरकारी मकान बनाये गये हैं उसका मुआवजा संबंधित काश्तकार को दे दिया गया है ।

बांध बनाने के लिये मिट्टी की जांच के लिये कुछ खेती में ३०० से ४०० फुट की दूरी पर खड्डे किये गये हैं परन्तु वह जमीन काश्तकार के पास ही है इसलिये उसके मुआवजे का प्रश्न नहीं उठता है ।

(२) काश्तकारों को मुआवजा देना बाकी नहीं है इसलिये यह प्रश्न नहीं उठता ।

पुलिस थाना हिम्मतगढ़ का भवन

१०३. **श्री गोविन्दसिंह** (पिडावा) : क्या गृह मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे:

(१) क्या यह सही है कि हिम्मतगढ़, जिला झालावाड़ का पुलिस थाना रायपुर बदल दिया गया है ?

(२) इस खाली भवन को पुलिस विभाग किस काम में लेना चाहती है ?

उत्तर

(१) जी हां ।

(२) थाना हिम्मतगढ़ के भवन के कुछ भाग में थाने का रिकार्ड, टीन शीट तथा ऐंगल आईरन रखा हुआ है शेष भवन को कलेक्टर झालावाड़ के सुपुर्द तत्काल ही कर दिया गया था । रायपुर में थाने का नवीन भवन पूर्ण निर्माण होने पर उक्त सामान वहां ले जाया जायेगा तथा हिम्मतगढ़ थाना के उस भवन को भी कलेक्टर महोदय को सुपुर्द कर दिया जायेगा । अतः थाना हिम्मतगढ़ के खाली भवन को पुलिस विभाग द्वारा किसी काम में लेने का प्रश्न ही उत्पन्न नहीं होता ।

ग्राम अयाना का औषधालय और मरीज

१०४. **श्री दयाचन्द सोन** (बारां सु०) : क्या आयुर्वेद मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे:

(१) क्या यह सच है कि पंचायत समिति इटावा के ग्राम अयाना में जो औषधालय है वह अभी बंद पड़ा है ? यदि हां, तो कितने दिनों से और क्यों ?

(२) क्या यह सच है कि वहां की ग्राम पंचायत ने इस औषधालय के बन्द रहने व इस

(श्री दयाचन्द सोन)

प्रकार वहां के मरीजों की कठिनाइयां संबंधी लिखित रूप में आयुर्वेद विभाग, कोटा को शिकायत की है ?

(३) यदि हां, तो इस पर क्या कार्यवाही की ?

उत्तर

(१) जी नहीं। अयाना (कोटा) औषधालय बराबर चालू है।

(२) जी नहीं।

(३) ग्राम अयाना में कार्यरत वैद्य श्री कृष्ण चन्द्र का परिवर्तन बुडादीन (कोटा) कर दिया गया है।

जय समुद्र की मछलियां

१०५. श्री जोधसिंह चौहान (गिरवा): क्या पशुपालन मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे:

(१) जयसमुद्र का पानी कितना वर्ग मील में फैला हुआ है और अनुमानतः इसमें कितनी मछलियां होनी चाहिये ?

(२) जयसमुद्र की मछलियां कहां कहां विक्रयार्थ जाती हैं ? और अनुमानित एक वर्ष में कितने मन जाती हैं ?

(३) क्या सरकार इस झील में मछलियां बढ़ाने के लिये भी कोई योजना तैयार कर रही है ?

उत्तर

(१) जयसमुद्र, उदयपुर का फैलाव २९ वर्ग मील है। मछलियों की संख्या या वजन बताना सम्भव नहीं है।

(२) ये मछलियां अधिकतर देहली, आगरा एवं कलकत्ते बिकने जाती हैं।

(३) जी नहीं।

तहसील खारची के बांधों का कार्य

१०६. श्री केसरीसिंह (खारची): क्या सिंचाई मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे:

(१) खारची तहसील में १९६४-६५ में किन किन जगहों पर कितनी कितनी लागत के बांध बनवाने की योजना बनवाई गई थी ?

(२) इन बांधों में से कितने का काम आरम्भ हो चुका है तथा कब तक पूर्ण होने की आशा है ? शेष बांधों का काम कब तक आरम्भ किया जायेगा ?

(३) क्या सरकार के पास सोजत तहसील में भी कोई बांध बनवाने की योजना है ? अगर हां, तो कहां २ पर ? अगर नहीं तो क्यों ?

उत्तर

(१) बनियावास नामक लघु सिंचाई योजना जिसकी लागत करीब ९॥ लाख रु० है सन् ६४-६५ में प्रारम्भ होनी थी।

(२) इस योजना पर काम आरम्भ हो चुका है और जून सन् ६७ में पूरा होने की आशा है।

(३) जी हां, सोजत तहसील की सिरियारी लघु सिंचाई योजना विचाराधीन है।

राजकीय उच्चतर माध्यमिक पाठशाला सांचोर का परीक्षाफल

१०७. श्री रघुनाथ बिश्नोई (सांचोर): क्या शिक्षा मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे:

(श्री रघुनाथ विश्नोई)

(१) क्या यह सत्य है कि सन् १९६४-६५ में सांचोर राजकीय उच्चतर माध्यमिक पाठशाला का ६, ७, ८ व ९ कक्षाओं के परीक्षाफल खराब रहे ? अगर हां, तो ऐसा होने के क्या क्या कारण हैं ?

(२) क्या उपरोक्त मामले के बारे में शिक्षा विभाग द्वारा जांच की गई थी ? अगर हां, तो कब ? और जांच के परिणामस्वरूप परीक्षा फल खराब रहने के क्या २ कारण पाए गए ? क्या भविष्य में उन कारणों को दूर करने के बारे में शिक्षा विभाग कोई सक्रिय कदम उठाने का विचार रखता है ? अगर हां, तो कब तक ? नहीं, तो क्यों नहीं ?

(३) यदि इस संबंध में कोई जांच नहीं की गई है, तो क्यों ?

उत्तर

(१) यह अन्तशः सही है कि सन् १९६४-६५ में सांचोर राजकीय उच्चत्तर माध्यमिक शाला के ६ व ७ कक्षाओं के परीक्षाफल निम्न-कारणों से खराब रहे प्रतीत होते हैं:—

(१) पंचायत समिति प्राथमिक पाठशालाओं से आने वाले छात्रों का कमजोर होना। विशेषकर अंग्रेजी में;

(२) विषय अध्यापकों का विशेष यत्न न किया जाना;

(३) प्रधानाध्यापक के द्वारा विशेष सम्भाल न करना। कक्षा ८ व ९ का परीक्षाफल निम्न प्रकार रहा जिसको देखते हुये परीक्षाफल खराब नहीं कहा जा सकता:—

कक्षा	कितने छात्र परीक्षा में बैठे	कितने छात्र उत्तीर्ण हुये	उत्तीर्ण छात्रों का प्रतिशत
९	४५	३६	८६
९	४२	३४	८०.९
८अ	३५	३१	८८.४
८ब	३७	२९	७८.३

(२) उपरोक्त मामले में दिनांक १८, १९ तथा २० अगस्त, १९६५ को निरीक्षक द्वारा जांच की गई। जांच के परिणाम-स्वरूप परीक्षाफल खराब रहने के कारण भाग १ में वर्णित कर दिये गये हैं।

भविष्य में इन कारणों को दूर करने के लिये उचित कदम उठाये जा रहे हैं। उन अध्यापकों के विरुद्ध आवश्यक एवं उचित कार्यवाही नियमानुसार शीघ्र की जा रही है जिनके विषयों में परीक्षाफल खराब रहा है। पंचायत समिति सांचोर को भी लिखा जा रहा है कि ५वीं कक्षा के छात्रों को ओर विशेष ध्यान दिया जाये। शीघ्र ही कार्यवाही करली जायगी।

(३) जैसा कि ऊपर बताया गया है जांच की जा चुकी है।

तहसील केशवराय पाटन के किसानों को जमीन का मुआवजा

१०८. **श्री हरिप्रसाद शर्मा** (पाटन): क्या सिंचाई मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे:

(१) क्या यह सही है कि केशवराय पाटन तहसील में माखीदा, माइनर, जलोदा

(श्री हरिप्रसाद शर्मा)
माइनर, डगारिया माइनर, काप्रेन माइनर, मालकपुरा डिस्ट्रीब्यूटरी व अन्य माइनर डिस्ट्रीब्यूटरीज में आई हुई भूमि व फसलों का मुआवजा संबंधित व्यक्तियों को नहीं दिया गया ?,

(२) केशवराय पाटन तहसील के कितने किसानों का मुआवजा देना बाकी है ?

(३) अब किसानों को कब तक मुआवजे का पूरा चुकारा कर दिया जावेगा ?

उत्तर

(१) अधिकांश काश्तकारों को मुआवजा चुका दिया है। केवल २१६ व्यक्तियों को ७०० एकड़ भूमि का मुआवजा चुकाना शेष है।

(२) २१६ काश्तकारों को।

(३) अवार्ड्स प्राप्त होने पर उसी वित्तीय वर्ष में सब मुआवजे चुका दिये जाने की पूर्ण संभावना है।

चल पुस्तकालय, जयपुर

१०९. **श्रीमती लक्ष्मीकुमारी चूंडावत** (भीम) : क्या शिक्षा मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे :

(१) क्या यह सही है कि चल पुस्तकालय, जयपुर के पास पूरा स्टाफ है और जीप गाड़ी भी है ?

(२) नियमानुसार इस पुस्तकालय द्वारा बाहर गावों में पुस्तकें वितरण करने के लिये निर्धारित समय क्या है और कितने गावों में उनके पुस्तकें रखने के स्थान है ?

(३) पिछले साल हरेक केन्द्र में कितनी बार जीप गाड़ी पुस्तकें देने व लेने गई और कितना माइलेज किया ?

(४) गावों में जाने के अलावा जीप ने गत वर्ष में कुल कितने माइलेज अन्य कार्यों के लिये किया ?

(५) गत वर्ष में इन केन्द्रों में कितने पाठकों ने पुस्तकों का उपयोग किया ?

(६) प्रत्येक केन्द्र में पिछले वर्ष कितनी पुस्तकें गई ?

उत्तर

(१) जी हां।

(२) नियमानुसार चल पुस्तकालय से बाहर गावों में माह में एक बार पुस्तकें वितरण करने का निर्धारित समय है और जयपुर जिले के ११७ गावों में पुस्तकें रखने का स्थान है।

(३) पिछली साल दिनांक १-४-६४ से ३१-३-६५ तक प्रत्येक सेन्टर पर ४ बार जीप पुस्तकें देने व लेने गई तथा इस कार्य हेतु जीप ने ४२९१ मील की यात्रा की। जीप अक्सर खराब होने के कारण इससे अधिक बार पुस्तकें वितरण हेतु गावों में नहीं जा सकी, इस कमी को पूरी करने के लिये पुस्तक वितरण में सिनेमावान का ७ बार उपयोग किया गया। इस प्रकार पाठकों को लगातार पुस्तकें मिलती रहीं।

(४) गत वर्ष में दिनांक १-४-६४ से ३१-३-६५ तक ११३१ मील जीप अन्य कार्यों के लिये काम में लाई गई।

(श्री शिक्षा मंत्री)

(५) गत तीन वर्षों में चल पुस्तकालय से लाभ उठाने वाले पाठकों की संख्या निम्न प्रकार रही:—

	पाठक
१९६२–६३	८,०५,६४०
१९६३–६४	६,२४,८१६
१९६४–६५	९,३०,४५६

(६) पिछले वर्ष (१-४-६४ से ३१-३-६५ तक) प्रत्येक केन्द्र में करीब ५०० पुस्तकें वितरित की गई ।

चद्दरों का वितरण

११०. **श्री जयनारायण सालोदिया** (निवाई): क्या कृषि मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे :

नगरपालिकाओं के सीमा क्षेत्रों के लिये जो टीन की चद्दरों का वितरण किया जाता है वह कोटा तहसीलों को क्यों दिया जाता है जबकि पंचायत समितियों को अपने क्षेत्र में टीन की चद्दरों का वितरण करने का अधिकार प्राप्त है ?

उत्तर

नगरपालिकाओं के सीमा क्षेत्रों के लिये जो टीन की चद्दरों का वितरण किया जाता है वह सम्बन्धित जिलाधीशों द्वारा नॉन– ग्रीकल्चर कोटा में से उनके द्वारा निर्धारित नीति द्वारा वितरित किया जाता है । जब कि पंचायत समितियों को केवल एग्रीकल्चर का कोटा वितरण करने के अधिकार हैं ।

मिडल स्कूलों में परिवर्तित प्राइमरी स्कूल

१११. **श्री दिग्विजयसिंह** (उनियारा): क्या शिक्षा मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे :

वर्ष १९६५–६६ में राज्य के कितने प्राइमरी स्कूलों को मिडिल स्कूलों में परिवर्तित किया गया है ? कृपया जिलेवार सूची सदन की मेज पर रखने की कृपा करें ।

उत्तर

१९६५–६६ में राज्य के किसी भी जिले में कोई नई माध्यमिक शाला खोलने का प्रावधान नहीं है । अतः कोई प्राथमिक शाला माध्यमिक शाला में परिवर्तित नहीं की गई ।

पुलिस विभाग के ड्राइवरों की वेतन श्रृंखला

११२. **श्री मोहरसिंह** (चूरू): क्या गृह मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे :

(१) राजस्थान पुलिस विभाग में ड्राइवरों को क्या तनख्वाह दी जाती है ?

(२) क्या यह तनख्वाह अन्य महकमों द्वारा ड्राइवरों को दी गई तनख्वाह के समकक्ष है ? यदि नहीं, तो क्या फर्क है ?

(३) क्या राजस्थान के पुलिस के ड्राइवरों को अन्य विभागों के ड्राइवरों से कम काम करना पड़ता है ? यदि नहीं, तो उनके समकक्ष तनख्वाह क्यों नहीं दी जाती है ?

(४) क्या अब सरकार पुलिस के ड्राइवरों को अन्य विभागों के ड्राइवरों के बराबर तनख्वाह देने का विचार रखती है ? यदि हां, तो कब से ?

उत्तर

(१) पुलिस विभाग के ड्राइवरों की वेतन श्रृंखला रुपये ७५–१३० है तथा जो सिपाही अथवा हैड कान्सटेबिल इस कार्य को

Page No 114

(श्री गृह मंत्री)

जानते हैं उनको स्वयं के पद का वेतन तथा १५ रुपये व २० रुपये क्रमशः प्रति माह एम० टी० अलाउन्स दिया जाता है।

(२) कोई अन्तर नहीं है।

(३) प्रश्न नहीं उठता।

(४) जी नहीं।

शुद्धि-पत्र

(शुक्रवार, दिनांक २४ सितम्बर, १९६५)

स्कम्भ सं०	पंक्ति संख्या	अशुद्धि	शुद्धि
६३१	अन्तिम से २	आखरी	आखिरी
६३३	११	मो	को
६४०	अन्तिम से ४	एग्रीमें	एग्रीमेंट
६४४	अन्तिम से २	जा नहीं	जी नहीं
६५२	अन्तिम से १०	पूछ ा	पूछना
६६३	अन्तिम से २	एड ाक	एडहॉक
६६५	१५	कितन कतना	कितना कितना
६६६	९	श्री दिनशराय	श्री दिनेशराय डांगी
६६७	अन्तिम से ३	१ दिनेशराय ां	श्री दिनेशराय डांगी
६६८	अन्तिम से ५	. . . . .लये	अमानतन लिये
६६९	७	मुमानयत	मुमानियत
६७०	३	नहीं ?	नहीं था ?
,,	८	रुपय	रुपये
,,	९	दा	दस
६७१	६	श्री चन्द्रसिंह ि	श्री चन्द्रसिंह बर्फा
,,	१८	. . . . .था ?	गया था ?
६७३	१५	ाब्बार	जब्बार
६७५	१७	अ वाल	अग्रवाल
,,	१८	. . . . . . .र.	ग्रांट-इन-एड, जो सरकार को
६७८	अन्तिम से ७	लीगों	लोगों
६८०	अन्तिम से ७	श्री योगेद्वनाथ	श्री योगेन्द्रनाथ
६८५	८	व्यापारा	व्यापारी
,,	१८	नरह	न रह
६८६	अन्तिम	या	क्या
६९४	शीर्षक	तारांकित प्रश्नोत्तर	अ. स. के तारांकित प्रश्नोत्तर
,,	अन्तिम से ४	सन	सन्
६९६	१८	श्री भैरबलाल 'कालाबादल'	श्री भैरवलाल 'कालाबादल'
७०७	१९	जान	जाने
७०८	१३	हेउससे	उससे
,,	२२	टलीफोन	टलीफोन
७११	शीर्षक	जैल	जेल
७१२	५	लूटेरों	लुटेरों
७१७	११	जन-न्त्र	जन-तन्त्र
७२०	५	हर्रागज	
७२१	शीर्ष	श्री मोहनलाल सुखाडिया)	(श्री मोहनलाल सुखाड़िया)
७२४	शीर्षक	एव	एवं
,,	अन्तिम से ३	अफिका	अफ्रीका
७२५	अन्तिम से ५	वीन	चीन
७२६	,, १०	किस	किसी
७२९	१६	सर्तक	सतर्क

स्कम्भ संख्या	पंक्ति सं०	अशुद्धि	शुद्धि
७३५	१५	पुर्नस्यापित	पुनर्स्थापित
७३७	६	lib rty	liberty
७३९	११	कम्परेटिवली	कम्पेरेटिवली
७४०	१५	पिरियड	पीरियड
,,	अन्तिम से २	ारतवर्ष	भारतवर्ष
७४२	७	चाहत	चाहते
,,	१५	वि वास	विश्वास
७५०	३	पाकस्तिान	पाकिस्तान
,,	अन्तिम	वलन्द	बुलन्द
७५७	१३	खाओं	खाओ
,,	१६	लड़ों	लड़ो
,,	१७	टैक	टैंक
७५९	४	उसन	उसने
७६७	अन्तिम से ९	स्वस्थ्य	स्वस्थ
७७०	१३	इंढोनेशिया	इन्डोनेशिया
,,	२२	मं	में
७७१	अन्तिम से ३	जिसमे	जिसमें
७७४	,, ८	करे।	करें।
,,	,, ५	ह	है,
७७९	५	चंकि	चूंकि
७८०	अन्तिम	व	वर्ग
७८२	८	भी	की
७८३	३	थ्योरी	थ्योरी
७८४	१८	अघ्यक्ष	अध्यक्ष
७८६	२२	आहूति	आहुति
७८८	७	नए	नये
,,	२१	सकेगें।	सकेंगे।
७८९	७	व	वे
,,	७	गई ?	गई ?
७९२	५	नेशन्नल	नेशनल
,,	२५	ावर्न न्ट ने आना ा	गवर्नमेन्ट ने अपनाई
,,	अन्तिम	कि	
७९३	४	जाये	जायें
७९६	३	को इस	को। इसी
८०३	२५	नी ा ा	नीति
८०४	५	हकूमत,	हुकूमत
,,	अन्तिम से १०	नाति	नीति
,,	,, ८	ध्वनी)	ध्वनि
८१३	१३	है	हैं
८२०	४	हैं	हैं।
,,	अन्तिम से ९	वेसर्टन कन्ट्रीज	वेस्टर्न कन्ट्रीज

स्कम्भ सं०	पंक्ति सं०	अशुद्धि	शुद्धि
८२०	अन्तिम से ८	सेटेलईट	सेटेलाइट
८२२	,, ११	अयब	अयूब
८२४	अन्तिम से २	सामाना	सामना
८२५	७	लिए	लिये कि
८३७	अन्तिम	(श्री अध्यक्ष, पुन:	(श्री अध्यक्ष पुन:
८४५	अन्तिम से ३	कलोज्ड	क्लोज्ड
८४८	,, ८	टोना	होना;
,,	,, ७	में;	में।
,,	,, ६	विषय	
८५०	२०	क	का